# अप्पन गाम

*Collection of Maithili Short Stories*



जगदीश प्रसाद मण्डल

# अप्पन गाम

जगदीश प्रसाद मण्डल



पल्लवी प्रकाशन

निर्मली

**ISBN :** 978-93-88421-87-4

**दाम :** 251/- (भा. रू.)

**पहिल संस्करण :** 2018

**प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन**
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग
वार्ड नं. 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार : 847452

**वेबसाइट :** http://pallavipublication.blogspot.com
**ई-मेल :** pallavi.publication.nirmali@gmail.com
**मोबाइल :** 8539043668, 9931654742

**प्रिन्ट :** मानव आर्ट
निर्मली (सुपौल)
**आवरण :** श्रीमती पुनम मण्डल
निर्मली (सुपौल) बिहार : 847452

**APPAN GAM**

*Collection of Seed and Short Stories by Sh. Jagdish Prasad Mandal.*

# कथाक सत्तैर-

# अप्पन गाम

अट्ठाइस बरख धरि बंगलोरमे नोकरी केला पछाइत शुभलाल भाइक जीह एना उचैट गेलैन जे एको क्षण बीतब पहाड़ जकाँ बुझि पड़ैन। सात दिनसँ एहेन विचार मनमे एलैन आ दिनो-दिन असाध रोगक रोगी जकाँ विचारमे मजबूती अबैत गेलैन आ बंगलोरमे रहैक विचारमे उड़ी-बिड़ी लगए लगलैन। ऑफिस जाइसँ पूर्व डेरेपर मनमे आबि गेलैन जे काल्हि गाम ले विदा भऽ जाएब।

बिड़हाएल मने शुभलाल भाय ऑफिस विदा भेला। रस्ता भरि यएह मनमे उठैत-बैसैत रहलैन जे आइ भोलेन्ट्री रिटायरमेन्ट ले आवेदन दइये देब। मात्र अढ़ाइ बर्ख नोकरी शेष अछि तँए बीचमे कोनो तरहक बाधा नहियेँ हएत। ओहुना पाँच बर्ख पूर्व तकक अधिकार अछिए। मने-मन विचारलैन जे केकरो पुछबै तखन ने ओ बुझा-सुझा वा रंग-बिरंगक विचार दऽ दऽ मनाहियो करत। नीक केलौं जे अखन तक ने पत्नियेे लग बजलौं आ ने दुनू बेटेक कानमे देलौं हेन।

ऑफिसक रंग-रूप शुभलाल भायकेँ जेना बदरंग बुझि पड़ैत रहैन। जे ऑफिस कहियो शुभलाल भायकेँ कातिकक लक्ष्मी-गणेशक पूजनोत्सव जकाँ लगै छेलैन वएह ऑफिस आइ उजड़ल-उपटल ओहन

बीरान लगए लगलैन जेना कोनो देश कोनो देशकेँ उजाड़ि-उपाटि बेनग्न करैए। ऑफिसक बीच जे नव-पुरान संगी सभ रहैन तिनको सबहक चेहरा बदरंगे बुझि पड़ैत रहैन। जहिना परिवारमे पत्नीक संग वा बेटाक संग कोनो विचारमे विभेद अबिते चेहराक सूरतमे बदरंगी आबए लगैए आ बढ़ैत-बढ़ैत एते बढ़ियो जाइए जे एक-दोसरक हत्यारा सेहो बनियेँ जाइए। एना कहब जे एहेन परिवेशकेँ रोकलो तँ जा सकिते अछि? हँ! रोकल जा सकैए मुदा परिवेशकेँ रोकैसँ पहिने ओकर परवशताक संग परबरिसकेँ सेहो ने बुझए पड़त। खाएर जे अछि। शुभलाल भाय अपन टेबुलक कुर्सीपर बैस आगू दिस तकलैन तँ कागजक फाइल सभपर नजैर पड़लैन। फाइल देख मन भिन-भिना गेलैन जे जे मनुख अपन समर्पण अपना लेल करत ओकर दुनियाँ बदैल जेतै आ ओ दोसर दुनियाँक लोक भऽ जाएत। दुनियाँ केना बदैल जाइ छै से तँ ओ जानए मुदा शुभलाल भाय से सभ किछु ने बुझलैन आ अपन विचारपर आबि अँटैक गेला। जँ भोलेन्ट्री रिटायरमेन्ट नहि देत तँ की करब? धनतंत्रक धनिक तंत्रमे जखन जीबै छी तखन अनेको बहन्नो लगा सकैए आ अनेको लांछना सेहो लगा कऽ घेर तँ सकिते अछि, तखन?

जेना-जेना शुभलाल भाय अपना दिस बढ़ल अबैत छला तेना-तेना मन सेहो सकताइत गेलैन।

किछुकालक गुम्मीक पछाइत शुभलाल भाइक मनमे उठलैन जे जखन विचार बना मनमे रोपि लेलौं जे अप्पन गाम जाएब तखन जेबे करब। वृन्दावनक ओहन मरूभूमिमे रहि कृष्ण-राधिकाक संग कदमक गाछपर बैस बासुरी टेर सकै छला तइसँ तँ हमर गाम बहुत नीक अछि। वेचारी राधिका सभकेँ, डिबियामे खानक मटिया तेल नहि रहने कठगैनी काँटक बीआकेँ पीस-पीस तेल निकालि डिबिया जरबैत रहैथ, तैठाम हमर गाम तँ बिजलीसँ जगमगाइए..!

टेबुलपर बैसल शुभलाल भाइक मनमे उठलैन जे जखन ऑफिस

आबि गेल छी तखन पहिल विचार ई करैक अछि जे आजुक ड्यूटि केला पछाइत सेवा निवृत्तिक आवेदन करब आकि ड्यूटी करैसँ पहिने करब?

जेना-जेना शुभलाल भाइक मनमे विचारक मोहैन चलैन तेना-तेना मक्खन जकाँ विचारमे चिकनपन अबैत रहैन। विचारकेँ पकिया बान्हसँ बान्हि शुभलाल भाय अपन निर्णयकेँ पक्का कऽ लेलैन जे ऐठामसँ आइ भेले जाएब। जखन पत्राचार ले पोस्ट ऑफिस अछिए तखन ऐगला सभ काज ओही माध्यमसँ होइत रहत।

भोलेन्ट्री रिटायरमेन्टक आवेदन लिख शुभलाल भाय चुप-चाप नेने गेला आ अपन अफसरक फाइलमे लगा चोटे ऑफिससँ घुमि अपन डेरा दिस कदम बढ़बए लगला।

कार्यालयक अन्तिम फाटक लग पहुँचते जहिना भकुआएलकेँ भक् टुटने नजैर बदैल जाइ छै, जहिना दिशांस लगलाहाकेँ दिशांस छुटिते बदलल-बदलल दुनियाँ देखाए लगै छै तहिना शुभलाल भायक दुनियाँ बदलए लगलैन। मनमे उठलैन- जिनगीक एकटा ओहन बान्ह तोड़ैक सीमापर पहुँच गेल छी, जैठाम एक दिस स्वतंत्र जिनगीक प्रखर ज्योतिक प्रखरता पसरल अछि तँ दोसर दिस मनुखक जिनगीक भारीपनक कालिमा गुलामी पसरल अछि। दुनूक अपन दुनू दुनियाँ छै जइमे दोहरी सभ किछु छइहे। संकल्प सेहो छै आ विकल्प सेहो छइ। संकल्पवान सेहो छैथ आ विकल्पोवान तँ छथिए।

गेटक सीमा टपिते शुभलाल भाइक मनमे उठलैन- अप्पन गाम। दुनियाँक बीच जेतेक जीव-जन्तु अछि सभकेँ अपन-अपन देशो छै आ अपन-अपन भेषो छै, अपन दुनियोँ छै, अपन मनियोँ छै आ अपन-अपन मनियाँक संग कन्यो-सुकन्या छै आ तैसंग दुरकनियोँ तँ छइहे। 'कन्या-सुकन्या' मनमे अबिते जेना कोनो फूलक गाछमे फूलक कोढ़ीक आगमन होइते फूलक आशापुरक आगमन होइ छै तहिना शुभलाल भायकेँ सेहो

अपन गामक आशाक फूलक कोढ़ी जकाँ अपन कोढ़ बिहुसलैन। बिहुसिते मन गवाही दैत कहए लगलैन जे जखन गाम-गाम मिथिलाक धाम छी तखन जँ गामेक लोक मिथिलाक गामकेँ छोड़ि देता आ खाली जीबठगर मनसँ सोहरे-समदाउन सुनबे करता वा गेबे करता तइसँ केते दूर तक मिथिलाकेँ अंगेज पौता वा पेबै छैथ से तँ मने-मन सभ जनबे करै छी। आइ एकैसम शदीक बुधिये मिथिलो आ मिथिलाक गामोकेँ देखैक जरूरत अछि। जहिना एक दिस पहाड़क पानिक उपद्रवक संग समुद्री मौनसूनक उपद्रव अछि, जइसँ धार-धुरक इलाका रहने पानि बेसम्हार भऽ जाइए, गामक-गाम उजैड़-उपैट जाइए। जइ कारणेँ गामसँ पड़ाइन भेने गामक सम्पैत सेहो ठमैक गेल। मनुखे रहने बजारो बनैए आ बजार मेटाइतो तँ अछिए। तँए सभ करामाती हमहीं-अहाँ ने छिऐ। जखन मनुख होइक नाते अपन गिनतीक श्रेणी दुनियाँक बीच रखै छिऐ, ई बढ़ियाँ विचारो आ काजो अछिए। तँए जखन दुनियाँक बीच अपनाकेँ रखै छी तखन दुनियाँक सभ किछुसँ ने सम्बन्ध बनबए पड़त। जाबे सम्बन्ध नहि बनत ताबे निर्णायक दौड़मे पहुँच केना पाएब?

जहिना बेसी काज सोझामे एने मन अकछए लगैए तहिना विचारक दौड़मे शुभलाल भाइक मनमे सेहो अकछी उठए लगलैन। अकछी उठिते मन कहलकैन- अनेरे जे दुनियाँ दिस देखैत-देखैत अपने रस्ता भोतिया जाए, सेहो केहेन हएत? जाबे इजोतमे आँखि तकै छी ताबेक दुनियाँ आ भोतियाएल-अन्हराएलमे जे देखब से एक्के थोड़े हएत।

अकछल मनमे स्वच्छतल विचार शुभलाल भायकेँ उठलैन। उठलैन ई जे सभसँ पहिने पत्नीकेँ अपन आजुक क्रियाक रूप देखेबैन। बिआहक पछाइत आइ धरिक संगियेटा नहि संकल्पित संगी छैथ। तँए, कम-सँ-कम जँ दुनू परानी एक विचारमे रहब तँ एते तँ आशा बनियेँ जाएत किने जे सीताहरण भेला पछाइत जखन भगवान रामो दुइये भाँइ गंगाकातक जंगलसँ लऽ कऽ लंका तकक बोन-झाड़ टपि लेलैन तखन

हम किए ने गामक जिनगीक अपन जिनगी बना टपि सकै छी। पचपन-साठिक उमेरक सीमाक बीच छी, ओहुना अढ़ाइ-सालक नोकरीक पछाइत बेकम्मा भइये जाएब। कम-सँ-कम एतेक गिनती तँ हमरो अपन गामक धरतीक नसीब भइये जाएत ने जे भाय भीखो-दुख काटि जहिना जन्मक रजिष्टरमे नाम दर्ज अछि तहिना मृत्युक रजिष्टरमे सेहो दर्ज भऽ जाएत। यएह ने भेल धरतीपर जीवन-मृत्यु।

डेरामे–ओना, शुभलाल भाय एकटा मकानो बना नेने छैथ, मुदा ओ अखनो धरि घरक श्रेणीमे नइ एलैन तँए डेरेमे–अनभुआर घरवारी जकाँ पत्नी बुझि पड़लैन। ओना, छेली आने दिन जकाँ मुदा कुसमयमे पतिक आगमनसँ किछु अचंभित भेने अनभुआर जकाँ भऽ गेली जइसँ शुभलाल भाइक चेहरापर नजैर टिकबे ने केलैन जे हृदयक फूलकेँ देख पबितैथ। शंकालु मन रहने, भेलैन जे मन-तन ने तँ खराब भऽ गेलैन अछि। मुदा अगुआ कऽ किछु ने बजली।

अपराजितकेँ चुप देख शुभलाल भाइक मनमे एकाएक पत्नीक सम्बन्धक विचार जगि गेलैन। धरतीपर जेतेक मनुख अछि सभकेँ स्वतंत्र रूपे जीबैक अधिकार अछि मुदा तइले जीबैक लूरियोक खगता तँ अछिए। तखन तँ भेल जे दोसरक अपेक्षा पत्नी तँ बन्धन सहितक करार केनहि छैथ जे जाबे जीब संगे जीब, आ मृत्युक पछाइत एक-दोसरकेँ शरीरान्त करब। ओना, शुभलाल भाइक मनक चेतनशीलतामे सेहो लोच उठए लगल छेलैन। आइ धरिक पत्नीक जेहेन बेवहारिक सम्बन्ध शुभलाल भाइक छेलैन तइमे मीठपन सेहो जगि चुकल छेलैन।

मनकेँ तेना विचार पकैड़ लेलकैन शुभलाल भायकेँ जे टस-सँ-मस हेबाक सभ विकल्पकेँ एकसिरे खारिज कऽ नेने छला। अपन नोकरीसँ भोलेन्ट्री रिटायरमेन्टक चर्च नहि करैत शुभलाल भाय बजला-

“काल्हि गाम जाएब।”

'काल्हि गाम जाएब' ई की भेल, ने अखन छठि पाबैन अछि आ ने दुर्गापूजा, ने केतौ बिआह-दानक लगन अछि आ ने कियो तेहेन मरबे केलैन अछि जे तइ सराधमे जेता। तखन कोन एहेन धड़फड़ी गाम जाइक भऽ गेलैन जे जेता? आगूक आशाक बात सुनैले अपराजित मुँह दिस देखए लगली।

पत्नीक कोनो प्रतिक्रिया नहि देख शुभलाल भाइक मनमे एकाएक उठलैन जे एते तँ समझ पत्नीमे आबिये गेलैन हेन जे आगूक बात सुनैले तत्पर भेली। अपन जिनगीकेँ समुद्री रेतपर दहलबैत शुभलाल भाय अतीतक मुस्की मारलैन। माने पैछला खुशीक इजहारक मुस्की मारैत बजला-

“मन अछि कि बिसैर गेलौं जे जखन आठे दिन एकठाम भेना भेल रहए तहिया..?”

अपराजित जेना किछु मन पाड़ए लगली तहिना अतीतक बोन दिस विदा भेली। जइसँ चेहराक रूप सुतनतासँ जगनता दिस बदलए लगलैन। मुदा नीक जकाँ धियान नइ टुटने मन मारने रहली।

खिलैत मुस्की दैत शुभलाल भाय बजला-

“बिआहक तीन सालक पछाइत दुरागमन भेल रहए सेहो मन अछि की नहि?”

अपराजित-

“से किए ने मन रहत?”

शुभलाल भाय-

“आरो की सभ मन अछि?”

'आरो की सभ मन अछि' से की कोनो एके-दुइयेटा विहीत भेल जे की मन अछि आ की बिसरलौं। अही गुन-धुनमे अपराजित ततमत करए

लगली जइसँ बकारे ने फुटैन।

अवसरक लाभ उठबैत शुभलाल भाय बजला-

"जेठ मासक इजोरिया-एकादशीकेँ दुरागमन भेल रहए। समय खूब सुभियस्त रहै, आमो खूब फड़ल रहइ।"

दुअन्नी हँसी मुहसँ निकालैत अपराजित बिच्चेमे बजली-

"ओही साल हम अम्मट पाड़ब सीखलौं।"

'अम्मट' सुनि शुभलाल भाय बुझि गेला जे पत्नीक मन खटपन-मिठपन भऽ रहल छैन। बजला-

"आठे दिन जखन पीहरसँ पीघर एना भेल रहए, भोरहरबामे जे पुरबा हवा उठल, हम जखन माएकेँ कहलिऐ जे माए सभटा पकलाहा गुलाब खास आम खसि पड़त, तखन कहने रहए ने जे घरवालीकेँ संग कऽ कऽ चलि जाह। राति-बिराति हमर जाएब नीक हएत।"

घटनो तँ घटना छी। पूर्वाक तेज लहकी उठल छेलै, जइ गाछी-कलममे बगवार सुतै छला से तँ छेलाहे जे नइ सुतै छला तइमे शुभलाल सेहो छेलाहे। आम सन पवित्र सभजन फल, तहूमे दूटा आम अपराजित दिनमे खेने छेली। जेकरा खेबामे जेतेक समय लगल छेलैन तइसँ बेसी समय ओकरा निहारैमे लगल छेलैन। तँए, देखल-बुझल रूप मनमे अतीतक टटके गड़लैन। माइयक[1] आदेश सुनि अपराजित पत्नीक रूपमे आमक गाछी जाइले पतिक संग तैयार भेल छेली। एक तँ ओहुना ओ उमेर ओहन होइए जइमे लोककेँ किछु करैक उत्कंठा जगिते अछि। तहूमे संगी भेटने तँ आरो प्रखर भऽ जाइए।

जीवनक धारमे अपराजितकेँ ठाढ़ होइते शुभलाल भाय विचार केलैन जे आब अपन विचारकेँ खोलि बजैमे कोनो असोकर्ज नहि अछि। अतीतमे वौआइत अपराजित भविस दिस देखै-सुनै-बुझै-करैक जिज्ञासामे जिज्ञासु बनि पति दिस देखए लगली।

शुभलाल भाय बजला-

“काल्हि भोरक गाड़ी गाम जाइले जरूर पकैड़ लेब। गाम जेबे नइ करब, आब गामेमे रहब।”

पुरुष परीक्षाक अन्तिम बेलामे, जखन समैयक मोड़क धारक बीच लोक पड़ैए, जैठाम निकलैक बाटो सॉकर रहैए आ गलत धाराक बिकराल रूप सोझे-सोझ पड़ने असोकर्जो रहैए, वएह घड़ी, वएह समय ने पुरुष परीक्षाक भेल। अपराजित गामकेँ बिसैर जकाँ गेल छेली। तहूमे सासुरक गाम। अपन जन्मसँ बालपन होइत किशोरपन तक माए-बापक छाँहमे रहली, सासुर एला मासे दिनक पछाइत पतिक संग गाममे रहने समैये कम भेटलैन। तहूमे मास दिनक ओहन जिनगी जे आँगनसँ बहरा नइ सकली, तखन जँ सासुरक गाम माने–पतिक गाम बिसैर–गेली तँ समीचीने भेल। ओना, अखन तक अपराजितक मनसँ हटल छेलैन जे बंगलोरक शहरी जिनगी, जेकर अभ्यस्त भऽ गेल छी आ ग्रामीण जिनगीक बीच बहुत बेसी दूरी बनियेँ गेल अछि, मुदा मनुखो तँ मनुख छी दुनियाँक कोनो दूरीकेँ मेटाइयो सकैए आ बनैबतो अछिए।

ओना, शुभलाल भाय अपन विचारकेँ संकल्प बना मनमे नीक जकाँ रोपि नेने छला जे जँ पत्नियोँ संग जाइले तैयार नइ हेती तैयो गाम जेबे करब, माने असगरो...।

अपन भार हल्लुक करैत अपराजित बजली-

“आब की बुझै छिऐ जे वएह समय अछि जे डेरामे ताला खोंसि दइ छेलिऐ आ दुनू परानी हाथमे झोड़ा-बैग लटकौने विदा भऽ जाइ छेलौं। दूटा बेटो-पुतोहु अछि आकि असगरे छी जे उठि कऽ विदा भऽ जाएब।”

ओना, शुभलाल भाइक मनमे उठि गेलैन जे की अपने परिवार बन्धनसँ मुक्त छी वा बन्धनमे छी। मुदा तइ दिससँ अपनाकेँ मोड़ि अपन

गामक स्मृतिमे शुभलाल भाय तेना भँसि रहल छला जे फले-फल सुफले-सुफल नजैरिक आगू दौड़ रहल छेलैन। समयक लहैर गाम दिस नइ बढ़ल जा रहल अछि सेहो केना नइ कहल जा सकैए। ओ तँ बढ़िये रहल अछि। जहिना मिथिलाक लोक आनठाम गेला तहिना आनो-आनठामक लोक तँ मिथिलाक बजारमे अपन-अपन जीविकोपार्जन कइये रहला अछि। अनेको संस्थानो आ व्यापारोक रूप सोझमे अछिए।

अपन विचारमे दृढ़ता अनैत शुभलाल बजला-

“हँ, से तँ परिवारमे छीहे। तँए एकबेर कहि तँ जरूर देबइ। किए अपना सिर अजस लेब जे काल्हि दिन वएह जँ उनैट कऽ कहए जे जखन अपन बाप-दादाक डीहकेँ, जे अखन मरनासन्न भऽ गेल अछि, जगबए जाएब तखन परिवारक सभ किए ने जाएब।”

विस्मित होइत अपराजित बजली-

“गाममे आब की अछि जे जाएब?”

नव चिन्तनसँ चेतल चेतनामे जहिना उदीयमान बल होइ छै तेहने बल जेना शुभलाल भाइक विचारमे सन्हिया गेल छेलैन। बजला-

“गाममे की नइ अछि..!”

❑ शब्द संख्या : 1940, तिथि : 06 नवम्बर 2018

# परिछन

अगहन आगमनक पहिल दिनक चारिम पहरक समय। काल्हि राति जे कातिकक पूर्णिमाक राति छल, भाए-बहिनक पाबैन- सामा-चकेबाक उत्सव मनौल गेल। परसुए हनुमनोत्सव सेहो मनि गेल, जइ उत्सवक मंचपर विद्-प्रवर कहि चुकल छला जे जखन भक्त बनि भक्ति जीवनक संग करब तखने राम सन आश्रयदाता भेट पौता। परसुका दिनक उत्सव भेल, कौल्हुका रातिक उत्सव भेल आइ तेसर दिनक चारि बजे बेरूका समय छी...।

एते फरिछा कऽ ऐ दुआरे कहलौं जे आठ पहरक दिन-राति तँ होइए, मुदा पहर आ दिन-रातिमे घटबाढ़ि भेने समयमे सेहो चढ़ा-उतरी होइते अछि। कहब से केना? जइ सुर्जकेँ अपने ठेकान नइ छैन जे माघ महिना केते बजे नीन टुटैए आ जेठ महिना केते बजे टुटैए, माने सुर्योदय होइए।

पूब रूखिये दरबज्जाक ओसारक चौकीपर हृदयलाल बाबा अपन जिनगीक अन्तिम पहर नहि, अन्तिम बेलाक सीढ़ीपर बैस अपन परिछन करैक विचार मने-मन कए रहल छला कि किशोरी दादी चाह नेने पहुँचलैन।

पत्नी हाथक चाहक आग्रह देख हृदयलाल बाबाक हृदय जहिना

जुड़ेलैन तहिना पत्नीक रूप देख जुड़पन सेहो जगलैन जइसँ शरीरमे फुरपन आबए लगलैन। जुड़पन जगिते मनमे उठलैन- अनेरे जे लोक ब्रह्माजीकेँ गरियबै छैन जे ओ बेइमान छैथ, नशेरी छैथ, भाँग पीब कऽ जखन सिरजन करै छैथ तँए केकरो दर्जनक-दर्जन बेटे दऽ दइ छथिन आ केकरो दर्जनक-दर्जन बेटीए। ईहो ने हुनका विचारि कऽ देख सिरजऽ पड़तैन जे बेटीक बिआहक दहेज करोड़क सीढ़ी पकैड़ लेलक अछि तँए कनी...। मुदा एते तँ सत् बात अछिए ने जे वैवाहिक सम्बन्ध बना हर मनुखकेँ जीवनक लेल संगी कइये दइ छथिन। आब ओ संगी कोन रूपक अछि आ अपने अपना कोन रूपक खगता अछि से परिछन तँ करए पड़ैए किने। हाथमे चाह लइसँ पहिने, कनी-मनी हृदयलाल बाबाक हृदय थरथरेलैन। मुदा ओइ थरथरीकेँ विचारक बान्हसँ बान्हि तरमे दाबि देलैन। थरथरी ई उठल छेलैन जे पत्नी..? मुदा बेवहारोक तँ अपन माइन छइहे।

हाथमे चाहक गिलास पकैड़ एक घोंट जहाँ कण्ठ लग गेलैन कि चाहक रंगसँ मोहित जेना चाहक रंगसँ भेल छला तहिना चाहक स्वाद बुझि आरो मोहमग्न भऽ गेला। मोहमग्न हृदयलाल बाबा बजला-

“बड़ सोचि कऽ दाय-माय सभ अहाँक नाओं किशोरी रखलैन!”

पतिक बात सुनि किशोरी दादीकेँ मनमे शंका भेलैन जे हँसी-खुशीसँ पति बजला अछि आकि हँसी-चौल केलैन अछि। मुदा दुनू चोरकेँ पकड़ैले चौकीदारो तँ अपना अछिए। जँ खुशीसँ हँसल हेता तँ आगू आरो खिलखिला कऽ हँसता, नहि जँ चौल केने हेता तँ आगू आरो ने चलिऔता। जिनगी भरिक जहिना संगी तहिना साथियो तँ वएह रहला अछि, विचारियो वएह छैथ तखन सोल्होअना चलिऔल बोलक भागी हमहींटा किए हएब। ओहो तँ हेबे करता किने तँए एहेन हँसी हमहूँ किए ने हँसब। बजली-

“मिथिलाक किशोरी जहिना सीता छेली तहिना ने हमहूँ ओही माटि-पानिक मिथिलाक किशोरी छी।”

‘मिथिलाक किशोरी’ सुनि हृदयलाल बाबाक मन जहिना पानिक बीच हेलवाह सुरकुनियाँ काटि केतौ-सँ-केतौ जाइए तहिना किशोरीक रूपपर नजैर छछललैन। छछैलते जिनगीक बीचक एक सीढ़ी, माने किशोर वय, मिथिलाक कन्याक किशोर वय, पछाइत ने दाय-मायसँ अर्जित छठियारी रातिक नाओं छी। जहिना किशोरी दादी अपन रूप सीताक देवत्वमे देखै छेली तहिना अपन नामोकेँ तही धारमे भँसियाबैत बाजल छेली...।

तैबीच चाहक गिलास खाली भेने हृदयलाल बाबाक नजैर पानपर सेहो पहुँच गेलैन। जइसँ मन फुला सेहो गेल छेलैन। मिथिला चर्च मनमे अबिते बजला-

“ठीके अंगरेजिया सभ कहैए। मिथिलाक तीन चीजक जोड़ नहि अछि, ओल्ड बेटल, ओल्ड वाइन आ ओल्ड वाइफ माने समझदार पत्नीक।”

भाषा-भाषाक बीच तँ सेहो दाउ-दब्बी अछिए, ओही दाउसँ हृदयलाल बाबा किशोरी दादीकेँ तर करै चाहलैन मुदा से सुतरलैन। एकठामक साठि बर्खक जिनगी हृदयलाल बाबाक आ किशोरी दादीक हृदयकेँ बहुत किछु एकठाम जोड़िये देने छेलैन आ जुड़ाव-टुटानक गुण सेहो दुनूमे समान रूपे आबिये गेल छेलैन, जइसँ दुनू बेकतीक बीच वैचारिक एकरूपता सेहो आबिये गेल छेलैन।

ओना, हृदयलाल बाबा पत्नीक संग गप-सप्प करैक अपन नियमित समय बनौने छैथ जइमे परिवारक दिनचर्याक विचार करैत गामो-समाजसँ आगू बढ़ि शास्त्र-पुराणक गप-सप्प सेहो करै छैथ। छेहा किसानी जिनगीमे जीने हृदयलाल बाबाकेँ शास्त्र-पुराण पढ़ैक भरपुर

समय नइ भेटलैन मुदा समाजक बीच रहने एते तँ भेबे केलैन जे कातिक मासमे अनेको परिवारक दरबज्जापर भागवत पुराण कथा, महाभारतक कथा आ गीता पाठक संग रामायणिक पड़ायन सेहो होइते अछि। तैसंग समाजमे अनेको ऋृषि-मुनीक वाक् कथा, कहबी, फकरा, लोकोक्ति, अलंकार इत्यादिक माध्यमसँ मौखिक रूपमे चलिये रहल अछि, जरूरत अछि ओकरा जिवनानुकूल पकड़ैक। से हृदयलाल बाबा पकैड़ नेने छला। हृदयलाल बाबा बुझि गेल छला जे पत्नी किशोरी सभ किछु भावनामे देख रहली अछि, मुदा ओ जिनगीसँ सटि कऽ चलैए वा हटि कऽ से बुझिये ने पेब रहली अछि। एक तरहक नामकरण काजक पछाइत होइए, जेकरा काम-धाम-नाम कहै छिऐ, आ दोसर होइए बच्चामे नामकरणसँ जगाएब। दुनूमे बेवहारिक दूरी भइये जाइए...। चढ़ैत पत्नीक विचार देख हृदयलाल बाबा बजला-

"जनक किशोरी सीता अहाँ अपनाकेँ बुझै छिऐ?"

पतिक विचार सुनि किशोरी जेना विचारक दुनियाँक अकाससँ छाती गड़े धरतीपर खसि पड़ली तहिना भेलैन। से भेलैन अपन मनेक विचारानुसार। किएक तँ देवतुल्य सीताकेँ बुझै छेली आ अपनाकेँ मनुख। बजली-

"अपनाकेँ जनक किशोरी सीता किए बुझब, मुदा हमरो जनम ते अही माटि-पानिमे ने अछि। तहूमे कि हम अपन नाम अपने रखने छी आकि दाय-माय सभ असिरवादीमे देलैन।"

पत्नीक विचार सुनि हृदयलाल बाबा बुझि गेला जे अपन नामक सीमा पत्नी छोड़ैले तैयार नहि छैथ। जनक-जननी सीताक जे धनुष पूजन छैन ओ किशोर अवस्थाक संकल्प अवस्था छी। जइ अवस्थामे किछु करैक ललक जगै छै, वएह ललक संकल्प पैदा करैए जैठाम पहुँच नर-नारी-वाला अपन जिनगी परेखैक ज्योति सेहो पबैए। यएह भेल नर-

वाल-वाला स्वयंवर। खाएर जे अछि, मुदा बेवहारिको पक्ष तँ अछिए। रामक संग चौदह बर्खक बनवासी जीवन पति-पत्नीक अटुट सम्बन्धक परिचय सेहो छीहे...। मुदा विचारकेँ विराम दैक विचार करैत हृदयलाल बाबा बजला-

"दुनियाँ जे बुझै, मानै वा करै से दुनियाँ अपन जानह। मुदा हमर तँ किशोरी कनियाँ सभ दिन अहाँ रहलौं आ आगूओ रहबे करब। तइले अनेरे जे भरि दिन रक्के-टोकी करैत रहब ते नीक गप कखैन करब।"

समझौताक स्वरमे किशोरी दादी बजली-

"जानक जपाल हटल, आब चैन भेलौं।"

ओना, हृदयलाल बाबाकेँ ई बुझि पड़लैन जे पत्नी परिवारसँ अपनाकेँ मुक्त बुझि रहली अछि, मुदा कोन रूपे बुझि रहली अछि से केना बुझब। देखते छी जे छोटो-क्षीण गप-सप्पक झगड़ामे पति-पत्नीक बीचक जिनगी तेना टुटम-टुट भऽ जाइए जे एक-दोसराक खून पीबैक पिपासु बनि जाइए...।

हृदयलाल बाबा बजला-

"से की?"

किशोरी दादी बजली-

"दुनू बेटाकेँ अपन लूरि-मुँह भऽ गेलै जे परिवार चला लेत। तँए आगू दिन अपन सोचैत-विचारैत चलत। हमरा सबहक आशा केते दिन करत। अपन मन, धन, बल ने अपनपन भेल मुदा से तँ लोके ने अपन बनाएत।"

पत्नीक राग-विराग देख हृदयलाल बाबाक मन डोलपत्ता करए लगलैन। डोलपत्ता ई जे आगू दिस तकैत तँ देखैथ जे नान्हि-नान्हिटा धिया-पुता बुढ़-बुढ़ानुसकेँ कहैए जे 'हे बुढ़बा तोरा हम पुछैले गेलियह हेन!' जखन पुछे नहि तखन विचार आ विचारक धार केना बनत जे धारा

बनि प्रवाहित हएत...। तँए पत्नीक विचारमे थोड़ेक नाँगरियो जोड़ि आ थोड़ेक मुहोँ बनबैत बजला-

"केकरो आशा केकरो ने करक चाहियै। ने पतिक आशा पत्नीकेँ करक चाहियै आ ने माए-बेटा आकि बाप-बेटाकेँ करक चाहियै। सबहक मनमे जिनगीक एक धारा बनक चाहियै, जइमे प्रवाहित होइत ओ अनवरत बहैत चलत।"

ओना, अखन शान्तचित्तो आ परिवारिक वातावरण सेहो हृदयलाल बाबाक शान्त छेलैन्हे तँए विचारो करैमे शान्ती आबिये गेल छेलैन।

शान्तचित्तक चेतल विचार करैत किशोरी दादी बजली-

"ठीके कहै छी, अपने मुइने जग मुए आ अपने जगने जग जीए। जाबे आँखि तकै छी ताबैये ने दोसरोक आँखि देखै छी।"

विचारमे समरसपन–माने पति-पत्नीक बीच वैचारिक समरसपन– अबिते हृदयलाल बाबा अपन दुनू परानीक बीचक परिवारिक जिनगीक परिछन दुनू परानीक बीच करैक विचार केलैन।

ओना, 'जानक जपाल हटल' किशोरी दादी अपने मुहेँ बाजि चुकल छेली मुदा 'जपाल की छल' आ 'केना हटल'पर नजैर अँटकबे ने केलैन। होइतो अहिना छै जे गाछपर चढ़ल वा पहाड़पर चढ़ल केकरो सोझाक निच्चाँमे रूपैआक ढेरी देख पड़ैत तँ ओकरा पकड़ैले, गाछपर सँ आकि पहाड़परसँ उतरैकाल जे रस्ता देखैत ओ एहेन बनि जाइए–भावनात्मक रूपे–जे रस्तामे केतौ काँट-कुशक अवरोध बुझिये ने पड़ैए। तहिना परिवारक बीच किशोरी दादीक जिनगीक बीच जे काँट-कुश छेलैन से नजैरमे एबे ने केलैन।

किशोरी दादीक विचार जे 'जपाल हटल चैन भेलौं'पर हृदयलाल बाबा मने-मन मुस्कुरा रहल छला। मुस्कुराएबोक तँ दोहरी चालि छइहे।

एक भेल खुशीसँ मुस्कुराएब आ दोसर भेल काज वा विचारक कमीकेँ देख व्यंग्यवान छोड़ैबला मुस्कुराएब। मुदा सभ विचारकेँ मृत्युवान जकाँ मटियबैत अपन जिनगीक–माने दुनू परानीक बीचक जिनगीक–पहिल खण्डकेँ शुरू करैत हृदयलाल बाबा बजला-

“अपना दुनू गोरेक बीचक सझिया काज शुरू जहियासँ भेल तहिये से ने जोड़बै आकि बाप-माए ऐठाम[2] केकरो सीम चोरा कऽ तोड़िऐ आकि गाछीसँ आम चोरा कऽ बीछि अनलिऐ, तइ सबहक भागी हम थोड़े हएब।”

जहिना धारक धारामे वा बाढ़िक धारामे पानिक बेगक संग खढ़ो-पात बेगवान भऽ जाइए तहिना किशोरी दादी विचारक बेगमे बजली-

“हमर भाग अहाँ नइ लेब ते अहूँक भाग तँ हमहूँ नइ ने लेब।”

हृदयलाल बाबाक हृदयक बखारक बाट–बखार बाट भेल अन्न-पानि रखैबला बखारीक रस्ता–जेना खुलि गेलैन तहिना बजला-

“हमरेटा भागी अहाँ किए हएब, दुनियाँक केकरो भागी नइ होइयौ, मुदा अपन भागक निमरजना तँ अपने पूरेबै किने?”

जहिना पानिक बेगमे पानियेक गतिये खढ़ो-पात दौड़ैत चलैत अछि आ पानियेक झटकासँ वा अपने दिशाहीन भेने केतौ बोन-झाड़ वा गाछे-बाँसमे अरड़ा अरए लगैए तखन जहिना अपन बेग मन पड़ने बुझि पड़ै छै अपन आगू-पाछूक दिशा बाट..!

पतिक विचार सुनि किशोरी दादी जेना ओकर मर्म बुझि मर्माहत हुअ लगली जइसँ तहिना ठोर तँ बिदकैन मुदा मुँहक बकार हरण भऽ गेलैन, किछु बाजि नहि पेब रहल छेली, मुदा आगू सुनै-बुझैक मन पिपाशु भइये गेल छेलैन। तैबीच समझौता स्वरमे हृदयलाल बाबा बजला-

“अच्छा छोड़ू ओइ जाल-जंजालकेँ, दुनू बेटो आ बेटियो, जहियासँ

किशोरावस्था टपल तहियासँ हिसाब जोड़ू। तइसँ पहिने जे भेल से हमहूँ माफ करै छी आ अहूँ माफ करू।”

किशोरी दादी बजली-

“से केना हएत, पहिल हारि अहाँ मानलौं ते पहिने अहाँ ने माफी मांगब, मन हएत ते माफो कऽ देब नइ ते नजैरमे दोखी मानबे करब किने।”

पत्नीक ओझराइत समझौताकेँ सोझरबैत हृदयलाल बजला-

“सुनू, मुँहक बातकेँ लोक कमो-बेसी कऽ दइए मुदा लिखितमे ते से नइ हएत, एके एकरार दुनू गोरे करबो करू आ लिखबो करू, खाली औंठा-निशान बाँकी राखब।”

समझौताकेँ आगू बढ़बैत किशोरी दादी बजली-

“लिखा-पढ़ी ऐगला साल-ले राखू, अखन जे विचार करैक अछि से करू।”

हृदयलाल बाबा-

“समयानुकूल दुनू बेटोकेँ बी.ए. पास करौलिऐ आ बेटीकेँ मैट्रिक तक पढ़ा बिआह-दान करा अपन भार उतारि लेलौं।”

बेटीक नाओं सुनिते किशोरी दादी मने-मन गुन-गुनाए लगली-

“मिथिलाक किशोरी नारी...।”

पत्नीकेँ विचारक धारमे बहैत देख हृदयलाल बाबा बजला-

“ओहूँकेँ देखै छी, क्षणे-क्षण हाफी होइए आ अपनो मन जेना लटकल बुझि पड़ैए। तँए पहिने खूब करगरसँ हार्ड-लीकर देल चाह पिआउ।”

जहिना हृदयलाल बाबाक चाहक आदेश किशोरी दादीकेँ भेलैन तहिना आदेशपाल जकाँ सचमुच ओहने चाह बनबैक विचार दादी मनमे

रोपि लेली। जेहेन पतिक आदेश भेलैन। अपन बेवहारिक जिनगीमे अहाँ कहबे करब जे ई झूठ छी। मुदा से नहि, प्रेमपलित जीवन, साधारण जीवन आ जनसाधारण जीवनक बीच क्रियागत अन्तर तँ भइये जाइए। जइसँ क्रियाक रूप निर्धारित करैमे जहिना एक 'मूर्त रूप' स्थापित करैए तहिना दोसर- 'प्रेममूर्त रूप' भेल आ तेसर- 'अमूर्त रूप' होइए तहिना किशोरी दादीकेँ भेलैन। पतिक प्रति परिवारक चर्चक चेतनासँ किशोरी दादी चाह बनबए विदा भेली। ओना, बिसराहो कम नहियेँ छैथ। तीन दिन पहिने जेकरासँ गारि-गरौबैल, मुहाँ-ठुठी भेल रहलैन तेकरो-दे बजती जे 'नहि फल्लाँसँ तँ महिना दिनसँ भेँटो ने भेल तखन झगड़ा कहिया भेल।' आ बिनु पनचैती करैनौं पहिलुके जकाँ सम्बन्ध स्थापित कइये लइ छैथ।

प्रेमरूपनी हाथसँ चाहक गिलास किशोरी दादी हृदयलाल बाबाक हाथमे मुस्की दैत पकड़ौलैन। जहिना अपन मन हार्ड लीकर चाहक रंगपर लटकल छेलैन, तहिना चाहक रंग हाथमे देखते देरी हृदयलाल बाबाक मन फूलसँ लदल कोनो गाछ जहिना झूकि जाइए तहिना झुकलैन। झुकिते बजला-

"परिवारमे दुनियाँ बँटल अछि, तँए अपन भार परिवारे धरि बुझू।"

पमरिया नाचमे जहिना 'हाँइ जी' करैबला तेसर होइए, महराइ गबैकाल जहिना पलगँइ होइए तहिना हृदयलाल बाबाक शूरमे शूर मिलबैत किशोरी दादी बजली-

"आगि लगौ कि बज्जर खसौ, हमरा कोन मतलब दुनियासँ अछि। अपना परिवारसँ उगारे ने अछि आ दुनियाँकेँ की देबइ। तखन एतबे ने जेते कर्ज लेबै तेते दइयो देबइ।"

ओना, किशोरी दादीक विचार सुनि हृदयलाल बाबाक विचारमे एकाएक कनेक ठनक एलैन मुदा मने-मन पत्नीक चरित्र देख समरसपन

सेहो जगलैन। हृदयलाल बाबा बजला-

"गणेश आ दिनेश दूटा बेटा भेल आ राधा बेटी, सएह ने माने तेतबेक ने भार दुनू गोरेक सझिया कारोबार भेल?"

किशोरी दादी-

"सझिया कारोबार तँ भेल मुदा बेटाक भारक भार अहाँ सिरपर आ बेटीक भार हमरा सिरपर रहल।"

समाजक इतिहासगत परिवेश जेना रहल अछि तइ अनुकूल किशोरी दादीक विचार छेलैन तँए हृदयलाल बाबा बिना किछु टीका-टिप्पणी केने आगू बढ़ैक विचार कऽ लेला मुदा चर्च केमहरसँ उठाएब तैठाम आबि मन अँटैक गेलैन। अँटैक ई गेलैन जे जखने बेटा दिससँ शुरू करब तँ ओ अन्तहीन विचार-विमर्श भऽ जाएत, तँए बेटी दिससँ उठेलापर किछु तँ सुधरल बाट भेटिये जाएत। बजला-

"राधाक भार हमरा सभपर मिसियो भरि आब नइ रहल। बड़बढ़ियाँ वेचारी अपन परिवारकेँ अपन ढंगक बना निचेनसँ जीबैए।"

जेना-जेना हृदयलाल बाबाक मुहसँ विचार निकलैत रहैन तेना-तेना किशोरी दादीक मन विह्-विहिया विह्वल होइत गेलैन। जहिना गंगानदी पार केला पछाइत नाविक[3] जखन भगवान रामसँ खेबा मंगलकैन, तखन राम तँ चुपे रहला मुदा मिथिलाक किशोरी अपन हृदयक 'हार' उतारि मल्लाहकेँ दइले तैयार भऽ गेली, मुदा 'हार'केँ 'हार' नहि मानि मल्लाह भवसागरकेँ बेवहारसागर बना रामकेँ आगू बढ़ए देलकैन तहिना किशोरी दादी अनठबैत हृदयलाल बाबाकेँ कहलखिन-

"राधा बेटीक भारसँ अहाँ भलेँ अपनाकेँ छुट्टी पेब लिअ मुदा नातिनक कन्यादान हमहीं करबै, से अखने सुनि लिअ।"

ओना, किशोरी दादीक विचार किछु मानेमे हृदयलाल बाबाकेँ रोकियो रहल छेलैन मुदा पत्नीक भारकेँ उतारैक रस्ता देखबैत बजला-

"जखन पोतीकेँ दादी छै तखन अहाँ कोन अधिकारे कन्यादानक भार लेबइ।"

पतिक विचार सुनि किशोरी दादी थोड़ेक धकमकेली जरूर मुदा लगले मनमे उचैड़ एलैन-

"राधाकेँ तीनटा बेटी छै, जखन दादी बेटाबला छैथ तँ दूटाकेँ कन्यादान ओ करौथ, एकोटा ते हमरो करए देती।"

हृदयलाल बाबा जेते जल्दी परिवारसँ निकलए चाहै छला तेते जल्दी निकलैक गड़ भेटिये ने रहल छेलैन। किए तँ मनमे रहैन जे जँ दुनू गोरे एक विचारमे सीता-राम जकाँ आकि राधा-कृष्ण जकाँ बेवहारिको आ विचारको रूपमे संगे रहब तखन ने चैनक सुख हएत, से तँ बज्जर-पर-बज्जर खसि तेना बीचमे अट्ठाबज्जर बनैत जाइए जे लगले पार करब असान अछि। मुदा छोड़ि कऽ भागियो केतए जाएब। जेतए जाएब तेतौ तँ यएह रामा-कठोला भेटत। 'ऊपर चढ़ि-चढ़ि देखा तँ गाम-गामसँ शहर-बजार धरि एके लेखा।' मुदा के लिखा आ की लिखा से के बुझत..! मनकेँ समेट हृदयलाल बाबा बजला-

"अहाँक विचार सेल्होअना मानि लेलौं। जहिना अहाँ कहै छी जे दुनियाँमे केतौ किछु होउ, तइसँ मतलब नहि, तहिना हमहूँ मानि लेलौं।"

अपन जीत देख किशोरी दादी जीतहा शंख जकाँ मुहेँ भरे चलैत बजली-

"ई बात आइसँ आपस लिअ जे मौगीकेँ औंठा देखबैत जे कहै छिऐ- 'मौगीकेँ नाक नहि रहैत तँ की-की खाइत तेकर ठीक नहि।"

हृदयलाल बाबाक मनमे अटकन-मटकन उठैन जे की विचारए चाहै छी आ बिच्चेमे केना मोकर फुटि जाइए। से नहि तँ केतौ कि अन्ते छी आकि आने लोक लगमे अछि जे कोनो काजे आकि कोनो बाते चोरा-नुका कऽ करब। दुइये परानी छी, पत्नीए छैथ जे-जे बजती तइमे हूँहकारी

भरैत अपन विचार राखब नीक हएत। बजला-

"अहाँ कियो आन छी जे अनटेटल बात बाजब। जखन मानै-जोकर बजै छी तखन किए ने मानब।"

पतिक विचार सुनि किशोरी दादीक जेना भक् खुजलैन। बजली-

"की तीनू बाल-बच्चाक चर्च उठेने छेलिऐ?"

पत्नीक सुढ़िआएल विचार सुनि अपन सूढ़ नमरबैत हृदयलाल बाबा परिवारपर दैत बजला-

"बेटीसँ तँ दुनू परानी गंगालाभ भेलौं, भेलौं कि नइ भेलौं?"

किशोरी दादीक मनमे उठलैन गंगालाभ तँ तखन ने होइतौं जखन माता-पिताक संग बालो-बच्चाक कल्याणक बाट भेटैत। से तँ नहि अछि। बेटीसँ उद्धार पबैमे केते श्रमक उत्सर्जन भेल आ बेटामे केते केलौं अछि..? मुदा विचारक दौड़मे किशोरी दादी एकबट्ट होइत पतिक संग चलए चाहि रहली अछि। तँए बिना कोनो मेख-बृख केने हुँहकारी दैत बजली-

"परिवार तँ जहिना अहाँक छी तहिना ने हमरो छी। संगे सुखो भोगै छी आ दुखो भोगिते छी।"

बी.ए. पास केला पछाइत हृदयलाल बाबाक जेठ बेटा गणेशकेँ कौलेजिये अवस्थामे अनुभूति हुअ लगल छेलै जे कोनो परिवारक उठाइन, माने उन्नैतिक दिशामे बढ़ब तखने सम्भव अछि जखन गोबरधन पहाड़केँ जहिना कृष्ण उठौलैन तहिना उठौल जाएत। जइसँ ओ अपन बपौती सम्पैतपर अपनाकेँ ठाढ़ कऽ सकए। से गणेश कऽ लेलक। जइसँ परिवारक गाड़ी नीक जकाँ आगूमुहेँ दौड़ै छइ। मुदा दोसर बेटा- दिनेश सेहो बी.ए. पास केने अछि, मुदा ओ देशी-विदेशी चाक्यचिक्यमे नोकरीक रस्ता पकैड़ बढ़ए चाहलक जे अपने चाहने थोड़े होइ छइ। ओना, सघन दुनियाँमे ओहो सघन अछि तँए एकबट्ट विचार तँ सम्भव

नहियेँ अछि। मुदा ऐठाम दिनेशक चर्च अछि जे बेरोजगारीक चलैत जीवन असथिर भइये ने रहल छेलइ। जे परेशानी अपना संग परिवारोक बीच छलैन।

चालीस बर्खक उमेर धरिक समय दिनेशक डुमि गेल। तहिना पैंसैठ-सत्तैर बर्खक उमेरमे जहिना हृदयलाल बाबाक तहिना किशोरी दादी परिवारक चिन्तामे डुमल रहलैन। वएह दिनेशकेँ जखन अपन हारल-मारल जिनगीक बोध भेलै तखन रस्ता पकैड़ अपन भार अपने उठा चलए लगल। सएह देख किशोरी दादी बाजल छेली- “जानक जपाल हटल, आब चैन भेलौं।”

❑ शब्द संख्या : 2661, तिथि : 11 नवम्बर 2018

# झूठ सपना

मिथिलाक रूप-रंगक भीतर भवनगर गाम, जइ गाममे सुनीता सुचिता, सुशीला आ सुलेखा।

मिथिला तँ मिथिला छी तहूमे गामक मिथिला आ गामोमे भवनगर गाम। अदौक गाम भवनगर, किए तँ त्रेता जुगमे जखन राम धनुष तोड़ए एला तखन भवनगरक देखनिहारो आ स्वागत गीत गौनिहारिमे चारि गोरे भवोनगरक छेली। तँए भवनगरक लोककेँ आत्मगौरव छइहे।

जहिना साइयो नदीक बीच बसल मिथिला, तहिना साइयो रंगक माटि-पानिसँ सजल सेहो अछिए। कहब जे माटियो तँ माटि भेल आ पानियो तँ पानियेँ भेल। मुदा से नहि अछि, अछि ई जे धरतीक माटियो साइयो रंगक गुण-धर्मसँ युक्त अछि। जेकर जीवंत-जगंत नमुना अछि जे अनो-फलो-फूलो आ पातोक बढ़बाढ़िमे सहयोगी बनि सहयोगो करैए आ असहयोगी बनि असहयोगो तँ करिते अछि। जँ से नइ अछि तँ एक्के गामक सभ माटिमे एक्के रंग सभ वस्तु किए ने उपजैए। कोनो माटि कोनो वस्तुकेँ[4] उमझबैए आ कोनोकेँ बँझियेबतो तँ अछिए। तहिना पानिक सेहो अछि। गाम-गामक तँ बात छोड़ू जे एको गामक पानि एकरंग नहि अछि। जइ इनार वा चापाकलक पानि पीबै छी, बगलेक दोसर इनार आकि चापेकलक पानि पीने सर्दी-बोखार लगि जाइए। खाएर जे अछि, छी तँ

सभ मिथिलेक माटि-पानि।

जहिना आन गाममे बाध-बोनक लहलही रहैए तहिना भवनगरमे सेहो रहिते अछि। अपन-अपन गामक सभकेँ अपन-अपन लहलही आनैक कारण अपन-अपन छैन। तहिना एहनो गाम तँ अछिए जइमे लहलही केकरा कहै छै जे दहदहीमे दहेबो कएल अछि आ अखनो दहाइते अछि। तहिना जड़-जड़ीमे सेहो जरितो आबि रहल अछि आ अखनो जरिते अछि। खाएर जे अछि, सभकेँ अपन-अपन समस्यो अछि आ अपना-अपना ढंगे कल्याणकारी बाट पकैड़ चलबोक अछिए। जा से नइ हएत ता कोनो गाम उठि कऽ अपना भरे ठाढ़ केना हएत। जखन गामक समाज ठाढ़ हएत तखन ने गाम ठाढ़ हएत। जेकरा कहै छिऐ अप्पन घर। अनतए तँ डेरेबला ने कहाएब।

भवनगरबलाकेँ गामक लहलहीक कारण दोसर छैन। दोसर कारण छैन जे अदौक गाम भवनगर रहने जहिना एकदिस अनक बखारी भरैबला बाधक बधबला[5] अखनो खढ़-पातक घर बना बास करैत अछि आ जहियासँ गाम भेल तहियेसँ पुस्त-दर-पुस्त ओइमे रहैत सेहो आबिये रहल अछि, अखनो अछिए। तँए कि मिथिलामे ओहन घर-दुआर नइ अछि जइमे रहैबला एकसत्तैरमे बैस हजार लोक पंक्तिवद्ध खेनाइ खा नहि सकैए। तेहनो तँ अछिए। खाएर जे अछि, अछि तँ मिथिलेक माटि पानि, भाषा, संस्कृतिक बीच ने, तँए संचमंच भऽ सभ विचारियो रहबे कएल छैथ आ जे सक लगै छैन से करबो करिते छैथ।

ओना, भवनगरकेँ आन गामबला सभ अनेको नाम देने छैथ, कोनो गामबला कहै छैथ- ‘धनहा गाम’, तँ कोनो कहै छैथ- ‘फलहा गाम’, कोनो कहै छैथ ‘कोइर-कुजराक तरकारी गाम’, तँ कोइ कहै छैथ- ‘चोरहा गाम।’ ओना, रंग-बिरंगक नाओंसँ भवनगरबला चिन्तित नहि अछि, तेकर कारण ई जे गाम तँ युगानुकूल बढ़बो करैए आ घटबो तँ करिते अछि, तहूमे भवनगरकेँ एते प्रतिष्ठा भेटिये चुकल अछि जे विद्वानक गाम,

डॉक्टरक गाम, प्रोफेसरक गाम, मास्टरक गाम, किरानीक गाम इत्यादि चपरासीक गाम इतिहासक पन्नामे नइ कहाएल अछि सेहो बात नहियेँ अछि। तँए सभ किछु अङ्गेजल गामबला छोट-मोट मान-अपमानकेँ बरखा-पानिक बुलबुला जकाँ बुझैए जे जहिना अकाससँ खसल तहिना धरतीमे सोंखा जाएत। तइले अनेरे महाकालीक आराधना छोड़ि बातक बतंगरमे लागब नीक नहि बुझि धियानेसँ निकालि-निकालि कातेमे रखै छैथ।

मुदा तँए कि ओ–भवनगरबला–अपन ऊपर लगौल अपमान-उपनाम सबहक सफाइ नइ दिअ चाहै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि। सबहक सफाइ सार्वजनिक रूपमे दिऐ चाहै छैथ। हृदय खोलि, छाती तानि भवनगरबला सभ सार्वजनिक रूपमे कहै छैथ जे 'धनहा गाम भवनगर छीहे। आ से ओहिना नइ ने भेल अछि, विद्वानक गाम रहने विद्वतजन गीताकेँ पूजाक पाठ नहि बुझि आँगिक क्रिया बुझि अङ्गेज नेने छैथ जइसँ एते विश्वास तँ छैन्हे जे जहिना कृष्ण अर्जुनकेँ कहलखिन जे कर्मक फल ओहने होइ छै जेहेन कर्ताक कर्म रहल। जखने कर्म धर्ममे अबैए तखने अर्जुन सन अर्जन-शक्ति आबिये जाइए। तँए जँ आन गामबला सभ धनहा गाम कहै छैथ तँ एते बधाइक पात्र तँ छथिये जे जहिना अयोध्याक दशरथक दरबारमे बधैया गीत गौनिहार छला...।

दोसर भेल- फलहा गाम। एक तँ विद्वानक गाम भवनगर सभ दिनसँ रहल, तैपर जनकजी सन-सन हर जोतनिहार सभ सभदिनसँ रहले आएल अछि। केना नइ जोतत? मिथिला की जर्मनी, इंग्लैड सन देश जकाँ लोहे-लक्कड़पर ठाढ़ अछि, ओ तँ अपन माटि-पानि, नदी-नाला, बाध-बोन, झरना-पहाड़, गाछ-बिरीछ, जीब-जन्तुसँ तेना भरल अछि जे अपने-आपमे सघन बोन सेहो बनल अछि आ भरल-पुरल सागर सेहो बनले अछि, तैठाम जँ कियो 'फलहा गाम' कहै छैथ तँ ओ जरूर देखल-सुनल-बुझल-गमल बाजि रहला अछि, तँए हुनका धनवाद किए देबैन,

हुनका फलवादे देब बेसी नीक हएत।

तेसर भेल- कोइर-कुजराक तीमन-तरकारी गाम। भाय, ओहिना नइ ने लोक कहै छैथ, अपन अनुभवसँ कहै छैथ किने जे जाबे धरतीकेँ कोरि-कमाएल नइ जाएत ताबे तीमन केना तरकारी बनैए आ तरकारी केना तीमन बनैए से थोड़े बुझबै।

चारिम भेल- चोरबा गाम। जे कियो भवनगर गामकेँ ‘चोरबा गाम’ कहै छैथ ओहो कोनो खिसिया कऽ नइ कहै छैथ, जँ खिसिया कऽ कहितैथ तँ दोसर रूप होइत मुदा से नहि, ओ सोल्होअना देखल-बुझल बात कहै छैथ तँए ओ सभसँ बेसी बधाइयोक आ धनवादोक पात्र छथिये। तेतबे नहि, जँ इमनदारीसँ देखल जाए तँ ओहूसँ–माने बधाइयो-धनवादसँ– बेसीक पात्र छैथ ओ, किए तँ ओ भवनगरबलाक सभ किरदानी आइयेसँ नहि, सभ दिनेसँ देखैत आबि रहल छैथ जे केना भवनगरबला अनकर पुस्तकालय देखैत-देखैत पसिनगर किताब चोरा कऽ बैगमे रखि लइ छैथ, तँए जँ ओ कहै छैथ ते कोनो अपराध नहियेँ करै छैथ। तहिना ओ- चोरबा आइयेक भवनगरबलाक चालि बुझै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि, सभ दिनसँ देखैतो आ सुनैतो आबिये रहल छैथ जे केना अनतए जा-जा ज्ञान सभ आनि-आनि ओकर चोरी नइ करै छैथ। तहिना आनठामसँ लूरि सभ सेहो चोरा-चोरा अनबे करै छैथ। ई तँ भेल ‘क्लास वन’ चोर सबहक सूची, दोसर नम्बर फुलवारीक मालिकक लिअ। दरबारक माली बनि जखन आन-आन राज दरबारक फुलवारीसँ ललचगर फूल सबहक बीजो आ गाछो जे किछु देखाइयो कऽ आ किछु नुकाइयो कऽ अनितो रहला अछि आ अखनो आनि-आन फुलवारीमे नइ लगबै छैथ सेहो बात नहियेँ अछि, तँए जँ कियो ‘चोरबा गाम’ भवनगरकेँ कहै छैन ते भवनगरबलाकेँ मनमे मिसियो भरि दुख किए हेतैन। स्पष्ट हुनका सबहक बुझब छैन जे जँ गोबरखत्तोक फुलाएल कमलक फूल छी तैयो ओ कमले ने भेल।

परिवारक बात छी नहि, गामक बात छी, सुनीता सुचिता, सुशीला आ सुलेखाक जन्म एक्के मुहूर्तमे एक्के दिन भेल। कहब जे जन्म भगवानक देलहा छिऐन तँए ओ असम्भव नहि भेल, मुदा चारूक नामक पहिल अक्षर 'स' एक केना भेल आ केना सौंसे गामक दाय-मायकेँ एहेन एकरूपता सुझलैन जे चारू गोरेक नाममे 'स' लगा देलैन? मुदा किछु छैथ ते भवनगरक दाय-माय छैथ किने, तँए पोथी-पुराणसँ हटि कऽ थोड़े चलती। भाय, रस्ता दिस कियो विदा हएब आ ई बुझले ने रहत जे केतए जाएब? तखन डेग केम्हर मुहेँ उठत? मुदा से थोड़े भवनगरक दाय-माय छैथ, ओ प्रौढ़, परिपक्क दाय-माय छैथ किने, तँए समयकेँ दू भागमे बाँटि शुक्ल-कृष्ण दू पक्ष केने छैथ। शुक्ल पक्षमे जन्म भेने चारू गोरेक नामकरण 'स' अक्षरसँ केलैन।

शरीर जहिना अनेको गुणो-धर्मक आ अवगुणोक धाम छी तहिना मनो तँ धाम अछिए। अही धामक बीचक गाम भवनगर। चारू वाला- सुनीता, सुचिता, सुशीला आ सुलेखा, गाम भवनगर। बच्चाक बीच जहिना गुण-अवगुण अंकुरावस्थामे रहैए तहिना भवनगरक चारू वालाक सेहो रहल। मिथिलाक गाम तँ भवनगर छीहे, जहिना एक दिस नीतिशास्त्रीयक बोन अछि, तँ दोसर दिस अनीतिशास्त्रक झाड़ सेहो अछिए। खाएर जे अछि, एक तँ ओहुना अपना सबहक दूरभाग रहल जे हजारो बर्खक गुलामीक शिकार रहलौं जइसँ शरीरो आ जिनगियोक खून-पसेनासँ मांस-मांसपेसिया तक चुसा-चबा गेले अछि। पढ़ाइ-लिखाइक जहिना एक दिस दुनियाँक शीर्षपर मिथिला अछि तहिना ओ समटल रहने आमजनक बीचसँ हजारो कोस दूर रहबे कएल अछि। जँ औझुको हिसाब देखब तँ बुझि पड़त जे पढ़ै-लिखैमे अदहासँ कम अखनो छीहे, तँए मिथिला पछुआ गेल सेहो केना कहल जाएत। एक-सँ-एक योद्धाक पइदायसी स्थल मिथिलाक माटि-पानि आइये नहि, सभ दिनसँ रहैत आबि रहल अछि। जँ से नइ करैत आएल अछि तँ कट्ठा भरि चास-बासमे

कियो योद्धा ओहन जिनगी बना बोनमे रहि जीवन भरि ज्ञान जे बँटैत-बिलहैत रहला अछि। तैठाम जँ आइयो मिथिलाक धरती आ मिथिलावासीकेँ हिस्सा लगा देखब तँ ओइ हिसाबे खेते-पथार–माने भूमिये–बेसी अछि। तैठाम जँ उत्तर प्रदेश, पंजाब सन आन प्रदेश–मिथिलांचलसँ बाहर जे क्षेत्र बिहार राज्यक अन्तर्गत अछि–तहू सभ राज्यसँ खाइ-पीबैक अनेको वस्तु आबि रहल अछि, ईहो तँ अपने ने देखए पड़त..! मानो तँ मान छी, सबहक छी मुदा स्वमान ने अपन भेल, ईहो देखबै ने।

स्कूलक (विद्यालयक) अभाव आर्थिक तंगीक संग धार-धुरसँ भरल क्षेत्रक भोग आइये नहि, सभ दिनसँ भोगै पड़ल छैन, मुदा तँए एकरा असाध मानि ली सेहो एकैसम सदीक लाजिमी हएत? हँसारतकेँ कियो रोकत? पहिने किछु कम छल, अखन किछु बेसी भऽ गेल अछि, तँए कहब मिथिला क्षेत्रमे लोकक बढ़बारि कम अछि सेहो बात नहियेँ अछि। टुटलो हथिसार तैयो नअ घरक साँगह अछिए। केतबो लोक मिथिलाक धरतीपर सँ किए ने पड़ा जाए, तँए घटबी पूरा नइ हएत सेहो बात नहियेँ अछि। तँए ने बच्चा रोकैक ऑपरेशन धुर-झाड़ चलिये रहल अछि।

एकठाम रहने चारू बच्चा पहिने बहिनक सम्बन्ध सिरजौलक, पछाइत सभ अपनामे बहिना बनि गेल। ता जिनगी बहिन जकाँ निमाहैक निमंत्रण स्वीकार केलक। रस्ता परहक चिक्कन माटिकेँ[6] घरौदा[7] बना अपन-अपन अँगना-घरक घरवासो लेलक आ घरवासक भोजो केलक। माटिये-माटि, सभ किछु खाइ-पीबैसँ लऽ कऽ सभ किछु रहइ।

समय बीतल, परिवारक अंग बनैक संग-संग अंग बनब भेल परिवाररूपी गाड़ीक, भलेँ ओ साइकिलक भालटूए जकाँ किए ने हुअए, गामक देवालयक नीपन-बाहरब सभ दिन करए लगल। औझुका जकाँ समय नहि छल, पूजाक फूल पहुँचेबै, जेना- दुर्गापूजामे गामक बाल-बोध

सभ भोरे फूल लोढ़ि भगवती स्थान पहुँचैबते अछि, ताधैर ओ अपनाकेँ पूजा करैक अधिकारी नइ बुझैए, ओ बुझैए नरक निवारन चतुर्दशीक उपाससँ लऽ कऽ रामनवमी, कृष्णाष्टमीक उपासक संग सत्-नारायण भगवानक उपास करब, जइसँ पूजाक अधिकारी स्वत: बनि जाइए। उपासक उपरान्त ओ पहिने देव-पूजन करत, पछाइत अपने जलग्रहण करत। नारीक विशेष गुण मिथिलांचलक नारीमे रहल आबि रहल अछि जे पतिक विचारानुकूल संगीक, मुदा आगू कोन रूपे बढ़ब तोहू दिस तँ देखए पड़त।

कनियेँ आगू बाल-विवाह रूकब शुरू भेले छल, दस-बारह बर्खक बीच चारूक बिआह भऽ गेल। जे जेते अगुआ कऽ गाम छोड़लक ओ ओते बेसी कनबो कएल आ कानबो सुनलक। मुदा जे सभसँ पछुआएल ओ कनबे ने कएल। केकरासँ गरदैन जोड़ि कनैत, माए तँ माइये छैथ, हँसू कि कानू, माए माइये जकाँ रहती, तँए सखी-बहिनपाक संग ने कानल आ ने कानब सुनलक, हँसिये-हँसीमे सभ उड़ि गेल। केतए गेल से अपनेटा बुझलक।

समय आगू बढ़ल। तीस बर्खक पछाइत एक-दोसरसँ, मोबाइल भेने सम्पर्क भेल। तैबीच के केतए माने चारू गोरे, रहल से अपने-अपनेटा बुझलक। चारूमे सँ कियो ने केकरो जानि पौलक। सबहक अपन-अपन मन कहै जे हमहींटा जीबै छी, बाँकी के केतए हेरा-ढेरा गेल तेकर कोनो पतो ने अछि।

चारू गोरेक बीच सम्पर्क-सूत्र बनने नैहरमे भेँट होइक प्रोग्राम बनल। ऐ दुआरे जे जइ धरतीपर बच्चामे चारू जिनगी बहन करैवाली बहिन जकाँ जीबैक संकल्प नेने छी।

चैतक रामनवमी दिनक दिन भेँट होइक ऐ दुआरे बनल जे गाममे ऐबेरक उत्सवमे कम्पीटिशन अछि, तँए देखै-सुनै-जोकर गाम सेहो रहबे

करत।

संजोग बनल, चारू गोरे रामनवमी दिन चारू दिससँ पहुँचल। गामक उत्सवक तेहेन हलहोरि चढ़ि गेल जे कोसी-कमला धारसँ बाढ़िक पानि उछलने जहिना गामे फँसि जाइए आ तखुनका जेहेन मन लोकक होइ छै तेहेन तँ नहि, मुदा राम-रमैयाक धुनक बाढ़ि एने गाम-घरक सेखी बदैल तेहेन बनियेँ गेल छल जैबीच सभ अप्पन सभ किछु बिसैर मग्न अछिए। ईहो चारू गोरे अपन-अपन दुख-सुख बिसरिये गेल। किए तँ सबहक नैहरक गाम ने भवनगर छी।

उत्सव समाप्त भेल। चारू अपन-अपन ठौर धड़त। रामनवमीक मेलाक परातक समय छी सभ एकठाम बैस अपन-अपन अतीत जिनगीक गप-सप्प करत। एक तँ ओहुना भवनगर गाम छीहे। सभ अपन अतीत-भविसक विचार केनिहार सभ छथिए, तँए वातावरणमे ओहन विचार बहिये रहल छल, तँए चारूक मन सेहो वातावरणमे मह-महा गेले छल। आन गाम जकाँ भवनगर थोड़े अछि जे बाल विद्यालयमे बच्चा सभकेँ सिखौल जाइए, 'बौआ सत् बाजब धरम छी', मुदा सिखौनिहार अपने भरि दिनमे केते निमाहै छैथ से आनकेँ बुझैक कोन खगता छै, मुदा अपनो नइ खगता छैन, सेहो बात तँ नहियेँ अछि।

चारू एकठाम भेल, जिनगीक ऐगला-पैछला सीमा सटि कऽ एकठाम भेल बाँकी तीस बरख की भेल तेकर ठेकान करैमे बड़ समय लागत तँए बिसरबे नीक। देखते छिऐ जे जे आदमी परिवार-ले भरि दिन रोडपर जिनगी बितबैए। पढ़ले-लिखलटा नहि, जिनगीक अनुभवी रहितो अपन बाल-बच्चाकेँ बुझबै-सुझबैले केते समय कियो पेब रहल अछि, सोचनीय विचार नहि अछि सेहो बात नहि अछि। धनक भरपाइ करैमे सभ जुटल छी, मुदा मनक भरपाइ करैमे किए फुटल छी, से ने बुझब..! खाएर...।

एकठाम होइते सुलेखा बाजल-

“भरि जिनगी बहिन जकाँ रहब, से मुदा निमहैत आबि रहल अछि!”

सुलेखापर सुनीता आँखि गुरड़ए लागल। मुदा सुचिता आँखियेक इशारासँ हँसि देलैन। सुचिताक आँखिक हँसीसँ सुनीता बिहुसैत बजली-

“बहिन, हँ से तँ अपना-अपना भागक करमे निमहिये गेल मुदा... ।”

‘मुदा’ सुनि सुशीला बाजल-

“दीदी, अखन सुलेखेक विचार मानि लियौन। कियो अपना भागक कर्मे जीबैए आकि केकरो आनक कर्मे। सभ अपन-अपन राम-धामकेँ सुमरैत समय बिताइये रहल अछि।”

किए सुनीता सुचिता दिस ताकैत आकि सुलेखा दिस अपन विचारकेँ अपना मनेमे गोड़ि आगू जिनगी देखए लागल।

सुलेखाक मोबाइल टनटनाएल। मोबाइलसँ गप-सप्प केला पछाइत सुलेखा बाजल-

“हमरा इमरजेंसी भऽ गेल, जाइ छी..!”

चारू गोरे फेर चारि दिस भऽ गेल। भवनगरक जे अखन धरिक गढ़ैन रहल अछि ओ बाल-बोधक भव सदृश्य रहल अछि, जेकरा सियनगर होइमे किछु-ने-किछु समय लगबे करत।

❑ शब्द संख्या : 2062, तिथि : 15 नवम्बर 2018

# जिनगीक अन्तिम फल

जेठ मासक अक्षय तृतीयाक तेसर पहरक अन्तिम घड़ी, असगरे दरबज्जापर बैसल दिन दिस देख रहल छेलौं। आजुक दिन तँ ऐतिहासिक दिन छी। सेहो ऐतिहासिक दिन कोनो राजा-रजबारक लड़ाइ-दंगाक नहि, धार्मिक अनुष्ठानक ऐतिहासिक उत्सवक दिन छी। आजुक दिन-बेरागनकेँ अखनो श्रद्धा-सुमन करब जरूरी अछिए। मुदा से करब की, ओ तँ अतीत भऽ गेल। समय छल जखन गाम-गाममे पोखरिक मोहारपर वा इनारक आँगनमे वा दरबज्जापर पनिसल्ला पर्व मनौल जाइ छल। फुलौल बदामो आ जलढ़ारोसँ उत्सर्जित करै छला जे बाबेक अमलदारीसँ देखैत एलौं हेन। मुदा पिताक अमलदारीमे ओ चलैत-चलैत रूकि गेल। धार्मिक रूपमे सेहो बदलाव आएल आ पाइनिक सेहो वाहुल्यता भेल। घरे-घर तँ नहि, मुदा गाम तँ जलमग्न भइये गेल अछि। भलेँ ओ एहेन रूपमे किए ने हुअए जे केतौ दस परिवारक बीच एकटा चापाकल अछि तँ केतौ एक्के परिवारमे दसटा चापाकल अछि। हम ई नइ कहए चाहै छी जे सरकारी लाट-घाट भेने एना भेल, एकटा-दूटा तँ लोक अपनो खर्चसँ कराइये नेने छैथ। बदामक तँ खेतीए इलाका छोड़ि देलक। छोड़बो वाध्यता छेलइ। ओना, बदाम केहेन अन्न छी से अन्न सभ एकठाम बैस अपनामे फरिछौत...।

बीसमी सदीक सातम-आठम दशकमे खैहन अन्न[8], ओना-दलिहनकेँ सेहो खैहनक रूपमे चलनसारि अछिए, ओ अछि उसनाक रूपमे, जे दलिहनकेँ उसनल रूप भेल। देशमे खैहनक अभाव स्वतंत्राक पूरबो छल आ पछातियो बहुत दिन धरि रहल। जइसँ आन-आन देशसँ अन्न आनए पड़ै छल। खैहन अन्नक पूर्तिक क्रान्ति भेल, जेकरा 'हरित क्रान्ति' कहै छिऐ। गाम-गाममे गहुमक खेती शुरू भेल, जइसँ देशक स्थिति आयातीसँ निरयाती बनि गेल। मुदा दलिहनक उपज नइ प्रभावित भेल अछि सेहो केना नइ कहल जाए। तेकर मुख्य कारण भेल जे रब्बी फसलक मौसम रहने गहुम दलिहनक चास मारलक। ओना, समयानुसार धर्मक विधानमे सेहो बदलाव आएल। मुदा आब ने जेठक अक्षय तृतीयाक ओ रूतबा रहल आ ने ओ मितबा रहल...।

मने-मन इतिहासक पन्ना उनटाइये रहल छेलौं कि मरनासन्न अवस्थामे हरिदास गोसाँइ पहुँचला। फरिक्केसँ हुनक चेहरा देख नजैर आगू बढ़ि रस्तापर जरल दुभिपर चलि गेल। जे दुभि बरसातक पानि पीला पछाइत रस्तापर पसैर अपन अमृतदान करैए। माने दुभिपर चलब, जीवन दायिनी छी। वएह अखन जरि-जरि धरतीपर सुखल पड़ल अछि। मुदा तँए कि ओ जीवनसँ हारि मानि गेल? नहि, जीवनसँ हारि नहि मानलक अछि ओकर जीवनीशक्ति ओकरा सिरक मध्य छीपल धरतीमे गड़ल छइ।

हरिदासक चेहरा देख मन एकाएक ओहन जीवनक रणभूमिमे पहुँच गेल जैठाम जीवन-मृत्युक बीच लड़ाइ चलैए। एक दिस जैठाम सूर्यक ताप धरतीसँ अकास धरि जरा रहल अछि तैठाम चारिमपनक हरिदास अपन प्राणक संग हड्डीटा लऽ कऽ पहुँचला अछि। जँ कहीं अहीठाम प्राण तियाग भऽ जानि तखन भगवानक घरमे के दण्डित हएत?

कनी फरिक्केमे रहैथ हरिदास कि चौकीपर सँ उठि आगू बढ़ि पहिने पएर छुबि प्रणाम केलिऐन। पएर छुबिते जेना हरिदासक चेतनामे

संजीवनी शक्तिक जोग भेलैन तहिना मन खिललैन। बजला-

“बौआ! आब तँ सहजे चल-चलाउ छी, मुदा तँए कि विश्वामित्र जकाँ कुत्ता केना खाएब। आइ अक्षय तृतीया छी, तँए मनमे भेल जे आइ तँ मिलन-दिन[9] छी, तँए एलौं हेन।”

दुनू बाँहि पकैड़ हरिदासकेँ चौकीपर बैसा आँगन गेलौं। मनमे भेल जे अखन जँ हुनका पुछिऐन जे किछु खाएब, से बेवकूफी हएत। पहिने किछु पीबैक ओरियान करब पछाइत जे से। अही खियालसँ आँगन पानि आनए गेलौं। ओना, आरो जे भेल से भेल मुदा पत्नीकेँ भगवान अपन भक्त बनाइये लेलैन अछि तँए पूजा-पाठक पण्डिताइन तँ भइये गेली अछि। आँगन पहुँचबे केलौं कि ओसारपर सँ चिल्होरि जकाँ पत्नी झपटली-

“आइ लोक पनिसल्ला लगौत आ हम सभ अँगनामे बैस ढील हेरै छी।”

पत्नीक बोली भलेँ जेहेन होनि मुदा वाणी नीक लगल। बजलौं-

“जहिना सभ देवताकेँ अपन-अपन गुण छैन तहिना ने अपन-अपन धरमो छैन, जइसँ सभ अपन-अपन फल बुनने छैथ। तहिना ने मनुखोक आइ छीहे।”

‘खग जाने खगक बोल’ लपैक कऽ पत्नी आगूक मुहरी छेकैत बजली-

“पुरना लोक सभ ने खोंइचा लगल फुलौल बदाम बँटै छेला, आब ओ जुग थोड़े रहल। आब तँ सभ किछुकेँ बनबैयोक आ रखैयोक नीक-नीक ओरियान भइये गेल अछि। एक नम्बर सतुआ रखने छी।”

मनमे भेल जे बड़का उपकार पत्नी केली- पाइनिक संग अन्नोक मिलानक जोगार भऽ गेल..! बजलौं-

“लाउ।”

पत्नीकेँ अपन धरम-करम मन पड़लैन आकि की, से ओ जानैथ मुदा अपन भार उतरैक उपाय तँ भइये गेल। बजली-

“आगू बढ़ि कऽ अहाँ दरबज्जापर चलू, हम सभ किछु नेने दरबज्जेपर अबै छी।”

ओना, अपनो मन मानलक जे भलेँ जुग-जमाना तँ खराप भइये गेल अछि जइसँ दोसतियारेओ निमहब कठिन भइये गेल अछि। देखै छी जे दोसतियारैयोमे बीख देल चाह पीआ, प्राण लऽ लइए। फेर भेल जे केतौ किछु होउ, अपन अपन करतब अछि, ओकरा पुरबैत चली। सोझामे जेना-जेना वस्तु-जातकेँ क्रियागत रूपमे हरिदास देखैत जेता तेना-तेना मनकेँ तृप्ति सेहो बढ़ैत जेतैन। मुदा लगले फेर भेल जे जँ कियो भुखल भूख मेटबैक आशामे दरबज्जापर आबैथ आ हुनकर प्राण जँ भूख-पियाससँ छन-छन जरैत रहैन, तैठाम खाली हाथ आगू बढ़ि कऽ जाएब उचित नहि। तँए पत्नीकेँ चरियबैत जोरसँ बजैक विचार केलौं जइसँ दरबज्जापर बैसल हरिदास गोसाँइ सेहो सुनैथ। बजलौं-

“अहाँ अनकर दुख-बेथा थोड़े बुझै छिऐ..!”

मुदा पत्नियोँ तँ काजेक ओरियानमे लगले छेली तँए कजियाइत बोले बजली-

“आन-आन स्त्रीगण जकाँ कि मोटेलासँ कोढ़ि छी, देह मोटगर भऽ गेल मुदा पाइनिक धार अखनो ओहने अछि जेहेन कोसी सन भयंकर धारो सुतियाएल-सुतियाएल पहाड़पर चलैए।”

पत्नीक मुँहक सुतियाएल बोल आ काजकेँ मिलबए लगलौं। काजक तँ अपन प्रक्रिया छै, जेकर जेते योग छै ओ तँ ओते समय मारबे करत। हँ, जँ ओकरा खण्डित रूमे सहयोग कएल जाए, तखन कम समय मरत। मुदा कोनो काजक सहयोग तँ तखने सम्भव अछि जखन सहयोगी सहयोग करै-जोकर होइथ। खाएर जे से। तैबीच पत्नी सभ किछु

ओरियान केने आगू-आगू बढ़ली, पाछू-पाछू अपनो बढ़ए लगलौं।

दरबज्जापर पहुँच चौकीपर पत्नी सभ वस्तु-जात–सतुआ, चीनी, नून, काटल नोबो, पीसल जमाइन इत्यादि–रखि हरिदास गोसाँइक पएर छुबि प्रणाम करैत पत्नी बजली-

“दण्डवत् गुरुदेव।”

जिनगीक धाँगल हरिदास, ‘गुरुदेव’ सुनि जहिना दुनू भाँइ जटायुकेँ सूर्य दिस अकासमे उड़ैत भेलैन तहिना अन्हार-सँ-इजोत दिस पहुँचैक जे धार अछि ओइ बीचमे बैस हरिदास गोसाँइ असिरवाद दैत बजला-

“अहिना पइत रक्षक जिनगी जीबैत रहू।”

हरिदास गोसाँइक असिरवाद पत्नी सुनली आकि नइ सुनि कनमटक भेली से तँ वएह जानैथ मुदा काजक प्रक्रिया देख अपनो भँसिया लगलौं। किए तँ जहिना हाथक चलैन रहैन जे आधा किलो अन्न-पानिक घोर बनबैमे केते सरंजाम कोन देल जाए, केना देल जाए तेकर नापैक हाथे जेना पत्नीक बनि गेल होनि तहिना बुझि पड़ल। अपन मन हारि कबूल करए लगल जे बेसी सतुआ रहने अपने तेते सतुआ दऽ दइ छिऐ जे मोट-भेने बक-बक गड़ो लगैए आ कहियोकाल नून बेसी देने पियासो बेसी लगबैए। एहेन जिनगीमे केता दिन भऽ चुकल अछि, मुदा अपन हारल के बजैए जे हमहीं बाजब। एते तँ आइ बुझि गेबे केलिऐ जे वस्तुक मात्राक जोगसँ नूनगरो मीठगर बनैए आ मीठगरो नोनगर बनिते अछि। जखन वस्तुक यएह गति-विधि अछि जे जहिना मीठगरसँ नूनगरो आ नूनगरकेँ मीठगरो बनैबते अछि, तखन किए ने मीठगर बना चली। ओना, जीवनमे सभ चाहैए तँ हमहूँ किए ने चाहब।

भूख-पियासक तृप्तिक पछाइत जखन हरिदास गोसाँइक मन तृप्ति भेलैन तखन संतृप्ति होइत बजला-

“बौआ, हम तँ आब चल-चलाउ भेलियह, जेते दिनक जेते दाना-

पानीक हकदार छी, सेहो पएब कि नहि। मुदा... ।”

बजैत-बजैत हरिदासक वाणी अपने रूकि गेलैन। जेना कोनो सुखल बलुआएल धारमे शुरूक बाढ़ि रूकि-रूकि बढ़ैए, तहिना भेलैन आकि साइकिलमे फीरबील छोड़ने चलैत-चलैत अपने चलब छोड़ि दइए तेना भेलैन, आकि की भेलैन से तँ हरिदास गोसाँइ जनता मुदा अपना बुझि पड़ल जे जरल पेटमे जे ऊपरसँ अन-पानि भरैत पड़लैन जइसँ भरिगर वायक भेकम ढील भऽ गेलैन तइसँ भरिसक वाणी रूकि गेलैन। तँए अबैत-जाइत बिजली-इजोतक कनी-मनी प्रतीक्षा करए पड़िते छइ। सएह भेल। हरिदास गोसाँइ बजला-

“बौआ, केकरा कहबै आ के सुनत। केकरा एते छुट्टी छै जे सुनत। भने आइ अक्षय तिरतिया सेहो छी, तँए मन होइए जे तूँ दुनू परानी एकठाम बैसह आ हम अपन जिनगीक इति-वृत्ति बाजि अपन पिण्ड ऐ दुनियासँ कटा लेब।”

ओना, हरिदास गोसाँइक मुहसँ पिण्ड कटाएब सुनि मन चौंकल। चौंकल ई जे पिण्ड कटनिहार तँ दोसर-तेसर छैथ, हम तँ नहि छी, तखन हमरासँ पिण्ड केना कटतैन? मुदा जहिना शब्दो अपन-अपन मन गढ़ैए तहिना ने मनो अपन-अपन शब्द गढ़िते अछि, मुदा शब्देक गढ़ैन ने मनोक गढ़ैन गढ़ैए। लगले मनमे संतोष जगल। संतोष ई जगल जे पिण्ड काटैक जेते लूरि हएत तेतबे ने पिण्डक पिण्डदान करब आकि अनको पिण्ड काटैक भार हमहीं उठा लेब। बजलौं-

“गोसाँइ साहैब, हम कोन जोकरक छी जे... ।”

‘कोन जोकरक’ सुनि हरिदास गोसाँइ चढ़ैत फूलक कली जकाँ मुस्कियेला। जेना अपन जिनगीक बीतल कथ्य मनसँ मेटा गेल होनि तहिना मुस्कीसँ बुझि पड़ल। जहिना धारमे फँसल धरताकेँ मोहारपर सँ कियो बाँहि पकैड़ ऊपर करैबला धरता भेट जाइ छै, जइसँ मेटाइत

जिनगीक नीरसता जीवंत जिनगीक आशा पकैड़ लइए, तहिना भरिसक हरिदासो गोसाँइकेँ भऽ रहल छेलैन। अपन जे जिनगीक इति-वृति कहए चाहै छला ओ विचारक तर पड़ि गेलैन आ ऊपर चलि एलैन, हमर बात।

मुस्की भरैत बजला-

"बौआ, तूँ जे कहलह 'कोन जोकरक छी' से एक तरहेँ सहिये कहलह। किए तँ सबहक हाथकेँ तेना बेवस्थाक विधान लूल्ह-नाँगर कऽ देने अछि जे ठीके मनुख कोनो-जोकरक नहि रहि गेल अछि।"

जे बात हरिदास गोसाँइ बाजि रहल छला से अपने अखन तक नइ बुझै छेलौं, तँए नव बुझि पड़ि रहल छल। अपने कि ऐ दुनियासँ कात छी आकि अही दुनियाँमे छी, तँए जहिना सभकेँ नव चीज पसिन पड़ै छै तहिना अपनो पड़ल। मनमे उठल जे कनी आगूक विचार बुझैले सह दिऐन। कहिऐन जे गोसाँइ काका नव चीजो तँ पुरान होइते छै, मुदा फेर लगले मनमे भेल जे टोकेसँ टोकाएब सेहो होइते अछि। किए तँ एकटा सेशन केसमे हमर गौंआँ फँसला। जइ दिन जमानत करबए विदा भेला। घरसँ निकैलते एकगोरे पुछि देलकैन' 'केतए जाइ छह।'

ओ कहि देलखिन 'सेशन केसक जमानत करबए।' ओ उपकारी लोक, भलेँ जेकर उपकार होइ दूमे जहिना एकक लाभ तहिना दोसर हानि, जा कऽ दोसर पार्टीक घरपर बेन परैस एला! ओ साम-दामसँ तैयार भऽ न्यायालयमे तेहेन-तेहेन नुक्ता उठा विरोध केलक जे जमानत नइ भेलइ। जखन कि ओ केस सोल्होअना मनक रचल छल, घटनाक नहि। तँए चुप्पे रहब नीक बुझलौं। गोसाँइ काका आगू बजला-

"बौआ, केतबो बेवस्थाक विधान बान्ह-छेक करत मुदा जे खोलि कऽ खेलेनिहार अछि, ओ ओकरा खोलि अपन ठेकान बनाइये लइए। एहेन शक्ति सिर्फ एक्के गोरेमे अछि से बात नहि अछि। सभमे अछि, जेकरा चीन्ह-जानि चेतैत चलैक अछि।"

गोसाँइ कक्काक विचार सुनि जेना मनमे सुआस पड़ए लगल तहिना होइत रहए। मुदा तैबीच प्रश्नक उत्तरक प्रकरण अन्त भऽ गेलैन आकि की, एकाएक हरिदास गोसाँइ चुप भऽ गेला। ओना, देहक हाव-भावसँ बुझि पड़ै छला जे ने भोज खेलहा भोजनिया जकाँ अफैरे रहला अछि आ ने हवटुटू साइकिल जकाँ उठाने हारि रहला अछि। गंगा-जमुना-सरस्वतीक बीचक संगममे ठाढ़ भेल किछु चाहि रहला अछि। मनमे ईहो हुअए जे अपन मन की चाहि रहलैन हेन आ हमर मन की चाहि रहल अछि। ओना, अखन धरिक जे अमर बान हरिदासक मुहसँ निकललैन ओइसँ जीवनी शक्ति आबिये रहल छल मुदा मुहसँ बकार नइ फुटल, खाली मनक विचार मुँहक हँसी होइत निकलए लगल। मुदा हरिदास की बुझलैन से तँ ओ जानैथ, अपना बुझि पड़ल जे जहिना बीतल जिनगीक ज्ञानी जखन जिनगीक अन्तिम बेलामे अज्ञानी बनए लगै छैथ, तहिना भरिसक हरिदासो काकाकेँ भऽ रहल छैन।

मने-मन गम्भीर होइत गहींर दिस भरिसक ताकि रहल छला। तकाइते मन पड़लैन अपन जे इति-वृति सुनबए चाहै छेलौं ओ तँ तर पड़ि गेल! मने-मन हरिदास काका जिनगीकेँ ठिकियौलैन। ठिकिया कऽ पहिल ठीका शुरू करैत बजला-

"बौआ, जखन हमर जन्म भेल, उभड़ल संस्कारमे भेल। जखन बच्चे रही तखन हमर जे आवाज (ध्वनि) रहए ओ ने पुरुखक कण्ठ जकाँ बण्ठ रहए आ ने मौगियाहिये मधुर मीठ जकाँ रहए।"

अपना मनमे उठल जे एकेटा गीत वा भजन, मौगियो गबैए आ पुरुखो गबैए, तँए ऐमे ध्वनिक कोन बात अछि। मुदा गोसाँइ कक्काक बोलीक लड़ीक-कड़ी नइ टुटैन, तँए बजलौं-

"से केना काका?"

हरिदास काका बजला-

“बौआ, अखन जे कहै छिअ से तर पड़ि जाएत आ ऊपरमे चलि औत स्वर लहरी। तँए मोटा-मोटी एकेटा बुझह जे मखमली स्वर अछि।”

ओना, हुनका मनमे ईहो नाचि रहल छेलैन जे जे अवाज कर्णप्रिय अछि ओकरा लोक नीक बुझैए। मुदा कर्णप्रिय की? जइसँ जीवनधार अनवरत अपन गतिये चलैत अपन गणतव्य तक पहुँच जाए से आकि सपेराक बीनस्वर? मुदा मनक बीच मनान्तर हुअ लगलैन। मनान्तरक कारण भेलैन जे एक तँ ओहुना जिनगीक ठेकान नइ अछि, तहूमे अप्पन तँ सहजे ओहन अछि जे एक तँ चारीमपनमे पहुँच गेल छी तैपर देहमे हड्डी छोड़ि एक्को चुटकी माउस नहि अछि, जँ तेतबे तक रहैत ते हड्डियो बले थोड़ेक आरो जोर करितौं मुदा तैसंग दुनियाँक कोन बात जे अपनो परिवार दुतकारिये रहल अछि। ओना, सौंसे दुनियोँ एक दिस भऽ जाएत तैयो तेकर चिन्ता नइ अछि मुदा तीन साल पहिने पत्नियोँ मरि गेली। जीवन-मृत्युक बीच एकटा घायलावस्था सेहो अछिए। तैकाल–माने–घायलावस्थामे धरतीपर खसलोकेँ एकघोंट पानि आ एकटा दवाइयक गोलीक खगता होइते अछि, सेहो ने अछि। अपन वौआएल मनक विचारकेँ समेट हरिदास काका बजला-

“बौआ, बरक गाछ जकाँ जे डारियो-पात आ सिरो-बरड़ूक जँ चर्च करए लगब तँ अपन मनक बात छुटि जाएत, तँए ताड़क गाछ जकाँ बुझह जे गाछो अपने अछि आ डारियो अपने अछि, तहिना कहै छिअ।”

हरिदास कक्काक सोझ-साझ बात सुनैमे नीक लागल कर्णप्रिय जरूर भेल, मुदा मन तुरुछल-क-तुरुछले रहि गेल। जखन हरिदास काका अपन जिनगी सुनबए चाहि रहला अछि आ बीचमे अपने नइ बुझब तखन सुनब की भेल। ई तँ भेल अपन मनक बात, मुदा हरिदास कक्काक मनमे क्षण-क्षण छनछनाइत जिनगीक पीड़ा नाचि रहल छेलैन जे ओ दुनियाँकेँ सुना गबाही राखए चाहै छला। बजलौं-

“काका! अपने केने गाइयोक घी, भैंसोक घी, बकरियोक घी आ भेंड़ीयोक घी सेहो होइते अछि, तँए पहिने अपने जे बाजए चाहै छी से बाजि जाउ, पछाइत जँ जीता-जिनगीक समय भेटत तँ बुझल जेतइ।”

हमर बात सुनि हरिदास काकाकेँ जेना मनमे सुआस पड़लैन तहिना आशान्वित भऽ बजला-

“जखन बच्चे रही, आवाज सुनि, गामक स्वर संधि बुझैबला, एक स्वरमे बजला जे तेहेन हरियाक अवाजक ध्वनि छै जे जे ओ चाहत सभ भेटतै।”

मुहसँ निकैल गेल-

“वाह.!”

हरिदास काकाकेँ आसमे बिसवास भेटने मन तिरपीत हुअ लगलैन। तिरपित होइत तृप्ति पाबैत बजला-

“बौआ, बीस बरख उमेर तकमे मनचोभिया नाचसँ लऽ कऽ मनभोगिया नाचक संग कीर्तन-भजन, फिल्मी गीत ओहिना गबाइ करए लगलौं जहिना रफीक मखमली आवाज छैन।”

फेर मुहसँ निकैल गेल-

“वाह.!”

जहिना वाह-वाही सुनि नेंगरो दौड़ए लगैए आ बौको गीत गाबए लगैए, तैठाम तँ हरिदास काका जीवनक धांगल लोक छथिये। जहिना चुल्हिपर चढ़ल वर्तनक पानि आगिक ताव पेबिते निच्चाँसँ ऊपर चढ़ए लगैए तहिना हीय खोलि हरिदास काका बजला-

“बौआ, समाजमे हम्मर-तोहर जन्म छोपोसँ छोपल अछोपमे भेल अछि से जनिते छहक। मुदा अपन गुण-धर्मसँ समाजमे बहुतो ओहन बाधाक (रोकाबटक) आड़ि-मेड़ टुटैत गेल आ आगू बढ़ि सबहक बीचमे

उठबो-बैसब, खाएबो-पीब आ गीतो-भजन जिनगीसँ जुड़ि गेल।"

फेर मुहसँ निकैल गेल-

"वाह.!"

आगू बढ़ैत हरिदास काका बजला-

"बीस बर्खक पछाइत जेना दुनियासँ विराग हुअ लगल, बिआहो नहियेँ भेल छल, बेरागी सबहक जेरमे जेरिया कबीर पंथक रस्ता पकैड़ लेलौं। पहिलुका जे विचारक गीत-भजन, नाच नचनियाँ छल ओ मनसँ हटए लगल आ कबीरक जन-सरोकार गीत-भजन सभ दिन-राति गबए लगलौं।"

फेर मुहसँ निकैल गेल-

"वाह.!"

'वाह' सुनि जेना हरिदास कक्काक विचारमे धक्का लगलैन तहिना मुँह बिजैक गेलैन। बजला-

"बीस बर्ख पूर्व तक, समाजक ताना-बाना नइ बुझै छेलौं, ओना! महात्माजी[10]क मुहेँ प्रवचनोमे आ भजनो सुनि-सीखि अपनो मुहेँ गबिते छेलौं। मुदा रसे-रसे जहिना समाजसँ (आन-आन सम्प्रदायक प्रभाव) टुटैत गेलौं तहिना जातियो बेरादरी टुटैत गेल। जहिना असगरे जन्म नेने छेलौं तहिना असगरे रहि गेलौं।"

अपनो आश्चर्य भेल। बजलौं-

"से केना?"

हरिदास काका बजला-

"बौआ, एकटा बात छुटि गेल, से पहिने कहि दइ छिअ। महात्माजी–जिनकासँ कण्ठी धारण केलौं–जोर दऽ कऽ बिआह करौलैन। सदिकाल कहै छला जे परिवारक बीच रहि साधु बनि साधु-सेवा करी।"

बजलौं-

“से तँ नीक कहै छला।”

हरिदास काका बजला-

“देखते छहक जे अपनो धिया-पुता भरिदिन मोबाइल सुनि तेना भथिया गेल अछि जे के केकर सुनत। मुदा तैयो कोनो गम नहि, मुदा जहियासँ पत्नी मुइली तहियासँ अपनो जिनगी खनियाइत देख रहल छी। जिनगीक अन्तिम फल की भेटल, से बुझिये ने पेब रहल छी।”

❑ शब्द संख्या : 2530, तिथि : 19 नवम्बर 2018

# चरणबाबूक टैक्सी

अपन ठीक समय (निर्धारित समय)पर कलानन्दबाबू पहुँच बेवस्थापककेँ कहलखिन-

“हमर हाजिरी दर्ज हुअए।”

एक तँ संजोगनाथ कलानन्दबाबूकेँ फरिक्केमे अबैत देख लजपानिसँ गड़ि रहल छला, तैपर कलानन्दबाबूक उपस्थिति सुनि आरो गड़ि गेला। जइसँ मुड़ी गोंति लेलैन मुदा कोनो काजक दौड़मे कुसंजोग भेने एहनो तँ भइये जाइ छइ। नमहर काजक दौड़ रहने नमहर परेशानियोँ होइिते छै आ छोट काजक दौड़मे छोट परेशानी होइ छइ। अपन मान-सम्मानकेँ नजैरमे रखैत संजोगनाथ बजला-

“काकाजी, अपने पहिल पुरुष छी जे समयसँ (निर्धारित समयसँ) दस मिनट पहिने पहुँचल छी। ई तँ साहित्यकार लोकनिक मंच छिऐन। एकदिस विद्वत प्रवर सुनौनिहार रहता, दोसर दिस श्रव्य-श्रोताजन्य रहता। तैठाम असगरे मंचपर बैसब नीक नहि। तँए अपने अतिथि गृहमे चलियौ।”

गामक उदय भेल। उदय माने साहित्यकार लोकनिक चारि सत्रक कार्यक्रमक आयोजन भेल अछि। पहिल ‘समाजक साहित्य की?’ जे

परिचर्चाक रूपमे एक सत्र राखल गेल अछि। दोसर सत्र- समाजक केहेन साहित्य हुअए तैपर कविक विचार कविता रूपमे रहत। तेसर सत्र- समाजक व्यतीत बेथासँ लऽ कऽ भविसक परतीतक कथापाठ आ ओकर समीचीन समीक्षा रहत। चारिम सत्रमे अछि समाजक मनोरंजनक दशा-दिशा आ नाच-गायन।

एतेक भारी कार्यक्रमक विचार ललितपुर गामबलाक मनमे एकाएक केना उठलैन? ई एकप्रश्न बनि अतिथि गृहमे चाह-पान केला पछाइत कलानन्दबाबूक मनमे हिलकोर जकाँ उठलैन। वातावरण[11] सेहो अनुकूल भइये गेल रहैन। ओना, मनमे एहेन शंका मुड़ियारी दइये रहल छेलैन जे गाम सन गाम नहि अछि तैठाम एहेन कार्यक्रम भऽ रहल अछि! गाम सन गामक माने भेल सभ तरहेँ विकसित गाम, तैठाम तेहेन जबरदस्त (भारी) कार्यक्रम राखल गेल अछि जे कहीं होत-सँ-होतांग ने भऽ जाए। फेर भेलैन जे अनेरे जे मनक शंकामे शंकालु भऽ जाइ, सेहो नीक नहि। मनुखेक बीचक कार्यक्रम छी, सभ मिलि-जुलि नीक-बेजाएकेँ अङ्गेजैत गीड़ैत-घोंटैत नीक जकाँ बिसरजन करब, तइमे केकर कोन जमा-जिगीर चलि जाएत।

ओना, कलानन्दबाबूकेँ अतिथि गृहमे एकटा अवोध बच्चाकेँ टहल-टिकोरा करैले दइये देने छेलैन जे देखैमे तँ जुआन सन बुझि पड़ैत अछि मुदा जुआनीक एकोटा लक्षण ओकरामे नइ आएल छइ। सोझे देह साढ़े तीन हाथक नापसँ भऽ जाए तइसँ जुआन भऽ गेलौं, सेहो बात नहियेँ अछि। जुआनी तँ समुद्रक पतलपानि पीने अबैए। से नइ रहइ। तँए अकाजको नहियेँ कहल जा सकैए। चाह-पान पहुँचबैक लूरि तँ रहबे करइ। अपन मनकेँ मनबै दुआरे कलानन्दबाबू ओकरा (सेवा करैबलाकेँ) पुछलखिन-

"बौआ, की नाम छी?"

ओ बाजल-

"बौका।"

'बौका' नामसँ जेते कलानन्दबाबू बौकाकेँ नहि परेखलैन तइसँ बेसी परेखलैन ओकर हाव-भावसँ। बजला-

"ताबे हमहूँ बहरामे टहलै छी।"

अपन भार हटैत बौका बाजल-

"बड़बढ़ियाँ।"

ओना, कलानन्दबाबू अपन जरूरतक सभ किछु अपना अधीनेमे माने संगेमे रखै छैथ, मुदा से छलैन खादी भण्डारक 'सर्वोदय छाप' झोरामे। अपन जरूरतक माने भेल जे जेतेकाल केतौ रहब ओइ बीचक जे अपन जरूरत अछि ओ। जँ जाड़क मास रहत तँ अपन ओढ़नाक संग जड़ाउ वस्त्र एक दिन-राति-ले। ओ खाइ-पीबैक कोनो वस्तु नहि रखै छैथ, तेकर कारण छैन जे अपन घरक भोजन केला पछाइत चौबीस घन्टा पानियोँसँ काज चला लइ छैथ। आजुक समयमे बोतलबला पानि जोर पकैड़ लेलक अछि मुदा से कलानन्दबाबूमे नहि छैन। अपन धारणा छैन। अपन धारणा ई छैन जे जइ गाम-समाजमे जाएब आ ओइठाम जँ ओकर इनार वा चापाकलक पानि नहि पीब तखन ओइ गाम-समाजक पाइनिक चलनसारि केना हएत? जाबे अनगौंआँ ओइ समाजक पानिकेँ पीब चलैनमे नइ आनता ताबे ओ गाम-समाज चलनसारिमे केना औत। अपने (कलानन्दबाबू) रंग-बिरंगक अमल (अम्मल) सेहो डेबनहि छैथ। तमाकुलो खाइ छैथ, पानो खाइ छैथ, चाहो पीबै छैथ आ सिगरेटो तँ पीबिते छैथ। कहब जे जखन एते अम्मल रखने छैथ, तखन तँ आधा दिनक समैयो आ परिवारक आधा खरचो अपने सिरे करै छैथ, तखन अपन जीवन क्रिया केना पुरबै छैथ आ परिवारक खरचा केना पुरबै छैथ? कलानन्दबाबूक अपन धारणा छैन। ओ बुझबो करै छैथ आ मानि कऽ

चलबो करै छैथ जे 'खाइते-पीबिते राम लला।' जखन जिनगीक कोनो निसचित भरोस नहि अछि, तखन तँ बेसी-सँ-बेसी ऐ दुनियाँकेँ चुसब नीक हएत नइ तँ दुनियेँ चुसि कऽ सिट्ठी बना देत। असलमे हुनका जे कियो कहबो करतैन से तेकरा ओ सोझे कहि दइ छथिन जे जखन दुनियाँमे मनुख बनि जन्म नेने छी, तखन पूर्ण स्वतंत्र छी। दुनियाँ खुजल अछि। ब्रह्माक सभसँ सर्वोत्तम निर्णय यएह छैन। अखनो देखै छी जे मिथिलाक आम, पान, मखानकेँ मिथिलेक सीमामे घेरा दऽ कऽ रखने छल ओ अमेरिकाक हिस्सामे ने किए देलैन। तहिना धरतीपर जेते जीब-जन्तुसँ लऽ कऽ गाछ-बिरीछ साग-पात, अन-पानिकेँ सेहो घेरा दऽ कऽ रखनहि छैथ। मुदा मनुखकेँ तँ छुटाहुल छोड़िये देने छैथ। झोरामे सभ किछु समेट-सेरिया कऽ रखि, दू जूम तमाकुल आ चुनौटीटा संगमे रखि कलानन्दबाबू बाहर निकलए लगला। अम्मलकेँ ओ एहेन संगी बुझै छैथ जे जिनगी भरि संग नइ छोड़ैए। जहिना ताड़ी पीआक आठ घन्टा पशीखानामे, आठ घन्टा मौज-मस्तीमे आ आठ घटना मस्तीसँ कुस्ती करैत सुखसँ जीवन बितबैत अछि। माने ओइसँ नमहर देवलोकमे कोन ऋृषीए-मुनि हेता आकि मर्त्यलोकमे कियो रणधीरे आकि जीवनक रणकौशले हेता।

अपन सभ किछु समेट-सेरिया कऽ रखि अतिथि गृहीक कोठरीसँ निकलैत कलानन्दबाबू बौकाकेँ कहलखिन-

"बौकू, हमर जिनगीक झोरा तोरा जिम्मा भेलह।"

जेना बौको पहिनहिसँ उत्तर (जबाव) सोचि नेने छल आकि प्रश्न (बात) सुनला पछाइत चेतनशक्ति दौड़ कऽ आबि विचारि देलकै से तँ बौका जानए। मुदा कलानन्दबाबूकेँ कहलकैन-

"मालिक, अहाँ निचेनसँ बाहर घुमू-फिरू जखन मन हएत तखन आएब। ताबे तक सभ किछु अपने (हमरे) मलिकानामे रहत। तँए कोनो

चिन्ता कथूक नहि करब।”

ओना, बौकाक जबाव सुनि कलानन्दबाबूक मन ठमकलैन। ठमकैक कारण भेलैन जे जइ बौकाकेँ लक्षण देख बुड़िबक बुझै छेलौं ओ केना चेष्टवक् जकाँ बाजल? लगले मन आगू दिस ठेलैत कलानन्दबाबूकेँ विचार देलकैन जे तत्काल बौकाक जीवनकेँ मोटर साइकिलक रिजर्व तेल जकाँ मनेमे रखि लइ छी, जखन घुमि-फिरि कऽ आएब तखनो तँ बौका रहबे करत, निचेनसँ गप-सप्प करब। कार्यक्रमक नौतहारियो सभ जखन पछुआएले छैथ, तखन घरबैयेक कोन दोख। गौंआँ सभ तँ अपन-अपन घर-अँगनामे कान ठाढ़ केनहि छैथ जे जखने कार्यक्रमक घोषणा लॉडस्पीकरसँ प्रसारित हएत, तखने सभ काज छोड़ि कऽ आबि जाएब। तैबीच जँ परिवारक ऐगला-पैछला काज सम्हारि लेब ओ भविस-ले नीके हएत।

ओसारक सीढ़ीपर सँ उतैरते कलानन्दबाबूक नजैर पुबारि भाग बैसल दू गोरेकेँ गप-सप्प करैत बैसलबलापर गेलैन। ओना, अपन सुनतक विचारे कलानन्दबाबूकेँ हुनका दुनू गोरेक बोलसँ कारकौआ सन बुझिमे अबैन, मुदा लगले मानियोँ लेबकेँ नीक नहि बुझि आगू बढ़ला। सीढ़ीसँ उतैरते रहैथ कि एकगोरेक मुहसँ निकलल-

“ऐ सबहक, माने साहित्यिक कार्यक्रमक कोन खगता छइ। अनेरे सभ बरदेबो करत आ गामक खरचो ढेरी हेतइ।”

दोसर गोरे, जेकरा कहलैन, ओ पमरियाक पलगाँइ जकाँ आकि महराइक संगी जकाँ हूँहकारी भरि देलक-

“ठीके कहै छिऐ।”

एहेन कहनिहारो आ सुनि कऽ माननिहारोक बोन गाममे पसरले अछि। ओना, ओहनकेँ अपन परिवारक चुल्ही-चौका सम्हारैसँ पलखैतिये कखन होइ छै, जे एहेन-एहेन गपक पाछू ढहनाएल घुरत। तखन तँ जेकरे

मुहेँ जे सुनलक, वएह ने ओकर सत् भेल। ओ थोड़े बुझैए जे सत् बजनिहार गाममे केते लोक अछि।

ओना, कलानन्दबाबूक मनमे आबि गेल छेलैन जे कौआक जेर जकाँ भलेँ छी, मुदा अही बीचमे काग-भुसुण्डी सेहो हेबे करत।

दुनू गोरेक बीच जाइक विचार कलानन्दबाबूक भइये गेल छेलैन। ओना, एते तँ बुधियारी छेलैन्हे जे बिनु जानल-पहचानल लोकक बीच दुनू पक्षकेँ शंका रहिते अछि। जे के छिया केहेन लोक छैथ। तहूमे सुनल-भोगल अंग्रेजी लड़ाइ (अंगरेजक संग) अछिए जे केना एक देशक लड़ाइमे गौंए-घरूआ, गौंआँ-घरूआ देशसेवककेँ फाँसीपर चढ़ौलक। जइ गाममे आन्दोलनकर्त्ता भेला ओइ गामक लोककेँ बेवहारिक अनुभव छैन आ जइ गामक लोक हाथ-पर-हाथ रखि बैसल छल ओकरो देशक आजादीक सुख नइ भेटलै सेहो बात तँ नहियेँ अछि। तैसंग आन्दोलनकेँ विरोध करैबलाकेँ सेहो आजादी भेटबे कएल।

विचारैत-विचारैत कलानन्दबाबूक मनमे उठलैन, किए ने तमाकुल चुनबैत आगू बढ़ी, अनेरे ने कियो ने कियो तमाकू खाइक[12] बहन्ने टोकबे करता। किए तँ बुझले अछि जे तेते ने लोक तमाकुल मांगि कऽ खाइबला अपना मिथिलामे अछि जे दुनियाँक लोक भिखमंगा करार कऽ देलक। दुनियाँकेँ करार केने हम सभ केना मानि लेब। भाय, जखन हजार रूपैआक किताब मांगि कऽ लोक पढ़ैए आ ओ भीख मांगब नहि भेल तखन एको पाइसँ कम भैल्यूक (दामक) एक जूम तमाकुल भेल, तइ मंगलासँ जे दुनियाँ भीखमंगा बना कहत, ते कहह। कियो खाइए आ कियो अपन मुँह दुइर करैए। कियो अपन मुखपानकेँ मीठ मानि जँ मीठपानकेँ खसपाने मानत तँ मानैत रहह।

आगू बढ़िते एक गोरे आगूए-सँ टोकलकैन-

“अबियौ-अबियौ पंडीजी, अहोभाग्य हमरा सबहक! जे अपने

सन-सन महापुरुषक पदार्पण गाममे भेने हमहूँ सभ दर्शन पेलौं।"

अपन आगत-भागत सुनि कलानन्दबाबूक मन मोमबत बनि गेलैन। हाथमे तमाकुल चुनबै छला, केना कहितथिन जे अहाँक गाममे एक जूम तमाकुलो खुएनिहार नहि छैथ, अपने आनल तमाकुल खाए पड़ैए। मुदा अपन मनक विचारक बीच तँ फँसिये गेल छला, जे कियो ओरियान (तमाकुलक) करता आ हम अदहन ढारि चुल्हिपर चढ़ा पानि खौला नेने छी, तखन आगूसँ आग्रह केना नै करबैन। ओहुना लोक बुझिते छैथ जे 'पहुनमा खर्च केते दिन तकक अछि ओ तँ पाहुन-पाहुनपर निर्भर करिते अछि।' जहिना जमाए एक पनरहिया तहिना जमाइक पिता एकदिना।

ओना, आने जकाँ कलानन्द बाबू सेहो केतौ जाइकाल वा गाम अबैयेकाल जँ पाने वा तमाकुले खाइक मन रस्तामे भेलैन तँ झोरा कन्हामे लटका हाथसँ पानो लगा खा लइ छैथ आ तमाकुलो चुना। मुदा जखन कन्हामे लटकबैबला झोरा-झंटीसँ अलग रहला तखन केतौ बैस कऽ जिराइयो लइ छैथ आ अपन अमलो डेब लइ छैथ। जइसँ एते गुण तँ आबिये गेल छैन जे आनो-आन अपनासँ अलग फुटियैबते छैन। अनका जकाँ कलानन्दबाबूमे एहेन दुरगुण (दुरगुन) नहियेँ छैन जे मने-मन वा लोककेँ बुझाइयो-सुझा कऽ कियो अपन संकल्पित विचार करै छैथ आ ऐपर[13] अमल करिते ने छैथ! से बात कलानन्दबाबूमे नहि छैन।

तरहत्थी परहक तमाकुलकेँ चारू आँगुरसँ दाबि कलानन्दबाबू बजला-

"हम पंडीजी नइ छी। अहींक पड़ोसी गामक समाज छी। पता लागल जे ललितपुरमे साहित्यिक कार्यक्रमक आयोजन भेल अछि सएह देखैक खियालसँ एलौं हेन।"

ओ (माने गौंआँ) कहि बैसलैन-

"पड़ोसी गामक छी तखन चिन्है नइ छी!"

कलानन्दबाबूक मनमे ठहकलैन जे गौंआँ[14] जे बजला अछि ओ समीचीन तँ अछिए। जँ गामक इर्द-गिर्द गामक चीन्ह-पहचीनक कारोबार नइ रहत तखन समाजिकता की भेल। एक हँसू आ एक कानू! ओना, समाजिकतोमे घटी-बढ़ी होइते अछिए। मुदा से अखन नहि। अपन पक्षकें मजबूती दैत कलानन्दबाबू बजला-

"ऐठामसँ तीन कोसपर हमर गाम कलितपुर छी।"

बेवहारकें आगू बढ़बैक विचारसँ कलानन्दबाबू आँखि उठा गौंआँ पर देलैन। नजैर पड़िते बुझि पड़लैन जे मिसियो भरि मलिनपन गौंआँमे नहि छैन। गमैया लोक तँ गमैया बोलीक संग गमैया अलंकारक खानक बीच रहिते छैथ। तैबीच अपन गामक नाम 'ललितपुर' आ 'कलितपुर'कें एकठाम सुनैत एकगोरे बजला-

"एँह! ललितपुर आ कलितपुरमे अन्तरे की अछि। जेहने ललितपुर तेहने ने कलितोपुर भेल। सीता-गीतामे अन्तरे की अछि। एतबे ने अछि जे ललितपुरक पहिल अक्षर 'य-र-ल-ब'क तेसर भेल आ 'क-ख'मे 'क' पहिल भेल, सएह ने?"

गौंआँक बात सुनि कलानन्दबाबूक मन चकभौर लेलकैन। चकभौरक बीच नजैर गेलैन गामक बड़प्पनपर। पहिल अक्षर आ तेसर अक्षर। मुदा लगले जखन गाम दिस (ललितपुर) नजैर उठा देखैथ तँ चकचक देखाए दैन जे कलात्मक दृष्टिसँ गाम नमरक तर की कहबै जे नमरक निशानोसँ निच्चाँ छैन। मुदा से रक्का-टोकी केने तँ नहि हएत। ओकरा जखन बीह फारि बिहिया कऽ देखब तखने बुझि पाएब...।

कार्यक्रमकें धियानमे रखि कलानन्दबाबू निवेदित होइत बजला-

"अपनेटा ले तमाकुल चुनबै छेलौं, तइमे तीन गोरे भऽ गेलौं। ई[15] अहाँ लिअ पछाइत हम दू जूम चुना लइ छी।"

चटसारपर बैसनिहार लोक ओ गौंआँ छलाहे, परोछमे जे करैत होथि मुदा सोझामे केना अपनाकेँ उन्नैस बनौता। बजला-

"पंडीजी, एहनो केतौ उचित होइ। एक तँ अहाँ अनगौंआँ छी, अपना-ले तमाकुल चुनेलौं आ से हम आयोजक भऽ कऽ खा ली, ई उचित भेल?"

गौंआँक विचार सुनि कलानन्दबाबूक मन ओझराए लगलैन। ओझराइक कारण भेलैन, एक पक्षमे गौंआँकेँ ठाढ़ होएब। मुदा अखन धरिक जे अपन बेवहार रहलैन ओ केतौ ढील-ढाल नइ बुझि पड़लैन। जेबीसँ तमाकुलो आ चुनक चुनौटियो निकालि आगूमे बढ़बैत बजला-

"लिअ, अढ़ाइ दिनक खर्च तँ अपनो चुकबैइयेक अछि।"

तमाकुल खेला पछाइत कलानन्दबाबूक मनमे भेलैन जे गामक पीछराह लोकसँ पल्ला पड़ल अछि। बजला-

"अहाँ करै की छी?"

ओ (गौंआँ) बजला-

"समाज सेवा।"

'समाज सेवा' सुनि कलानन्दबाबू खुशीक धारमे बहि-भँसिया लगला। भँसियाइक कारण भेलैन जे जखने मनुख अपनासँ आगू बढ़ि सेवा दान करत तखने समाजक कल्याण निसचित हेतइ। ओना, बाल-बोध जकाँ कलानन्दबाबू गौंआँक भावक भावनामे भँसिया लगला मुदा बुद्धिमान जकाँ ओइ भावनाक प्रवाहकेँ रोकैत बजला-

"समाज सेवाक कि आदि-अन्त अछि, सौंसे समाजक लोक जँ लगि जाएब तइयो अन्त नइ लेत। अहाँ की करै छी?"

ओ (गौंआँ) बजला-

"ओझाइ करै छी।"

ओना, 'ओझाइ' सुनि कलानन्दबाबू कनी धकमकेला, मुदा लगले अपन गामक एकटा 'ओझा' मन पड़लैन जे पचीस-तीस बर्ख पहिने मरि गेल छला। तइसँ बुझल छेलैन जे 'ओझाइ-भगताइ' गाममे केहेन अछि। बजला-

"बाह, तखन तँ अहाँ गामक इज्जत छी। अहीं सन-सन लोकसँ ने गामक इज्जत बनितो आबि रहल अछि आ आगुओ बनैत रहत..!"

तही बीच हल्ला भेल जे गाड़ी आबि गेल।

गामक परिवेशमे आर्थिक नव विकास भेने सार्वजनिक आयोजनमे इच्छा समाजक जगबे कएल अछि, तैठाम खाइ-पीबै-रहै-सहैक भरपूर बेवस्था भइये जाइए। सौंसे गौंआँ मिलि कार्यक्रम केने छला। गामक नीक सहयोग भेने जहिना कार्यक्रमक पण्डाल सजल छल तहिना खेबा-पीबाक सेहो नीक बेवस्था छेलैहे। अतिथि गृहक मुँहपर आबि कलानन्दबाबू ठाढ़ भऽ गेल छला।

पहिल सत्रक जे समय निर्धारित छल ओइसँ बीस मिनट लेट गाड़ी पहुँचल छल। पण्डालमे दर्शकक अभाव देख जेते विद्वतगण आएल रहैथ, सभ झुझुएला। झुझुआएबो उचिते छेलैन। अपने तँ लेट-फेट चलैक अभियासे अछि मुदा आगत-स्वागत करैबला गौंआँ किए ने अखन तक पहुँचला अछि। आकि आबि कऽ वापस घुमि गेला।

एक तँ गाड़ीसँ देहक झमार, तैपर रस्तामे गाड़ीकेँ खराब भेने मनक झमार सेहो सभकेँ भइये गेल छेलैन, तँए जाबे गौंआँ-घरूआ एकत्रित हेता तैबीच चाह-पान-जलखैक बेरा पार करब नीक हएत। लगले लॉडस्पीकरसँ गौंआँकेँ जानकारी भेटल जे अहीं सबहक दुआरे कार्यक्रम शुरू नहि भेल अछि।

अतिथि गृहिक मुँहपर ठाढ़ कलानन्दबाबूकेँ देख राधारमणबाबू सकुचेला। सकुचाइक कारण भेलैन जे कलानन्देबाबूक गौंआँ

राधारमणबाबू सेहो। बच्चेसँ दुनू पढ़ैमे लगनशील छलाहे। दुनू नीक रचनाकार छैथ जेकर गवाह रचना स्वयं छैन्हे। कलानन्दबाबू अपन गाममे रहि दुनियाँ दिस देखि रहल छैथ आ राधारमणबाबू गामसँ हटि दरभंगा शहर धऽ लेलैन।

सोझा-सोझी होइते जेना कलानन्दबाबूक सीना पुष्ट रहैन तेना राधारमणबाबूकेँ नइ रहलैन। पसीज गेलैन। पसीजैक कारण भेलैन जे एक-उमेरिया रहितो कलानन्दबाबू केतेक कलात्मक अखनो बनल छैथ जे समाजकेँ सिरपर रखि चलि रहला अछि आ अपने..! कलानन्दबाबूक आँखि दिस देखते राधारमण बाबूकेँ मन पड़ि गेलैन अपन बालपन। जखन दुनू गोरे गामसँ पाँच कोस लोहना विद्यालय पढ़ए जाइ छेलौं। तेकर कारण छल जे गामेक एकगोरे शिक्षक (विद्यालयक) छला, हुनके लाटे। डिबिया, लालटेनमे पढ़ै छेलौं। अपन बसक बात छल। डिबियाक तेलो घरमे रहै छल आ डिबियो-सलाइ, रखैबला वौस छल अपन अधीनमे छल। मुदा गैसलाइट आ बिजली तँ से नहि अछि। तहिना गाड़ी-सवारीक हाथमे अपन कर्तव्य (मान-सम्मान) दऽ दी ई केते उचित भेल। गुंजाइस ईहो छल जे जेत्तै गाड़ी भंगठल तेत्तै दोसर गाड़ी पकैड़ लइतौं मुदा सेहो ने केलौं।

डेढ़ घन्टा बिलमसँ कार्यक्रम शुरू भेल, जइसँ जहिना श्रोताक जिज्ञासामे कमी एलैन तहिना वक्तोक विचारमे आबिये गेल छेलैन। मुदा सफल रूपे तीनू कार्यक्रम भेल। खूब जमल, जाबे धरि बाहरक अतिथिगण छला ताबे तक गौंओ-घरूआ अपन दायित्व बुझि मरदे-स्त्रीगणे थहा-थही करैत रहला।

कार्यक्रममे जे अभाव भेल, मुदा कविता कर्याक्रमक प्रभाव बेसी पड़ल। सभ रंगक कविता, सभ रंग लोक, अपन-अपन कान्ही मिला-मिला, दुनियाँक मेलामे अपन-अपन मेल-मिलाप करैत अपन-अपन मेल जगौता।

विद्वतजनकेँ अरियाइत जखन दुनू हाथ जोड़ि गौंआँ अपन नीक-बेजाए-क माफी मांगि चलचलौ भेला कि कलानन्दबाबूकेँ ओ गौंआँ–जिनका संग तमाकुल खेने छला–दुनू हाथ जोड़ि कहलकैन-

"पंडीजी, अपनेक सवारी?"

ठहाका मारि कलानन्दबाबू बजला-

"अपन चरणबाबूक टैक्सी।"

❑ शब्द संख्या : 2381, तिथि : 24 नवम्बर 2018

# पुस्तकालय

देशक आजादी, माने 1947 ई. देश स्वतंत्र भेला पछाइत आने गाम जकाँ विचारपुर गामक नवयुवकमे पुस्तकालय बनेबाक विचार जगलैन। देशक स्वतंत्रताक आन्दोलनक बीच दू तरहक विचार धारा लोकक मनमे जगिये चुकल छेलैन। पहिल अंगरेज बहादुरकेँ देशसँ बाहर करब आ दोसर अपन गाम-समाजसँ लऽ कऽ देशकेँ आगू बढ़ाएब।

ओना, विचारपुर गामक नवयुवकक मनमे आने गाम जकाँ पुस्तकालय बनेबाक विचार जगलैन। मुदा एहेन विचार अपना मनमे भलेँ रहल हौन मुदा ओ सुषुप्तावस्थामे छेलैन। साठिक दशक अबैत-अबैत केतेको गाममे पुस्तकालय बनियोँ गेल छल आ केते गाममे बनियोँ रहल छल। गामक पढ़ल-लिखल विद्वतजनमे एहेन धारणा बहुत दिन पहिनेसँ छेलैन मुदा ओ सार्वजनिक रूपमे नहि बेकतीगत रूपमे। जेकर जीवंत उदारहरण रहल अछि जे केतेको एहेन लोक छैथ जिनका अपन पुस्तकालय माने बेकतीगतमे दस-दस, बीस-बीस हजार, हस्तलिखितसँ प्रिन्ट कएल माने छापाखानामे छपल, किताब छेलैन्हे। बेकतीगत पुस्तकालय, बनबैक पाछू बेकतीगत शिक्षा सेहो छल। मुदा जे छेलैन एते तँ मनमे छेलैन्हे जे किताबक संग्रह जाबे धरि नहि हएत ताबे लोक पढ़त केना।

विचारपुरमे मात्र एक गोरे सुशील कौलेजमे पढ़ै छैथ पनरह-बीस गोरे हाइ स्कूलमे। गाममे लोअर-प्राइमरी स्कूल रहने साक्षरक संख्या साएसँ ऊपर छेलैहे। ओना, संस्कृत माध्यमसँ सात गोरे एहेन छैथ जे व्याकरण, ज्योतिष, साहित्य आ दर्शनशास्त्रक प्रमुख ज्ञाता छैथ। सातो गोरे संस्कृत महाविद्यालयमे शिक्षण कार्य करै छैथ। गाममे महाविद्यालय नइ रहने दूर-दूरक महाविद्यालयमे छैथ। गामसँ आवाजाही कम्मे-काल रहै छैन से पाहुन-परकक रूपमे।

विचारपुरक नवयुवकमे पुस्तकालय बनेबाक विचार जगेबाक पाछू गामक स्कूलक शिक्षकक प्रेरणा रहलैन। ओना, ओहो शिक्षक माने रतिकान्त बाबू, जहिना पढ़बै-लिखबैमे धियान रखै छला तहिना पढ़ै-लिखैक परिवेश बनबैक पाछू सेहो ओहिना धियान दइ छेला। ओना, रतिकान्त बाबूक प्रति समाजमे समान आदर वा धारणा नहियेँ छेलैन, जे ओ अपने बुझै छला वा नहि मुदा कहियो ने एहेन बाते बजलाह आ ने कहियो तेकर परवाहे केलैन। जेकर फलाफल मनमे ओहिना मानसरोवरक हंस जकाँ अखनो हेलिये रहल छैन। अनादरक (रतिकान्त बाबूक) अखनो ओहन हवा बहिये रहल अछि जे जे मिड्लो पास नहि, से शिक्षक केना भेल? जखन हवे बहै छल आ रतिकान्त बाबूक कानमे नहि लगितैन सेहो केना नकारल जाए। मुदा रतिकान्त बाबूकेँ अपन मन सदिकाल बिसवासक प्रेरणा दइ छेलैन जे जखन एम.ए. पास कौलेजक प्रोफेसर बनि कियो एम.ए. बलाकेँ पढ़बैक हकदार छैथ तखन जँ हम मिड्ल पास नहियोँ छी तँए कि पढ़ेबतो ते छिऐ लोअरे प्राइमरी तककेँ। जेते ओकरा सबहक (विद्यार्थी सबहक) कोर्सक विषय छै ओ अपनो पढ़ैत-पढ़ैत आ ओकरो सभकेँ पढ़बैत-पढ़बैत कण्ठाग्र (कण्ठस्त) भइये गेल अछि, किताबोक काज नइ पड़ैए, तखन जँ कियो शिक्षक बनैक अधिकारी नइ मानै छैथ तँ ओ अपन मुँह दुइर करै छैथ।

मिड्ल पास नइ करैक कारण रतिकान्त बाबूकेँ भेलैन जे अंगरेजी

जमाना छल, तहूमे आन्दोलनक (देशक आजादीक) एहेन रूप बनि गेल छल जे लोक प्राणपनसँ आन्दोलनक पाछू लगि गेल छला। रतिकान्त बाबू मिड्‌ल स्कूलमे सातमामे पढ़ै छला। आर्थिक मजबूरीमे सातमामे छह मास पढ़ला पछाइत, विद्यालय छोड़ए पड़लैन। आजुक परिवेशमे मिड्‌ल स्कूल कि हाइयो स्कूलमे फीस नइ लगैए। ओइ समय (जहिया रतिकान्त बाबू) सातमामे पढ़ै छला तहिया छठेसँ आढ़ाइ रूपैआ महिना फीस लगै छल। स्कूल छोड़ला पछाइत रतिकान्त बाबू नोकरीक ताकमे घुमए लगला। मुदा अपन-अपन सभकेँ मानसिकता होइते अछि। ओइ मानसिकताक आधारपर जहिना विचारपुरमे लोअर प्राइमरी स्कूल समाजसँ समाजमे खोलबा अपने शिक्षा दान करए तैयार भेला। तहिना आनो गाममे, जेते जेहेन सम्बन्ध छेलैन, माने सम्बन्ध दूरोक होइए आ लगोक, तेतए तइ रूपमे काज सेहो करए लगला।

समय बीतल, विचारपुरक स्कूलमे जे शिक्षण कार्य रतिकान्त बाबू शुरू केलैन ओ अखनो करिते छैथ मुदा आनो-आन गाममे जाइयो कऽ आ राइयो-विचारसँ अपन जिनगीक सातम पुस्तकालयक प्रेरणा विचारपुरक नवयुवककेँ दइत रहलखिन। छहटा पुस्तकालय छअ गाममे बनबा चुकल छला। ओना, गाममे लोअर प्राइमरी स्कूल रहने शिक्षाक किछु विकास बालबोधक रूपमे भेने जगल छल तैसंग ईहो तँ भेबे कएल जे वएह बाल-बाध, धीरे-धीरे सियान-चेष्टगर भेने, विचारोमे परिपक्वता आबिये गेल छेलइ। 1930 ई.सँ 1945 ई. तकक बीच लोकक जीवन दूभर भइये गेल छल तैठाम पुस्तकालय सन संस्था बनाएब कठिन भइये गेल छल। आजादीक आन्दोलनमे सेहो मोड़ आएल। मोड़ ई आएल जे अखन तकक धारणामे अंग्रेजीकेँ भगाएब छल, जइसँ पराधीनताक (गुलामीक) अन्तीम कड़ीकेँ तोड़ब छल। हजारो बर्खक गुलामीक पैछला इतिहासक भुक्तभोगी देशवासी छेलाहे। तइमे बकास्त जमीनक (आर्थिक आधारक रूपमे) लड़ाइ सेहो जुड़ल। ओना, वैचारिक रूपमे

आरो केते आर्थिक मुद्दा उठल तइमे वकास्त जमीनक आन्दोलनक जबर्दस्त प्रभाव गाम-गाममे पड़ल। जनगणक मन:स्थितिमे चेतनता जगल। जइसँ चेतन्ताक प्रवाह जीवनता (जीवंतता) दिस बढ़बे कएल।

ओना, सभ गाममे सामाजिक रूपमे (सार्वजनिक जमीन-भूमि) किछु-ने-किछु जमीन रहबे कएल अछि। ओ रहल अछि धार्मिक स्थानक नामपर, विद्यालयक नामपर आ आनो-आनक नामपर सार्वजनिक रूपमे (जमीन) छल ओइमे समय-समयपर बढ़ोत्तरी सेहो होइत रहल अछि। से होइत रहल अछि धर्मक नामपर। मनुखक प्रवृत्तिमे इष्ट-अनिष्ट दुनूक बास अछिए।

गाम-गाममे पसरल जमीन्दारो आ आनो-आन पाहीपट्टी माने बाहरी लोक पसरले छल, तैबीच देशो स्वतंत्र भेल आ भूदानी आन्दोलन सेहो जगल। जमीनक छबम् हिस्सा दानक मांग उठल। गाम-गाममे फौज तैयार भेल। छह-पाँच जे भेल से भेल मुदा एते तँ लोकक मनमे आबिये गेल जे जमीन्दार सभ माने बेसी जमीनबला सभ, झूठ-फुइसिक कागज-पत्तर बना अपने सबहक बाप-दादाक जमीन नीलामो केने अछि आ ओकरा बेच-बेच दोसर-तेसर जमीन्दारो ठाढ़ केने अछि तैसंग ईहो विचार आएल जे पनरह साए बीघाक गाममे चारि साए बीघा सौंसे गौंआँक बीच अछि आ एगारह साए बीघा हुनके सबहक माने जमीनदारे सबहक बीच अछि। ओहुना छबम हिस्सा दान देने करीब दू साए बीघा ओहिना हुनका सबहक जमीनमे गौंआँक भेल। नवयुवक सबहक मनमे नव उत्साह जगिये चुकल छल। डेढ़ बीघाक एकटा गाछीक (सरही आमक) बीचमे ऐ खियालसँ पुस्तकालयक घर ठाढ़ केलक जे जमीन बहरबैयेक छी तँए गौंआँक बीच कोनो विभेद-विवाद नइ हएत। पुस्तकालयो बनत आ धिया-पुता सभकेँ खेलैक फील्डो बनि जेतइ आ स्कूलक आगूमे अछिए, जँ स्कूलोक तकदीर जगतैन तँ नम्हरो स्कूल बनबे करत, तैयो तँ जमीने चाही, भने ई सभ जमीन सार्वजनिक भऽ जाएत।

ओना, पुस्तकालय, जे कट्ठो भरि जमीनसँ कममे बनब सम्भव अछि, तैठाम जमीनेक मुद्दा समाजमे फँसि गेल। टटके लठैतक हाथसँ विरोधी पुस्तकालयक घर उठा कऽ लऽ गेल छल। ई सभ भेल गौंआँक बीचमे। जमीनबलाक घर बीस किलोमीटर दूर आन गाममे छैन।

नवयुवक सुशील जे अखन धरि पढ़िये रहल छल माने कौलेजमे पढ़ै छल, समाजिक सत्ता वा देशसत्ताक बात नहि बुझै छल। किताबी जानकारी तँ थोड़-थाड़ छेलै मुदा वास्तविक (वास्तविकक माने भेल शासन सूत्रक धारा) बात नहि बुझै छल। तहूमे बेकतीगत काज जँ रहितै तँ दोसर बात, सार्वजनिक रूपमे पुस्तकालय छल तँए ओइ दिस ओकर धियान नहि पहुँच पेलै जेकर जरूरत छेलइ। पुस्तकालयक घर उठा कऽ ओ सभ लइये गेल छल। बनौल पुस्तकालयक घरकेँ उठैत देख सुशीलक मनमे आगिक लहैर उठिये गेल छल। पागल जकाँ गाममे घुमि-घुमि सभकेँ कहै- 'महा अनुचित गाममे भेल अछि।'

वातावरणमे तनावक स्थिति पैदा लऽ लेलक। सुशीलक संग जेते गोरे पुस्तकालयक घर बनबैमे, संग-साथ देने रहैन, नवतुरिया सभ छल, जेकरा ऊपर गार्जन सबहक तेते दबाव पड़ल जे किछु गोरे मुरदा जकाँ मरि गेल, किछु गोरे गामसँ पड़ा गेल आ किछु गोरे सुशीलक विचारक संग रहल। गामक वातावरणमे गामक जेते गलत तत्त्व छल सभ एकत्रित भऽ गेल। गामक अधिकांश लोक समाजिक काजसँ देह छीपनहि रहैए, ऐठाम तँ सहजे झंझट ठाढ़ भऽ गेल अछि।

आठ बजे भिनसुरका समय, साइकिलसँ सुशील झंझारपुर बजार विदा भेल। गामक बाहर पाँतरमे सुशीलकेँ किछु गोरे, जे गामेक छल, पकैड़ कऽ खूब मारि मारबो केलक आ उठा-उठा पटकबो केलक। अधमरू बना सुशीलकेँ रस्तापर छोड़ि साइकिल लऽ कऽ ओ सभ चलि गेल।

चालू रस्ता रहने आधा घन्टाक पछाइत सुशीलक माइरिक जानकारी परिवारमे भेल। समाजमे मारि खाएल सुशील कानून दिस बढ़ैक विचार केलक। तइ बीच थानासँ दरोगा आबि उनटे सुशीलक खिलाफ वातावरण बना देलक। केते लोक डरे (पुलिसक डरे) गामसँ पड़ा गेल। पड़ाइक कारण परिवेशो समाजमे अंगरेज बहादुर स्वतंत्रताक आन्दोलनमे बनाइये चुकल छल। केना गोली दगै छल, केना बन्दूकक कुन्दासँ आन्दोलनीकेँ (देशभक्तकेँ) थोकचै छल आ केना जूतासँ जुतियबै छल। से सभकेँ बुझल-गमल छेलैहे। देशकेँ अजादी भेटल मुदा बेवस्था रूप तँ वएह रहल माने शासन सत्ताक बेवस्था, जे अजादीसँ पूर्व छल।

अपन घटनाक केस लिखबए सुशील, दू गोरेकेँ संग केने थाना पहुँचल। सुशील अपन बात दरोगाकेँ कहिये रहल छेलैन कि बिच्चेमे दरोगा गरियाएब शुरू केलैन। तत्काल घटनाकेँ माने सुशीलक मारिकेँ दाबि वातावरणकेँ शान्त करैत दरोगा सभ मिलि, माने जमीन्दार, गामक गलत तत्त्व आ थाना षडयंत्र रचब शुरू केलक। सुशीलो पाछू हटैले तैयार नहि भेल। जेना-जेना घटना होइत गेल तेना-तेना ओ सभकेँ बुझबए लगल। जइसँ किछु गोरे सुशीलक संग कटै-मरैले तैयार भऽ गेल।

किछु दिनक पछाइत गामक चौकपर–चौक कि साधारण तीन-चारिटा दोकान, मुदा चाहक दोकान दूटा। बाते-बाती (बाता-बाती माने पुस्तकालयक घरक मादे, दुनू पक्षक माने पुस्तकालयक घर बनौनिहार सुशीलक संग सुशीलक संगी आ पुस्तकालय तोड़निहार कमलकान्तो आ कमलकान्तक संगियोक बीच) दुनू पार्टीक बीचसँ मारा-मारी भऽ गेल। पटका-पटकी सेहो भेल। गामोक लोककेँ आश्चर्य लगल जे सुशीलमे केते ताकत (शक्ति) अछि। चारिये गोरे सुशील कमलकान्तो आ कमलकान्तक संगियो सभकेँ केना माटिपर खसौलक। होइतो अहिना छै जे जाधैर कोनो कर्म ज्ञानक संकल्पशक्तिसँ नहि जुड़ल रहैत ताधैर

ओकरामे कमजोरी रहैत, मुदा जखन ओ 'संकल्पित शक्ति' बनि जाएत तखन ओ शक्तिमान बनियेँ जाइए। ओना, हल्ला (चौक परहक मारि-पीटक) सुनि गामक स्त्रीगणो आ पुरुखोक भीड़ लगि गेल मुदा से सभ देखनिहार।

शासन तंत्र, नवस्वतंत्र देशक तंत्र तेना अबिते तंत्रक मंत्रसँ गामक गलत तत्त्व तीनूक समावेश सुशीलक विरोधमे ठाढ़ भेल। गामक अखन धरिक जे बनाबट रहल अछि ओ जाति-सम्प्रदायिक जालसँ जकड़ल अछिए, जेकर प्रभाव लोकक मनमे रग-रग समाएल अछिए। जे अखनो गाम-घरमे मजबूतीसँ पकैड़ पसरल अछिए। जइसँ सार्वजनिक रूपमे कल्याणकारी मुद्दोक संख्या अल्पांशे अछियो। जेकर प्रभाव जाति-जाइतिक बीच पड़ले अछि। तैबीच दू विचारधाराक प्रश्न अछि। प्रश्न अछि जे अखन धरि जे हमरा सबहक कल्याणकारी धारा (समाजक उन्नैतिक) रहल अछि ओ केते अ-कल्याणकारी अछि आ मनुखक जिनगीक लेल वास्तविक जरूरतक कल्याणकारी दिशा की हएत। मुदा बुझनिहार दुनू दिस बराबरे अछि। केकर के सुनत। जहिना नव दिशाक खोजी अनभुआर तहिना पुरान (अबैत दिशाक) वक्ता अनभुआर। अनभुआर-अनभुआरक बीच समाज पनचैती के करत। मुदा समाज तँ अपने ओहन शक्तिशाली समुद्र छी जे सभ किछु मेटाइयो सकैए आ पुन: सभ किछु बनाइयो तँ सकिते अछि। सभकेँ बुझल अछिए जे केते जुग बदलल, केते जमाना बदलल, केते बेर सृष्टिक फेर-फाड़ भेल अछि। केते मनुख एबो कएल आ गेबो कएल आ आबियो तँ रहले अछि।

केतौ किछु भेल, मुदा विचारपुरमे तँ ई भेबे कएल जे एक गोरेक (भजनलालक) घरमे आगि भानसक चुल्हिसँ बारह बजे रातिमे लगि गेल। गाममे तना-तनी बढ़िये गेल छल जइसँ सइयो जगह पटका-पटकी आ मारि-पीट भेबे कएल। खूब केश भेल, साठिसँ ऊपर भेल, जइसँ सभमे दू पार्टी होइत गेल। अन्तमे गामक केशपर थाना दिससँ अंकुश

लगि गेल। मुदा कोर्ट दिस रहबे कएल। ओइ अगिलग्गीकेँ मुद्दा बना, नीक जकाँ थाना चार्जशीट केलक। चारू गोरे–सुशील, धीरेन्द्र, रामचन्द्र आ गोविन्दकेँ ओइ केशक मुद्दालय बनाएल गेल जे यएह चारू आगि लगौलक।

चारू गोरे जहलो गेल, न्यायालयसँ चारूकेँ सजाइयो भेल। मुद्दा आगू बढ़ल, हाइ कोर्टसँ चारू गोरे छुटकारा पौलक। कानूनी प्रक्रिया नमहर समय खींचलक। माने एक जेनरेशन खिंचा गेल।

आइ तीस बर्खक पछाइत ओ सभ जमीन माने डेढ़ो बीघा, जैपर पुस्तकालयक घर बनल छल, सार्वजनिक भऽ गेल। तीस बर्ख पूर्व जहिया घटना भेल तहिया जे सभ बुढ़-पुरान छला ओ सभ उठि गेला। नवका तूर, गामक बुढ़-पुरान भऽ गेला।

नवान पावनिक दिन, जहिना सुशीलक मनमे नव अन्नक विचार जगैत रहैन तहिना धीरेन्द्रो, रामचन्द्र आ गोविन्दकेँ। आब चारू अपन उमेरक चारिम पीढ़ीक सीमापर पहुँच गेल छैथ, तँए समाजक बीच आदर भेने, आदरणीय भइये गेल छैथ। एक तँ पचास-साठि बर्खक जिनगीक अनुभव, तैपर एक गाम, एक चास-बासक जीवन चारूक रहलैन तँए गामक माटि-पाइनिक पूर्ण अनुभव रहने मिथिलाक माटि पाइनिक उपजल चारू छथिए।

दिनक बेरुका समय माने नवान दिनक, पाँचो एकठाम भेला। एक तँ अभावी लोक भावी बुझि पाबैन करै छैथ, तहूमे नवान सन पाबैन, सुर-सुर, मुर-मुर दुनूक समावेशी पाबैन छीहे। सभ दिनसँ रामचन्द्रकेँ (चारू गोरेक बीच सभसँ छोट शत्रुघ्न बुझल जाइत अछि) शत्रुघ्न बुझले जाइत रहल अछि, अखनो ओ अपनाकेँ सएह बुझै छैथ। तँए जखने चारू गोरे एकठाम हेता कि शत्रुघ्न बुझि जाइ छैथ जे कोनो गप उठबैक पहिल पारी हमरे छी। शत्रुघ्न बजला (उमेरक हिसाबसँ आदर सूचक)-

“भाय साहैब सभ, अपना सबहक जिनगी फुसि-फासिमे चलि गेल। जहिना शत्रुघ्न ने राम जकाँ ने वनवासीए भेला आ ने भरत जकाँ राजगद्दी पेब राजे भेला- बीच-बीचेमे रहि गेला, तहिना भेल।”

अपना हिसाबे रामचन्द्र जे सोचि बाजल होथि मुदा सुशीलक मन मंदिरक मूर्तिकेँ हिला जरूर देलकैन। मुदा अखन धरि माने पैंतीस-चालीस बर्खसँ जे रामचन्द्र मन-बुधि रहितो श्रवणकुमार जकाँ अन्धभक्त समुहक बनल आबि रहल छला हुनको मनमे कोनो एहेन झटका नै लगैन जे ओ सिहैर जाइथ। विचारक गम्भीरताकेँ देखैत सुशील अपन मुँह बन्ने रखलैन। धीरेन्द्र गोविन्द दिस तकलैन तँ बुझि पड़लैन जे गोविन्दक मुँह बजैले लुसफुसा रहल छैन मुदा अगुआ कऽ बजैसँ पहिने विचार कनी खोंचियाह भइये गेल रहैन। हिम्मत करैत गोविन्द बजला-

“सुशील भाय, जहिना भीम आ अभिमन्यु एक पार्टनरशीपमे दुर्योधनक सातो फाटक तोड़ैक योजना बना दुनू गोरे अपन-अपन मोरचापर तैयार भेला, अभिमन्यु छअ फाटक तोड़ि सातममे फँसि गेला जखन कि भीम बहरेक फाटकपर मुंगरदन सम्हारने रहि गेला, तेहने ते ने..?”

समाजिक जड़ विचारधाराक शुरूक रूपमे उठल ओ बेवस्थाक टेंढ़-मेढ़ रस्ता भेने किछु वौएबो कएल आ किछु रस्तो तँ पकड़बे केने अछि। एक तँ शासन बेवस्थासँ समाजिक अखुनका बेवस्था धरि ओहिना रहल जेना अंगरेजी शासनक बीच छल। समाजिक विचारधारापर पूर्ण रूपेण वएह धारा प्रवाहित होइत छल जे जुगोसँ बहैत आबि रहल अछि। जाति-सम्प्रदायिक एहेन रूप रहलो अछि आ अखनो अछिये जे सदैत रूपक चालि बदैल-बदैल समाजकेँ दिशा-हीन करैत रहले आबि रहल अछि।

रामचन्द्र अपना मने जे बाजल होथि मुदा सुशील अपन मनमे ई

सोचि बाजए चाहलैन जे रामचन्द्र जँ नहियोँ बुझत तँ ओकरा दोहरा कऽ पुछि लेब जे- बौआ की बुझलहक, मुदा बीचमे जे धीरेन्द्र आ गोविन्द छैथ ओ तँ बुझनुक छथिए। तँए, विचारमे केते साम्यता अछि आ केते विसमता अछि ईहो तँ फरिछाइये (फरिछाएब भेल शुद्ध पानिसँ गंदगी बेराएब) जाएत जे कहिया केतए की बाधा उपस्थित होइत आबि रहल छलो आ अछियो। सुशील बजला- “रामचन्द्र, जँ तोरा नहाँइत हीरो जइ गामक माटिमे जनम लेत ओ समाज विचारधारक बेड़ा पार हेबे करत।”

सुशीलक बात सुनि रामचन्द्रक मन अनेरे फुला गेल। मुदा धीरेन्द्रो आ गोविन्दो भक-चका गेला जे सुशील भाय कि बजला जे रामचन्द्र हँसैए आ हम सभ बुझबे ने केलौं। गोविन्द बजला- “रामचन्द्रो कि आइयेक हीरो छिआ तेँरेते (त्रेते) जुगसँ ने हीरोपनी करैत आबि रहल छैथ।”

गोविन्दक इशारा सुशील बुझि गेला जे विचारधारा केना समाजधारा बनैए आ केना मेटाइए ओ तँ समाजक सोचक क्रिया बले चलैए। वएह क्रिया केना समाजक बल पकैड़ इष्टक धारामे समाजक धारा पकैड़ प्रवाहित हएत। सहए ने।

गोविन्दकेँ सम्बोधित करैत सुशील बजला- “गोविन्द भाय, पहाड़सँ झहरैत झड़झड़ाइत पानि, अकाससँ खसैत पानि धार स्वरूप रहने धरिया कऽ धारा बनि जाइए मुदा पोखरिक वा इनारक बीच फँसल पानि वा पतालक दबाएल पानि जखन अपन आड़ि तोड़ि वा उछैल धारा दिस बढ़ैए तखन कतवाहिसँ होइत-होइत ने बीचवाहि होइए...।”

गोविन्द सुशीलक आँखि-पर-आँखि देलैन जइसँ दुनू अँखिया गेला। रामचन्द्र भीने खुशी जे ठक, ठाकुर, चोर, सभ तँ अपने लोक ने छी।

❑ शब्द संख्या : 2333, तिथि : 29 नवम्बर 2018

# विचारभेद

वाजिबपुर मिथिलाक प्रमुख गाम सभ दिनसँ रहल आ अखनो अछिए। ओना, मिथिलाक बीच आइये नहि सभ दिनसँ माटि-पाइनिक बिलहा-बाँट होइत आबि रहल अछि आ अखनो होइते अछि, कहियो कोसीक पानि धकिया कमलाक पानि बदैल दइए तँ कहियो कमला धकिया पाइनिक संग-संग माटियोकेँ काटि कऽ बाँटि दइए आ नाम राखि दइए कोसिकन्हा, खाएर जेतए जे अछि से अपन-अपन भोगता बुझता। मुदा आइ वाजिबपुर गाममे दुर्गापूजा आराधनाक बैसार छी तइमे शामिल हेबा लेल गौंआ सभ आमंत्रित छैथ। जे तीन बजे बेरुका समयक प्रतीक्षा कइये रहल छैथ।

ओना, वाजिबपुर गामक अपन इतिहासो छै जइसँ भूतक संग वर्तमानो तँ छइहे। कोसी-कमलाक बीच बसल वाजिबपुर ऊँचरस जमीनक गाम छी। तँए बाढ़िसँ प्रभावित आइ धरि नहि भेल अछि, ओना, गोटे बर्ख जँ पहाड़ी इलाका (नेपालसँ उत्तर जइ पहाड़-समूहक बीचक रकबा हजारो वर्ग किलोमीटरक बीच अछि) मे बेसी बरखे भेल आकि हिमगिरीमे हिमेक हिमाएब बेसी भेल तइसँ सेहो बढ़बारि सेहो भइये जाइए। जइसँ मिथिलांचलक बीच बहैत धार सभ उछलबो करिते अछि। जइसँ पाइनिक उपद्रव सेहो बढ़िते अछि जइसँ गाम-गामक घरो-

घराड़ी आ खेतो-पथारक घरक संग माटियो नष्ट होइते अछि। से सभ समस्या वाजिबपुरकेँ अखन धरि नहि भोगए पड़ल अछि। तँए कहब जे सरकारी बैंकसँ ॠणमुक्त वाजिबपुर भऽ गेल सेहो बात नहियेँ अछि। जहिना दाही-भासीक ॠण भेटैए तहिना वाजिबपुरकेँ साले-साल तँ नहि मुदा अन्दाजमे रखू जे गण्डामे एक बेर रौदियाहो (रीन) ॠण भेटते अछि। आठ साए बर्खक गाम मिथिलाक वाजिबपुर अछि। जेकर वासीक पूर्वजक आठ साएमे दू साए बर्खमे दू साए बेर रौदी तँ जरूर देखबो केलैन आ भोगबो तँ करबे केलैन। तँए तेकर ओरियान माने रौदीक बीच जीवन-धारण केना बचल रहत, सेहो नहि केलैन सेहो बात तँ नहियेँ अछि मुदा ओ तँ अविकसित साधनक बीचक जिनगीक बीतल बात भेल जे डी.ए.वी. आकि खिचड़ी खौंक स्कूलेक नवतुरिया बच्चा केना बुझत। मुदा जँ ओकरा अपन समाजो अपन समाजिक आ मातो-पिता अपन परिवारिक ऐना आगूमे दइ तँ किए ने बुझत।

खेला-पीला पछाइत माने दिनक दू बजे, गोबरधन भाय ओछाइनपर नहि जा माने आराम करैले, खुशीलाल ऐठाम विदा होइत पत्नीकेँ कहला-

“गाममे समाजक बैसार दुर्गापूजा ले हएत, से कनी बुझने अबै छी।”

एक तँ ओहुना जगत-जननी दुर्गा मान्य छथिए तखन माइक हृदय (मातृत्व माने पत्नी) तँ सहजे मनमन्त छथिए। तँए पतिक बातसँ लड़ूदाइ मने-मन मुंगबाक मांग मनमे धड़ए लगली। तँए बजली किछु ने, आँखिक इशारासँ एतबे पतिकेँ (गोबरधन) केँ कहली जे हमरो हिस्सा ने हएत। जहिना कोनो बच्चाकेँ पहिल दिन कोनो नव विद्यालयक प्रवेश दिन खुशनुमा होइए तहिना गाममे समाजिक रूपमे जँ कोनो सामुहिक उत्सव होइए तँ गामो खुशनुमा भइये जाइए।

खुशीलाल आ गोबरधन भाइक घर अगले-बगल, कट्ठा भरिक दूरीपर। कहब जे एतबो दूर जाइले पतिकेँ माने मर्दकेँ जाइले पत्नीसँ परमीशनक काज पड़ैए। बात ठीके जे जँ एहनो-एहनो छोट-छीन काज ले पति-पत्नीसँ आकि पत्नियेँ पतिसँ जेबाले (शामिल हेबा-ले) आगूमे आवेदन दाखिल करत ईहो नीक बात ऐ मानेमे नहि भेल जे एहेन व्यस्त जीवनमे केना पुरौल जाएत। मुदा से बात नहि अछि, बात अछि बाजिवपुरमे पूर्ण समाजिक रूपक बीच सम्बन्ध स्थापित धार्मिक परिवेशमे करब। नीक बात, मुदा धार्मिक रूप की आ केहेन से अखन नहि, अखन एतबे जे समाजमे धार्मिक अनुष्ठानक बैसार छी।

ओछाइनपर पड़ल खुशीलाल गोबरधनकेँ देखते बैसैत बाजल-

“भैया, आइ दुर्गापूजाक बैसार छी। से चलबह किने?”

सोझमतिया गोबरधन भाय, चौकीपर लगमे बैसैत बजला-

“बौआ, अपना दुनू गोरे तँ एकजतिया दियादो आ पड़ोसियो भेलिऐ, तँए कि करबहक से ते तोरेसँ ने पुछबह।”

गोबरधन भाइक बात सुनि खुशीलालक मनमे भीतर जमल खुशीमे कनी बढ़ोत्तरी भेल। ओना, अखन धरिक जे सम्बन्ध खुशीलाल परिवारक आ गोबरधन भाइ परिवारक रहल ओइ अनुकूल एहेन खुशीक कोनो महत नहि अछि। खुशीक कनेक ई रूप खुशीलालक मनमे जगल जे गामक एक-एक परिवार जनमे जँ समाजिक चेतनशीलताक रूप जगैए तँ ओ खुशीक बात भेबे कएल।

ओना, खुशीलाल ईहो मने-मन बुझि रहल अछि जे गोबरधन भाय सोझमतिया लोक छैथ, तँए ई नहि जानि रहला अछि जे एक तँ अविकसित दोसर हजारो बर्खक गुलामीसँ लादल समाजक उपज अपना सभ छी, तँए केहेन फल-फूल फुलाइ, से बुझब अछिए। खुशीसँ खुशीयाइत खुशीलाल बाजल-

“भैया, आब तूँ सभ चौथापनमे आएल जाइ छह तखनो जे धरम-करम नइ कऽ लेबह आ कहीं बिच्चेमे मरि-हरि जेबह, तखन तँ जिनगी अकारथमे चलि जेतह किने?”

विचारक लहकीक बिचड़ैत सिहकी लगिते गोबरधन भाय सिसकैत बजला-

“अखैन तँ दुपहरे अछि, बैसार कखैन हएत।”

ओना, खुशीलालक मनमे विचार उमकैत जे एक घन्टा मात्र बैसार शुरू होइमे शेष रहल अछि, तँए अखनेसँ जँ विचारक दौड़ गोबरधन भाइक मनमे शुरू कऽ दिऐन तँ ओ आरो बेसी अनुकूल हेता। तँए किए ने ईहो बात जना दिऐन जे भैया अपने सबहक केने गाममे सम्पन्नता आबियो गेल अछि आ जे विपण्णता अछि ओकरा मेटा सेहो सकै छी, तँए भारी-भारी माने नमहर-सँ-नमहर दुर्गक मुकाबला करैक शक्ति सेहो आबि गेल अछि। मुदा अखन गोबरधन भाय सन लोक लेल बेसी भइये जाएत।

घड़ी देखैत खुशीलाल बाजल-

“भैया, बैसार शुरू होइमे एक्के घन्टा बाँकी अछि, तैयारो होइमे समय लगबे करत। तँए आब तैयारे हुअ।”

गोबरधन भाइक विचारक बहैत बेगमे जेना पाछूसँ जेहेन धकियौल जाइए तेहने धाराक रूप पकैड़ सेहो वेगबत होइते अछि। तेहने विचार गोबरधन भाइक मनमे उत्कण्ठित भेलैन। बजला-

“बौआ खुशी, समाजेक बैसार छी, जहिना सभ दिन समाजक बीच रहलौं तेहने बगह-मे ने जाएब, तइले तैयार होइमे किए समय लागत, चलह हम तैयारे छिअ।”

निरुत्तर भेल खुशीलाल बाजल-

“भैया, बीचमे चाह पीब लइ छी। बैसारे छी, तहूमे समाजेक बैसार

छी, ऐगला साल सेहो तीन सालक अतिचारे पड़त, जँ कहीं कथे-कुटुमैतीक गप उठि गेल तखन बैसारक कोनो ठेकान अछि जे केतेकाल चलत।”

एक तँ ओहुना गोबरधन भाय साँझे-भोर चाह पीबै छैथ मुदा समाजक आग्रहोक तँ अपन महत् अछि। दुनू गोरेक बीच गप-सप्प बझले छेलैन कि बिच्चेमे खुशीलालक पत्नी, चाह नेने आबि आगूमे रखि देलकैन।

एक तँ सोल्होअना समाजक (पूर्ण समाजक) पहिल उत्सवक बैसारमे प्रवेश करैक खुशी गोबरधन भाइक मनमे छेलैन, तैपर सँ खुशीलालक आग्रह (पत्नीक आनल चाह) देख बजला-

“बौआ, हम तँ इनारक बेंग भेलियह, अपन नून-रोटीसँ कहियो उछड़ा भेल।”

ओना, वाजिबपुरक किसानक जिनगी आन गामक अड़ोस-पड़ोस गामक किसानक जिनगीसँ सभ तरहेँ अगुआएल अछि। जे खुशीलालो देख-बुझि रहल अछि, मुदा समाजक बीच अपनाकेँ निर्बल (निरबल) निर्मल बना सम्मिलित नइ हएब, ताबीच एकरूपता केना औत। अपनासँ ऊपरो समाज अछि आ निच्चो तँ अछिए। तँए केकरा देखब आ केकरा अनदेखी करब। जिनगीक यएह दुनू दिशा दुनियाँकेँ विभाजित केने अछि। विभाजिते नहि, ओहन विभाजित केने अछि जे दू तरहक मनुख बना, दू दुनियाँ बना देने अछि। मुदा जे अछि ओ दुनियाँमे अछि दुनियाँबला अपन बुझह। गोबरधन भाइक विचारकेँ चुट्टियबैत (चुट्टियबैक माने भेल बिठुआ कटैत) खुशीलाल बाजल-

“भाय साहैब, जखन अहाँ अपनाकेँ इनारक बेंग कहै छी, तखन बाँकी की रखै छी।”

अपन ऊपर आछेप देख गोबरधन भाय बिच्चेमे बजला-

“से की बौआ?”

बात-चीतक क्रममे दू तरहेँ विचारधाराक बीच विचार उठैए, पहिल नइ बुझने, दोसर विचारकेँ बुझि-बुझि रोकैक खियालसँ। विचारकेँ स्पष्ट करैत खुशीलाल दोहरबैत बाजल-

“भाय साहैब, पतालक बेंगक माने भेल (गहराइसँ) गहींरमे जा कऽ दुनियाँ देखब। मुदा..।”

अपन खुजैत भक्ककेँ देखते गोबरधन भाय बजला-

“बौआ, हमरा बातक कोनो दुख नइ करियह। मौगी-मेहैर मुहेँ सुनि कऽ सीखने छी, तँए बजा गेल।”

चुटकी लइत खुशीलाल बाजल- “भाय साहैब, यएह मौगी सभ तँ अपन असमिया (माने कमरूपिया) रूप बना मरद सभकेँ भेड़ा-भेड़ी बना बाध-बोनमे अनेर चरैले चरैले छोड़ि दइए।”

गोबरधन भाय रसकेँ घोंटैत बजला-

“से सरिपौं हौ खुशीलाल?”

गोबरधन भाइक रसियाएल मनकेँ भँसिआइसँ समटैत खुशीलाल बाजल- “भाय साहैब, एकबेर जे दुनू गोरे निकलब आ कियो देख लेत तँ कहत जे ई दुनू गोरे बुधिबिचड़ी कऽ नेने हएत, तँए कनी आगू-पाछू भऽ कऽ बढ़ू।”

सएह भेल, गोबरधन भाय बैसार स्थल दिस आगू बढ़ला। गोबरधन भायकेँ लगसँ हटिते खुशीलालक मन आजुक समाजसँ लऽ कऽ आदिक समाज (अपन गामक) धड़िक बीच दौड़ गेल। दुर्गापूजा गाम-गाम होइते अछि, वाजिबपुरमे सेहो हएत। गाममे धर्मिक नींवपर पूजा हएत, नीक बात। अखन वाजिबपुरमे अनेको धर्मस्थल अछिए। केतौ धुजा फहरा, केतौ मूर्तिक रूपमे। केतौ गाछ-बिरीछमे फाटल-पुरान कपड़ा बान्हि, तँ केतौ बिनु धुजेक। कोनो-कोनो ओहनो स्थान तँ अछिए,

जैठाम लोक (समाजक) एकठाम बैस रामोलीला आ कृष्णोलीला (रास) देखते आबि रहल अछि। धरमोक अनेक रूप-रंग सेहो अछिए। घर-घरमेमे धर्मक पोथी रहितो सभ रंग अछि। कोनो घर गीता-भागवतसँ सजल अछि, तँ कोनो घर कबीर-मंसूर आ बीजकसँ सजल अछि, कोनो कुरानसँ सजल अछि तँ कोनो वाइविलसँ। तहिना अनेको रंगक विचार, कियो बुद्धदेवक हृदयसँ जुड़ल तँ कियो जैन महावीरसँ जुड़ल। तँ कियो मार्क्स-लेनिनसँ जुड़ल तँ कियो हिटलर-मुसोलिनीसँ जुड़ल सेहो अछिये।

आठ साए बर्ख पूर्व जहियासँ गामक बास शुरू भेल, तइसँ पहिनेसँ अनेको रंगक धर्मो आ धर्मिक सम्प्रदायो चलिते आबि रहल छल। जहिना सिद्ध सम्प्रदाय सिद्धक भ्रमणसँ प्रभाव पड़ल, तहिना नाथ सम्प्रदायक प्रभाव नइ पड़ल सेहो बात नहियेँ अछि। तहूमे जखन वाजिबपुरकेँ बसब साइये-डेढ़ साए बर्ख माने चारिये पीढ़ी बीतल छल कि एक संग कबीर, तुलसी, सुरदास इत्यादि-इत्यादि अनेको महामान्य अपन प्रभाव गाम-गाममे सेहो बढ़ेबे केलैन। जेकर असैर वाजिबपुरमे नइ भेल सेहो केना नइ कहल जाएत। मुदा सभ कथुक बाबजूद- अखनो सूत्रवत् जीवंतता समाजक नइ अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। आगि लगलापर (गाममे कोनो घरमे) जाति-धर्म सभ एकबट्ट भऽ जाइए, तँए कि बिआह-दानक गोत्र-सूत्र बहुबट्ट नइ करैए सेहो केना नइ कहल जाएत। आब कहब जे रस्सा-कस्सी आ डोरा-डोरी केना एकबट्ट हएत। समाजकेँ ने अपन शक्तिक आभास भऽ रहल छैन आ ने अपन जिनगी समतल बनबैक दिशा। समाज माने मनुख ओहन शक्तिमान अछि जे अपनाकेँ उद्धारो कऽ सकैए आ अवघातो तँ करिते अछि।

आन गाम जकाँ वाजिबपुरमे समाजिक बैसारक रूप बदलल-बदलल सन छल। आन गाममे बैसारे समयमे माने समाजिक बैसारक समयमे, कियो ढेका खोलैत सुलवाहिक बहन्ना बना नइ उपस्थित हेता तँ कियो महींसकेँ पाल खुआबए विदा होइ छैथ। एते सचेत-सतरकी

वाजिबपुरबला सभमे छेलैन्हे। जे समाजकेँ सिरपर चढ़बैत समाजिक संकल्पित रूपकेँ महत दइते छैथ।

ओना, आइसँ चारि साल पूर्व गाममे कियो दुर्गापूजाक चर्च गपे-सप्पमे उठौलैन जे गाममे पूजा हुअए। जइ गाममे मास-मास दिन रामलीलाक भार गौंआँ उठा साले-साल देखै छैथ, जइ गाममे दर्जनो अष्टयाम कीर्तन चौबीस घन्टा (दिन-रातिक) होइए जइ गाममे एक पनरैहिया- माने एक पक्ष भागवत कथा होइए, तइ गाममे दुर्गे पूजा कोन असम्भव भेल। ओहुना तँ दसमीमे माने शारदीय नवरात्रामे, घरे-घर पूजो-पाठ लोक करिते छैथ। भेल तँ एतबे ने जे ओ सम्मिलित रूपमे- माने सामूहिक रूपमे- हुअए।

सम्पन्न गाम वाजिबपुर ऐ दुआरे बुझल जाइत अछि जे चौबगली गामसँ सभ तरहेँ, जहिना किसानक जिनगीमे तहिना वौद्धिक जिनगीमे अगुआएल अछिए। जे बात वाजिबपुरबला नीक जकाँ बुझै छैथ। भेल तँ नान्हिटा हिसाब गामक अगुआएल-पछुआएलक अछि जे केते जमीन केहेन उपजा दइबला अछि आ ओकर रकबा केते अछि। तहिना गाममे पढ़ल-लिखल माने विषयक हिसाबसँ, केते कोन गाममे अछि। छतीसो वर्णसँ बेसी जातिक बास भूमि छी वाजिबपुर। कहब जे अखन धरि लोक छतीसे वर्णन चर्च करै छैथ, तैठाम तइसँ बेसी जाति केना फड़ल। जइ विचारमे छतीसे वर्ण फड़ल ओ बहिला भऽ गेल, किए तँ केना फड़ैए से जँ 'सवा लाखे... ।' पढ़ि कऽ जँ विभाजन रेखा दितैथ तँ दोसर रंग होइत। खाएर जे अछि।

वाजिबपुरमे हिन्दूओ छैथ, मुसलमानो छैथ, तैसंग एहनो तँ छथिये जे दुनू दिस छैथ। आठ साए बर्खक नमहर जिनगीमे गाम अपनो चेहरा देख रहल अछि आ आनो-आन गामक सेहो देखिये रहल अछि। अनेक जाति, अनेक धर्म, अनेक विचार, अनेक रस्ता रहितो विचारपुरमे जाति-धर्मक कहियो तना-तनी नइ भेल। नइ होइक मूल कारण भेल अछि

समाजक बीच बेवहारिक जिनगीक सम्बन्ध।

आइ धरि जेते लोक, नाच-तमाशा छोड़ि, एकठाम एकत्रित भऽ कोनो काजे बैसला, तेते आइ धरिक समाजक बैसारमे नइ भेल। तँए, कहब जे बैसार भेबे ने कएल सेहो बात नहियेँ अछि। कहियो ऐगला बाढ़िक पानिक आशासँ धारक मुँह बन्हैक बैसार होइ छल, तँ कहियो घरक आपसी झगड़ाक। ओना, टुकड़ा-टुकड़ी अनेको देवस्थलक बैसार सेहो होइते आबि रहल अछि।

तीन-चारि सालसँ दुर्गापूजाक गप-सप्प चलि अबैत विचार समाजक परिवेशकेँ एकमुहरी बनाइये चुकल छल, तँए बैसारमे सहमत बनैमे देरी नहियेँ लगत, ई आशा सभ समझदार लोकक मनमे छेलैल्हे।

नीक संजोग अछि जे सभ टोलक लोक माने सभ जातिक लोक एकठाम बैस समाजमे सामूहिक उत्सवक विचार करता। बाता-वरणमे गम्भीरता छेलैहे। गम्भीरताक कारण भेल जे सभकेँ बैसारक विचार बुझल छेलैन, जइसँ सभ किछु ने-किछु विचार कइये लेने छला। जँ से नइ रहैत तँ अनेरे ने कियो पुछितैथ जे की भेलै फल्लाँठाम। तँ कियो पुछैत किए भेल। तँ कियो पुछैत कनी दोहरा कऽ कहियौ। से सभ अखन धरि नइ उठल। मुदा लोक पानि जकाँ थोड़े अछि जे पोखैर वा इनारमे संच-मंच दबकल रहत। मनुख तँ मनुख छी ओ तँ धारक धारा जकाँ चलैबला छी। ओकर मनु थोड़े बैइसैबला अछि। एक गोरे बजला-

“भाय, ऐबेर अल्लू खेतीमे पौरुकाँसँ दोबर खरचा भेल।”

अल्लू खेतीक नाओं सुनिते दोसर गोरे बाजल- “छोड़ू, अल्लू-तल्लूक खेती। पौरुकाँ सौंसे चौमास अल्लू रोपलौं तेहेन पल्ला मारलक जे जे खरचा गेल से गेबे कएल जे साल भरिसँ पोसि कऽ जइ खेतकेँ रखने छेलौं ओ सेवो गेल आ उपजो तँ गेबे कएल।”

तेसर बाजल- “हौ जरवैन बुझै छहक जे हम सभ जुएक

(मौसमक) पाशापर बैसल छी, तखन हार कि जीत हेबे करत। तइले कनबे करबह तँ के सुनतह। सभ जनितो छैथ आ कहबो करिते छैथ जे- Indian Agriculture is a gamble of the monsoon.”

बैसारक शुरूहुक प्रश्न यएह उठल जे दुर्गापूजा गाममे हुअए तइले विचार करू।

कियो थोपड़ी बजा तँ कियो हाथ उठा तँ कियो मुहेँसँ हुँहकारी भरि बजला जे जरूर हुअए।

गामक मध्य स्कूलक प्रांगणमे पूजास्थल सेहो निर्धारित भेल। आठे दिन कलशस्थापनक दिन बाँकी छल। सात दिन आसिनक अन्हार बीत चुकल छल। तँए काल्हिये माटि लेबाक दिन तय भेल। दिन-बेरागनक विचार (माटि लइक) हटि गेल किए तँ आठे दिनक बीच दुर्गापूजा सन पर्वकेँ स्थापित करब अछि। कोसी धारक इमरजेंसी पुल जकाँ लगले हाथ लगि गेल।

एकमुहरी उत्साहक माहौलमे बैसार भेल। बैसारक उसार भेला पछाइत एक टोलक लोक दोसर टोलक लोकक बीच टुकड़ी बनि-बनि अपन-अपन विचार उगलए लगला। खाएर जे भेल, मुदा गाम एकठाम भेल।

आजुक राति, माने दुर्गापूजा बैसारक राति, सन सुन्दर राति कहियो वाजिबपुरक नहि भेल छल। बेंटछुट्टा हँसुआ-खुरपी जकाँ जे कोनो घरक पछुआरमे फेकल रहैए तँ कोनो कोनचरक अगवासमे तहिना ने अपनो सबहक गाम अछि। जाति-जातिक बीच झगड़ा, धर्म-धर्मक बीच झगड़ा, ई-टोल-उ-टोलक झगड़ा, ई सम्प्रदाय-उ-सम्प्रदायक बीच झगड़ा, तैसंग पड़ोसिया बीच परोसपनक झगड़ा, तँ परिवारेमे परिवारिक झगड़ा, तँ दुनू परानीमे स्त्री-पुरुखक झगड़ा, बेटा-बेटीक संग बाप-माए, बेटा-बेटीक झगड़ा, यएह तँ नरिछुट्टा हँसुआ कहियौ कि खुरपी कहियौ आकि बेंटछुट्टा

कहियौ, बराबरिये ने भेल। मुदा वाजिबपुरक आजुक राति वृन्दावन रासिक राति जकाँ भेल। स्त्री-पुरुख बीचक झगड़ा, भरि राति दुर्गापूजाक विचारमे मनरंजन करैत रहल तहिना एकबट्टू परिवारमे माने भेल जे जइ परिवारमे पति-पत्नीक बीच सौहार्दपूर्ण जीवन छैन, ओ परिवारसँ आगू बढ़ि टोल-पड़ोसक बीचक मतभेदकेँ हटबैत गप-सप्पमे राति बितौलैन।

जइ गामक समाज एकजुत्ती भऽ धार्मिक क्रियाक सूत्रपात केलैन, ई एक नव परिवेशक सूत्रपात भेल। जखने समाजक सभ एकठाम बैस एक कदम आगू दिस बढ़ैक विचारमे सहमत होइत सम्मिलित हएत तखने समाजक दिशा निर्देश हएत। आइ धरिक जे एक-दोसराक श्रम हड़पैक जे प्रक्रिया रहल ओ हड़पनिहार केना चुप-चाप बैसल रहि जाएत। ओहन विचारक लोकक बैसार सेहो भरि राति चलैत रहल। केकर अन्हार केकर इजोत माने केकर अन्हरिया (कृष्ण) पख (पक्ष) आ केकर इजोरिया (शुक्ल) पख, से के निर्णय करत। ओ तँ समाजे ने कए सकैए। पुरानपंथीक मात्र साम्प्रादायिको नहि आर्थिको महनथाना सभ एकठाम भऽ दुर्गापूजाक दोसर स्थानपर स्थापित करैले भोरहरबे, माने काल्हि समाजक बीच जे माटि लेबाक समय निर्धारित भेल छल, तइसँ बहुत पहिने दूटा महंथ आ गोटि-पङ्गरा आरो लोककेँ संग केने, माटि लऽ स्थान स्थापित कऽ लेलैन।

समाजसूत्रसँ अनभिज्ञ लोक, अपन विचारक टुटैत स्थान (दुर्गास्थान) आ दोसर स्थानकेँ सृजित देख विरोध सोभाविक छल। विरोध भेल। गामक समाज अड़ि कऽ अपन विचारपर ठाढ़ भेला। गाममे दूटा स्थान (दुर्गास्थान) स्थापित भऽ गेल। जइसँ पचास बर्ख भेलोपरान्त अखनो ओहिना अछि। पीढ़ी बदैल गेल मुदा विचार भेदक गिरह नहि खुजल।

❑ शब्द संख्या : 2553, तिथि : 04 दिसम्बर 2018

# एकरबा बानर

आसिनक दुर्गापूजाक संग कोजगरो भऽ गेल। कातिक तेसर दिन बीत रहल अछि। ओना, गामक लोक सभ बजै छैथ जे जुग उनैट गेल। से बजै छैथ दूटा चीज देख कऽ, पहिल जे तेरहम मास जे कातिक मानल जाइए से अगहन (अग्रहन) भऽ गेल, माने कतिका-धान भेने आ दोसर जे हैदरावादी किस्मिक ओलक उपज भेने। कहब छैथ जे ओलक कबकबीक सुआदे खतम भऽ गेल। जखन ओलमे कबकबिये नहि तखन ओ ओल केना भेल? सबहक नामक पाछू ओकर गुण-धर्म अछिए। तैसंग देसी ओलक बढ़बारि (देशी) अधा सेर प्रतिवर्ष अछि। जे तीन सालक पछाइत भूमिसँ उखारब ते डेढ़ो सेर हएत कि नहि। तैठाम जँ तीनिये मासमे छअ किलोक ओल बढ़ि कऽ भऽ जाए, ते जुग उनटब भेल कि नहि। पाँच बजे भोरक समय, भिनसर नइ भेल छल, रविनाथ भाय रोड धऽ कऽ नहि घुमै छैथ, बाधे-बोने घुमै छैथ, तही रूटिंगक (कार्यक्रमक) हिसाबसँ पछबरिया बाध-बोन दिस घुमए निकलला। सड़कक बगलमे गाछी-बिरछीक क्षेत्र अछि, तेकर पच्छिम बाध अछि। बाधक माने भेल खेती-पथारी करैबला आ बोनक माने भेल गाछी-बिरछी।

बाधक बीच एकटा कट्ठा डेढ़ेक परती अछि, ओइ परतीक बीच एकटा कहिया-कतक साहोरक गाछ अछि। बर-पीपर जकाँ ने लतरल-चतरल अछि आ ने ताड़क गाछ जकाँ पुरखियाहे अछि। सभ सिरखारे तँ बरे-पीपर जकाँ अछि मुदा पहाड़ी क्षेत्रक लोक जकाँ घुटमुटाह तँ अछिए।

मुदा तँए कि आन गाछ सभसँ कम रूआबी अछि सेहो बात नहियेँ अछि। कोरियने जकाँ ओकर (माने साहोरक गाछकेँ) एते दाबी तँ छइहे जे ठण्काकेँ हम अपना ऊपर नहि खसए देब। तेहेन रक्षक तँ छीहे। जुग-जुगसँ जे बात सभ, सभ बुझैत-बजैत आबि रहला अछि, से झूठ केना हएत। कहलो तँ जाइते अछि जे अपने केने गायक घी, अपने केने महींसिक घी होइते अछि। ई तँ निर्भर करैत अछि घीक चाह केनिहार केहेन अछि। जँ गाइक घीक पसंददीदा छैथ तँ गाइक घीकेँ पसिन करता, नइ तँ महींसिक। ओही साहोरक गाछ लग पहुँच रविनाथ भाय बाध दिस नजैर उठा कऽ देखलैन तँ सतरंगी रंग कहियौ आकि धानी रंग, मे बाध नेहाएल-सोनाएल बुझि पड़लैन। गामक साल भरिक बेरा पार, होइत देख रविनाथ भाइक मन खुशीसँ झुमि उठलैन जे साल भरि भोजनक अभाव गाममे नइ हएत। किए ने मन झुमकी पहिर झुमतैन, जैठामक मनुख एक दिन टपने उनतीस दिन माघक परवाहि केने बिना आशामे जीबैए तैठाम साल भरि बहुत भेल। ओइ हिसाबे केता साल भेल। गाछी दिससँ पहिने एकटा बानर एकराइते निकलल, ओकरा सबहक माने बानर सबहक निकलैक कि हिसाब छै से तँ वएह सभ जानत मुदा रविनाथ भाय देखलैन जे एकटा जुआएल पकठाएल, उनडाएल मोटगर डटगर बानर गाछी दिससँ बाघ दिस आबि रहल अछि। असगर बानर (एकेटा) केँ देखते रविनाथ भाइक मन हनुमानजीपर चलि गेलैन। ओहो बेचारे असगरे जीवन भरि राक्षस सभकेँ खेरैत-खेहारैत भरि त्रेता जुग रहि गेला। जहिना नारद बाबा स्वर्गसँ नर्क आ देवलोकसँ मर्त्तलोक सदिकाल टहैलते रहै छला तहिना रविनाथ भाइक मन एकडायरे बानर जकाँ एकार मनुखपर सेहो गेलैन। असगरक जिनगी, असगरे लोक, खेत-पथार, बोन-झारसँ कमा कऽ लौत आकि चुल्हि लग बैस भानस करत। से नइ करत तँ खाएत केना आ नइ खाएत जे काल्हि कमाएत केना। नइ कमाएत तँ अबैयेले किए धड़फड़ाएल। ऐबे करैत ते

पाछूकेँ अबैत, जखन लोक खा-पी नेने रहैत।

तही बीच देखलैन जे ओ एकरबा बानर खेत सबहक धान निहारैत। असगरे एकटा खेतक ऊँचगर आड़िपर बैस धान खाए लगल। कनीकालक पछाइत बानरक जेर करीब तीसटा पतियानी लगल बाधक खेत सभमे बैसल। कर्णपुरमे कहियो बानरक बसेरा नहि भेल छल। आइये नहि, सभ दिनसँ कर्णपुरमे गाछी-कलम सघन रहल अछि मुदा बानरक बसेरा नहि भेल। कहब जे कर्णपुर गामक मौसम बानक अनुकूल कि नइ अछि सेहो बात नहियेँ अछि। एक्के इलाकामे किछु गाम एहेन अछि, जइ गाममे बानर सभ दिनसँ रहल अछि, मुदा कर्णपुरमे बानरक बसेरा कहियो ने भेल छल।

एकाएक केतए-सँ एते बानर गाममे आबि गेल..! लगले मन पड़ि गेलैन छह मास पहिलुका बात जे शिवनाथ भाय कहने रहैथ जे रातिकेँ एक ट्रक बानर गामक गाछीमे आनि कियो छोड़ि देलक अछि वएह बानरक झुण्ड बनि बाध-बोनमे उपद्रव करैए।

एक तँ बानर चरिचकिया गाड़ीक अन्तिम प्रोडक्ट छी माने चौपाया जानवरक अन्तिम, तँए आन-आन गाड़ी सबहक अनुभवकेँ नीक बनबैत प्रोडक्ट भेल अछि, जइ दुआरे आन-आन चरिचकियासँ एते सुरक्षित तँ अछिए जे जँ कोनो आड़िपर बैस वा खेतेमे धाने वा आने जजात खाइत रहत आ अहाँ जँ कले-बले टपि जाएब ते ओ घुरियो कऽ ने देखत मुदा जँ ओकरा कोनो उपद्रव करबै तखन ओहो तँ राम-लक्ष्मणक महावीर भक्त त्रेते जुगसँ आबि रहल अछि। तहूमे हनुमान बाबा सन बाबा छथिये जिनका बिनु घरेवालीक परिवार छैन।

ओना साहोरे गाछक निच्चाँमे बैस रविनाथ भाय हिसाब जोड़ि रहल छला जे जइ हिसाबे बानरक आगमन गाममे भेल अछि तइ हिसाबे साल भरिमे खाएत केते आ उपद्रवसँ नोकसान (दुइर) केते करत। जखन

नान्हि-नान्हिटा मूस-बानरक हिसाबे-उपजाक छबम् भाग खा जाइए, तखन ओ केते खाए। तहूमे गाए-महींस जकाँ ने दूधे देत, ने खस्सी-बकरी जकाँ मांसे देत आ बरद जकाँ हरे-गाड़ी खींचत आ ने घोड़ा-हाथी जकाँ सवारियेक काज करत। पाँचटा नील गाय किसनपुरक बोनमे अछि से ते गामक खेती-पथारी रोकि देलक, रोकब भेल जे तेते उपद्रव करैए जे किसान खेती करब छोड़ि देलैन, तहिना सिनुरपुरा गामक खेती बारह-चौदहटा बोनैया सुगर रोकि देने अछि। कोनो गरे रबिनाथ भायकेँ हिसाब बैसबे ने करैन। मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे अनेरे कोन जानवर सबहक ओझरीमे ओझरा लगलौं। अपने जिनगी तेहेन पहाड़ बनि गेल अछि जे पाड़ करब पारे ने लगि रहल अछि आ गामक बाध-बोनक भार हमरा बुते उठत। ओ तँ उठत ओकरे बुते ने जेकर भार छिऐ।

रबिनाथ भाय बाबा साहेब भीम रावक अन्धभक्त श्रवण कुमार जकाँ छैथ। जहिना भीम साहैबक जिनगी एकटा खुल्ला दस्तावेज अछि तेहने दस्तावेज बनबै पाछू अपनो लगल छैथ। ओना, भीम साहैबक मनमे की छेलैन, अपन शक्ति की छेलैन, तइ अनुकूल अपन जीवन-धारण केने छला। संविधान सभमे भीम साहैब एक-एक जनकेँ भोँटक पतिआनीमे आनि कऽ रखि देलैन। मुदा जीवन तँ ओइसँ हजारो कोस दूर अछि, जेकरा पाड़ करब ने सभकेँ अपन-अपन दायित्व अछि। ओना रंग-रंगक चश्मासँ भीम साहैबकेँ सोहे देखल जाइ छैन आ ओइ अनुकूल दर्शक अपन दिशो निर्धारित कइये लइ छैथ। मुदा रबिनाथ भायमे से बात नइ छैन। माता-पिताकेँ जहिना भार बना श्रवणकुमार तीर्थ यात्रा करए विदा भेला तहिना रबिनाथ भाय सेहो अपनाकेँ बुझै छैथ।

बाध दिससँ टहैल कऽ रबिनाथ भाय दरबज्जापर पएर देलैन कि पत्नी बुझि गेली जे जेते कालमे अपने हाथ-पएर (माने रबिनाथ भाय) धोता तेतेकालमे अपनो चाह बनि जाएत। अपन जिम्मा बुझि अपन सीमाक काजमे सुचिता जुटि गेली। ओना, बाधमे देखल बानरक झुण्ड

मनमे रहबे करैन जे गाममे नव उपद्रव बढ़ि गेल अछि।

दरबज्जापर रबिनाथ भायकेँ बैसिते सुचिता चाह नेने पहुँचली। पाइनिक कोनो खगता मनमे उठबे ने केलैन जे पानियो अनितैथ। किए तँ एते बुझले छैन जे हाथो-पएर धो लइ छैथ आ भरि छाँक पानियोँ कलेपर पीब लइ छैथ। हाथमे चाह लइत अपन शुभ संदेश पत्नीकेँ रबिनाथ भाय सुनबए चाहलैन। शुभ सन्देश गाममे बानरक आगमन मनमे रहबे करैन। मुदा मुहसँ बकार निकलैसँ पहिने तेकार लगि गेलैन। तेकार ई लगलैन जे बानर कहि पत्नीकेँ कहिऐन आकि हनुमानजी कहि। किए तँ ई मनमौजी बात अछिए, जे जे मन फुरए से बाजू। रबिनाथ भाइक दशा ओइ मूर्तिकार जकाँ भऽ गेलैन जे जे मूर्तिकार मूर्ति निर्माणक हाथ रखै छैथ, वएह हाथ ने मूर्ति निरैम निर्माणकर्ता सेहो बनबैए। जीह-जाँति (जी जाँइत) रबिनाथ भाय बजला-

"आइ जीवनक नव दर्शन भेल?"

जीवनक नव दर्शन भेल, छुब्द होइत सुचिता बुदबुदेली-

"मर-र ई की भेल!"

जइसँ मनमे ने कोनो जिज्ञासा जगलैन आ ने कोनो विचारक आशे फुटलैन। मुदा गपक सिलसिलाकेँ सिलसिलेबार आगू बढ़बैत सुचिता बजली-

"से की?"

रबिनाथ भाय बजला-

"पछबारि भागक बाध-बोन दिस टहलए गेल छेलौं। बीच बाधमे साहोरक गाछ लग जखन ठाढ़ भऽ बाध दिस हियासए लगलौं तँ सतरंगी रंगमे रंगल बाध बुझि पड़ल। मने-मन हिया-हिया हियासिये रहल छेलौं कि 'की' कहि रबिनाथ भाय चुप भऽ गेला। जानि कऽ चुप भेला कि हबटूटल साइकिल जकाँ एकाएक रूकैत बकार भऽ गेलैन, से तँ रबिनाथ

भाय जनता। मुदा सुचिताकेँ बुझि पड़लैन जे भरिसक कोनो असाध व्याधि मनमे ने तँ उठि गेलैन। होइते अहिना अछि जे असाध रोगक कियो नाम नहि लिअ चाहैत अछि। जहिना पारखी डॉक्टर हड्डी (देहक हड्डी)सँ सटल मुइल खून वा सड़ल पस (खूने पस बनैए) के निकालैले ऊपरक खून चमराकेँ तह-दर-तह हटबैत हड्डी लग पहुँच ओकरा निकालि स्वस्थ शरीरक निर्माण करैए तहिना सुचिता जानै- करै-चाहै छेली मुदा पतिक बिसमित होइत मनकेँ ऊपरक तहक हटबैत बजली-

"एना जे बिच्चे...!"

पत्नीक बात सुनि रबिनाथ भायकेँ अनासुरती मनमे उठलैन जे नीक हएत पहिने बाधक रंग देखा दिऐन आ पछाइत भंग देखा देबैन। रंग-भंगक कि रंगमे भंग, आकि भंगमे रंग केना होइए से अखन नहि, अखन एतबे बजला-

"ऐबेरक बाधक जे रंग चढ़ल अछि, ओ गामोकेँ रंगि रंग चढ़ा देत।"

रबिनाथ भाइक विचार सुचिता नीक जकाँ नइ बुझली। जइसँ मन भीतरे-भीतर औना लगलैन। औनाइक कारण भेलैन जे पमरिया तेसर जकाँ सभमे 'हाँय जी' कहब नीक नहि, मुदा बिनु बुझल बात बजबो केना करब। लगले मनमे भेलैन जे ऐठाम कि कियो आन अछि जे कोनो बात बजैमे धड़ी-धोखा हएत। बजली-

"एना जे रंगरेज-अंगरेज जकाँ अधा बजै-बनबै छी आ आधा छिपाड़ जकाँ छिपा लइ छी, तइसँ काज नइ चलत। जखन अपनाकेँ पुरुख बुझै छी तँ पुरुखपन बातो रखू।"

पत्नीक बात सुनि रबिनाथ भाइक मनमे भेलैन जे जा, ई की भऽ गेलैन। ई तँ ओहने भेलैन जे कियो उपन्यास पढ़निहार पहिलके पृष्ट पढ़लापर एते बिहसि जाइ छैथ जे दोसरे पृष्ठमे रिजल्ट देखए चाहै छैथ,

तेहने ने ते पत्नियोँ भऽ गेली। भाय जखन पति-पत्नीक बीच जिनगी भरिक एकरारनामा भेल अछि तखन जँ बुढ़ाड़ियोमे बिआहेक रस लेब तखन बुढ़ाड़ीक रस मुइला पछातियो भेटत। रसमय जिनगी काव्यमयी दुनियाँमे रमणैत-रमकैत चलए, यएह ने भेल पुरुखपनक जिनगी। तैठाम जे मरदुआर बनि अपन दरबज्जाकेँ मरदुआर बनाएब तँ साँझू-पहर-के चुन-तमाकुल, चाह-पान आ भाँग-घोट केतए हएत। अपन बुड़ियाइत-बुढ़िआइत मनकेँ समेट रबिनाथ भाय बजला-

"बाधक सतरंगकेँ अखैन हटबै छी, मेला-ठेलामे तँ सतरंगक कि सहस्रंगसँ रंगल रहैए, तइसँ अपना दुनू गोरेकेँ कोन मतलब?"

पतिक लहकल बात सुचिता नहि बुझि पेली। बुझबो केना करितैथ, जे घाटपर लहकी खेलेनिहार अछि से ने बुझत आ जे से नहि अछि। पतिक पावन धारमे भँसैत सुचिता बजली-

"ठीके कीने। कोन मतलब अछि अनका दुनियासँ, रामचन्द्र भगवान दुइये परानी राजगद्दीसँ बोन आ बोनसँ राजगद्दी देखलैन आकि हमहूँ-अहाँ देखलौं हेन।"

पतिक टोकारामे सुचिता छेहा भँसि गेली। बजली-

"अनेरे कोन दुनियाँदारीक लपौड़ीमे पड़ैत रहब, ने हमरा दोसर पति हएत आ ने अहाँकेँ दोसर पत्नी। तेही बीचमे ने दुनू गोरे लड़ैतो रहब, झगड़ैतो रहब आ संग मिलि धारे-धार चैलतो रहब।"

अनुकूल वातावरण देख रबिनाथ भाय बजला-

"बाधक परतीपर ठाढ़ भऽ बाध हियासैत रही कि एकटा बानरपर नजैर पड़ल। नजैर पड़िते मुड़ी उठा-उठा देखए लगलौं जे एकेटा अछि कि जोड़ो छइ।"

बिच्चेमे सुचिता बजली-

"जोड़ो हेबे करतै। ओहिना नइ ने जखन दिनमे टहटहौआ रौदो

रहैए आ बरखो होइत रहैए, वएह दुनूक बिआहक लग्न छी। ओइ लग्नमे कोनो बानर अछूत रहैए।”

ओना, रबिनाथ भाइक मनमे जगलैन जे एकटा लग्न भेने एकोटा बानर जँ अछूत नइ रहत तखन ते मनुख-ले जे सालो भरि-कोट-कचहरीसँ मन्दिर धरि, रहैए तखन मनुखमे छूत केना रहैए। जाबे छूत नइ रहैए ताबे छुटि केना जाइ जाइए। ओ तँ सहजे बानर छी। कनी कान चुप रहि रबिनाथ भाय बजला-

“बड़ी-काल तक जखन ओकरा दिस तकैत रहलौं, तैबीच ओ बानर गाछी-दिससँ निकैल बाधक आड़िये-धुरे टपैत एकटा खेतक ऊँचका मेड़पर बैस धान खाए लगल, ताबे तक तकैत-देखैत रहलौं। ओ बानर असगरे एकार जकाँ रहइ।”

मुस्की दैत सुचिता बजली-

“अहूँकेँ ते लोक एकरबे बानर कहैए।”

पत्नीक मुहसँ एकार बानर सुनिते रबिनाथ भाइक मन हनुमानजी पर ठेक गेलैन। ओहो तँ एकाग्रे रूप, जिनगी भरि धारण केने रहि गेला। मुदा जहिना सइयो कोस ऊपरक पानिकेँ धरतीपर खसैमे मिनटो नइ लगैए तहिना रबिनाथ भाइक मन अकाससँ धरतीपर उतरलैन। मनसँ बाधक देखल बानर हटि गेलैन। किए तँ ने अखन असगरे बाधमे छैथ जे बानरक उपद्रबक चिन्ता होइतैन आ ने केतौ आनठाम। तइठाम जँ पत्नी बजली जे लोक सभ एकरबा बानर कहैए तँ जरूर किछु बात अछि। ओना, जँ ओ, माने पत्नी बड़ गिरिथानि छेली तँ चुपे रहितैथ, नइ जँ मनुख रहितैथ तँ तखने तेकर जबाव दितैथ, से सभ किछु ने केलैन, आ हमरा सुनसानमे, माने असगरमे सोंखर सुना रहली अछि। मन कनी-मनी तिरिंग-भिरिंग हुअ लगलैन। मुदा लगले मनमे उठलैन जे सभ घरवालीक दाव-चाप सभ घरबला सुनिते छैथ, ऐठाम अपनो किए ने पत्नीक मुँहक

सुनल 'एकरबा बानर' हटा ली। मुदा लगले भेलैन जे जेकरे मुहेँ कोनो बात निकलैए, ओ तँ ओकरे मुँहक ने भेल। भऽ सकैए जे जँ अपने मने बाजल होथि आ हनुमानेजी जकाँ कोनो एहेन रूप देखने होइथ। हनुमानजीक नामकेँ बदैल बानर कहि देने होइथ। किए तँ उदाहरणो तँ ओहने ने देल जाइए, तैठाम बिनु पत्नीक हनुमानजीक उदारहण केना दितैथ तँए हुनके बनरपन रूपकेँ अनुदित करैत बानर बजली अछि। पति-पत्नीक बीचक रस्सा-कस्सीमे अहिना होइ छइ। तइले अनेरे केतेक समुद्र उपछब। मुस्कीमे टुसकी दैत रबिनाथ भाय बजला-

"लोक हमरा एकरबा बानर किए कहत?"

सुचिताकेँ जेना कानक सुनल सइयो आवाज कानमे झनझना लगलैन जइसँ पतिक विचारकेँ रस्तेमे लोकैत बजली-

"घरोक लोक तँ कहिते अछि। पुरन बाबा जखन मरल रहैथ, हुनकर जे क्रिया-कर्म भेलैन से मने हएत किने।"

पुरन बाबाक मृत्युक नाओं सुनिते रबिनाथ भाय बिच्चेमे टपैक उठला-

"श्राद्ध-कर्ममे कियो नइ पुछलैन तेकरा अपने अधला कहाँ बुझलौं, काजक भारो माने जस-अजस तँ नइ ने पड़ल।"

पतिक विचारकेँ खोंटनिया करैत सुचिता बजली-

"अपन दोख अपने मुहेँ के कबूल करैए जे अहाँ करब। मुदा अहीं कहू जे जखन पचास घरक दियादी अछि, जइमे सभ सभ मरन-हरणमे केश कटबै छैथ, अहाँ नइ कटबै छिऐ, जेकर बदला ओहो सभ एकरबा बानर कहि दियादियो छोड़ाइये लेलैन।"

ओना, 'दियादी' सुनि रबिनाथ भाय मुस मने विचारए लगला जे जखन दियादी छोड़ौल जाइए तखन लगौलो तँ जाइये सकैए। तैबीच एतबे ने अछि जे लोक वंशगत मानै छैथ। मुदा मनुखक वंशक तँ सभ

छीहे। ओना, से बात नहि अछि, दियादिक अधिकांश युवक बैस अपन दियादीक नियममे सुधार केलैन जे वृद्धक मृत्यु सोभाविक अछि, जखन कि जवान-जहानक दुखद, तँए सोभाविक मृत्युमे केश कटाएब जरूरी नहि अछि, हमहूँ तँ सएह ने केलौं, तखन जँ ओ सभ माने सभ दियाद, एकरबा बानर कहै छैथ ते अपन मुँह दुइर करै छैथ। कठहस हँसी हँसि रबिनाथ भाय बजला-

"जाए दियौ ओ सभ घरक दियाद-वाद भेला, गाम-समाजक लोक नइ ने कहै छैथ।"

एक तँ ओहुना पति-पत्नीक बीच बजै-भुकैमे कोनो बाधा-रूकाबट नहियेँ अछि, मुदा तैठाम जँ बेदान्ती बातमे पत्नी चढ़न्त होथि तखन जेहेन बोल मुहसँ निकलैए, ओही स्वरमे सुचिता बजली-

"गामे टाक कहै छिऐ, दस गामक लोक कहैए जे सौंसे गाममे सभ अपन-अपन डेढ़ियापर पसीद आ सैनी गाछकेँ संगे रोपलक आ अहाँ की केलिऐ।"

रबिनाथो भायकेँ जेना मुहेँमे बरी पकैत रहैन तहिना चोट्टे पत्नीकेँ कहला-

"अहू दिन कहने रही जे पहिने ई फरिछौट ने हुअए जे पहिनौं एहेन परम्परा छल कि आइये शुरू भेल। जखन से नइ भेल, तखन... ।"

ओना, सुचिता पतिक विचारसँ कने सहमली। मुदा गामक लोकक बोल तेते बेसी कानमे पड़ि गेल छेलैन जे काने झड़झड़ाह भऽ गेल छेलैन। मुदा तैयो होश करैत बजली-

"समाजो तँ समाज छी किने, सभकेँ मिलि कऽ रहब अछि किने?"

जहिना कियो कटेपर सँ काटि बजैए तहिना रबिनाथ भाय बजला-

"ऐमे दू राय कहाँ अछि। मुदा गाम-समाजक सभ एकठाम बैस वा एकविचारक रस्ता बना चलत तखन ने?"

गामक समाजपर नजैर खिरबैत सुचिता बाजल-

“गामक लोककेँ एते छुट्टी छै जे सभ एकठाम बैस विचार करत। कियो आठ बजे तक सुतनिहार अछि तँ कियो तीन बजे भोरेसँ काजमे लगि जाइ छैथ, तखन एकठाम केना भऽ सकैए।”

पत्नीक विचारमे सह दैत सहीट जगहपर ठाढ़ होइत रबिनाथ भाय बजला-

“से तँ हमहूँ देखै छी जे जे बाप (पिता) भरि दिन गाड़ी-सवारीक भीड़मे रोडपर बपहारि जइ बेटाले कटै छैथ ओइ बेटाकेँ ने संग-संग खुआ-पीआ पबै छैथ आ ने दिन-दिनक क्रिया-कलापसँ जुड़ि पबै छैथ।”

रबिनाथ भाइक प्रश्नक उत्तर अपनामे नहि पेब सुचिता धुरखुर बिलाइक नाच जकाँ नचैत बजली-

“अहिना पुरुख सभ गपो आ काजोमे जिद्द रोपि बलउमकी सभ दिनसँ करैत एला हेन आ अखनो करै छैथ।”

हराइत-भोथियाइत पत्नीकेँ देख रबिनाथ भाय बजला-

“पहिने सुनियौ, तखन बुझियौ, पछाइत विचारियौ, तखन जँ जरूरी बुझि पड़ए तँ बजियौ। से नइ करब आ केकरो मुहेँ सुनब जे कौआ कान नेने पड़ाएल जाइए, आ अपन कान नइ देख ओकरा पाछू दौड़ब नीक हएत।”

कोनो समस्याक समाधान जखन ‘हँ’ नइ लग पहुँच जाइ आ सोझमतियाकेँ निर्णय करब असान भऽ जाइए, असानक माने बिनु सोचल-विचारल, तहिना सुचिताकेँ सेहो भेलैन। बजली-

“अच्छा, अहीं कहू जे जखन सौंसे गौंआँ अपन डेढ़ियापर पसीद-सैनी रोपलक आ अहाँ नइ रोपलौं, तखन अहीं कहू जे समाज अहाँकेँ छोड़लक आकि अहीं समाजसँ फुट भेलिऐ।”

ओना, पत्नीक प्रश्नक बेतुकार उत्तर रबिनाथ भाइक मनमे उठलैन, उठलैन ई जे जँ पसीद-सैनी रोपने रोग-वियाधि बेकतीक संग परिवारो आ परिवारक संग समाजोक मेटा देत। तखन किए ने सरकारो डॉक्टर-अस्पतालक खर्च ओही योजनासँ बोने लगा देत। मुदा पत्नीकेँ अपन अधीनस्थ बुझि विचार दैत रबिनाथ बजला-

"जखन आइक युग, माने एकैसमी शताब्दीमे अपना सभ छी, तखन आइक मनुख बनि संसारमे जीबैक अछि, तइमे जँ रानी सरंगाक खिस्सा सुनैमे दिन-राति बीता देब, तखन केना दुनियाँकेँ देख पाएब, जइमे रहैक अछि।"

रबिनाथ भाइक विचार सुनि सुचिता सहमली। जहिना सभ पत्नी पति लग हारला पछातियो जीतले बुझै छैथ तहिना सुचिताकेँ सेहो भेलैन। मुस्की दैत बजली-

"सभ दिनक पुरुख लबर-दौरे रहल अछि।"

ओना, रबिनाथ भाइक मनमे भीम बाबाक विचार जगि गेलैन जे जे इतिहास नइ जानत ओ इतिहास रचत केना। मुदा फेर मन उनैट पत्नीक साहचर्यपर पहुँच गेलैन। साहचर्य पर पहुँचते मन धरतीपर ओंघरा गेलैन। बजला-

"केतबो लबड़दौर पुरुख हएत तैयो पुरुखे रहत किने?"

रबिनाथ भाइक बात सुनि सुचिता गरमेली नहि, मने-मन मुस्की भरि लेलैन।

❑ शब्द संख्या : 2772, तिथि : 09 दिसम्बर 2018



जन्म : 5 जुलाई 1947, बेरमा, जिला- मधुबनी (बिहार)

शिक्षा : एम.ए. द्वय (हिन्दी, राजनीति शास्त्र)

जीविकोपार्जन : कृषि (मुख्यत: तरकारी खेती)

सम्मान/पुरस्कार : 'विदेह सम्मान', 'विदेह भाषा सम्मान', 'टैगोर लिटिरेचर एवार्ड', 'वैदेह सम्मान', 'यात्री सम्मान', 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार' तथा 'कौशिकी साहित्य सम्मान'सँ सम्मानित/पुरस्कृत।

साहित्य लेखन : 2001 ईस्वीक पछाइतसँ...।

**रचना संसार :** 1. गीतांजलि, 2. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता-गीत संग्रह। 5. इन्द्रधनुषी अकास, 6. राति-दिन, 7. सतबेध- कविता संग्रह। 8. पंचवटी- एकांकी संचयन। 9. मिथिलाक बेटी, 10. कम्प्रोमाइज, 11. झमेलिया बिआह, 12. रत्नाकर डकैत, 13. स्वयंवर- नाटक। 14. मौलाइल गाछक फूल, 15. उत्थान-पतन, 16. जिनगीक जीत, 17. जीवन-मरण, 18. जीवन संघर्ष, 19. नै धाड़ैए, 20. बड़की बहिन, 21. भादवक आठ अन्हार, 22. सधबा-विधवा, 23. ठूठ गाछ, 24. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 25. लहसन, 26. पंगु, 27.आमक गाछी- उपन्यास। 28. कल्याणी, 29. सतमाए, 30. समझौता, 31. तामक तमघैल, 32. बीरांगना- एकांकी। 33. तरेगन, 34. बजन्ता-बुझन्ता- बीहैन कथा संग्रह। 35. शंभुदास, 36. रटनी खढ़- दीर्घ कथा संग्रह। 37. गामक जिनगी, 38. अर्द्धांगिनी, 39. सतभैंया पोखैर, 40. गामक शकल-सूरत, 41. अपन मन अपन धन, 42. समरथाइक भूत, 43. अप्पन-बीरान, 44. बाल गोपाल, 45. भकमोड़, 46. उलबा चाउर, 47. पतझाड़, 48. लजबिजी, 49. उकड़ू समय, 50. मधुमाछी, 51. पसेनाक धरम, 52. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 53. फलहार, 54. खसैत गाछ, 55. एगच्छा आमक गाछ, 56. शुभचिन्तक, 57. गाछपर सँ खसला, 58. डभियाएल गाम, 59. गुलेती दास, 60. मुड़ियाएल घर, 61. बीरांगना, 62. स्मृति शेष, 63. बेटीक पैरुख, 64. क्रान्तियोग, 65. त्रिकालदर्शी, 66. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 67. दोहरी हाक, 68. सुभिमानी जिनगी, 69. देखल दिन, 70. गपक पियाहुल लोक- लघु कथा संग्रह।

***उपरोक्त पोथीसभक e-version videha.co.in आ pothi.com परसँ download कएल जा सकैत अछि।***


₹ 251



**पल्लवी प्रकाशन**
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452


9789388421874

[1] सासुक
[2] जन्मभूमि
[3] मल्लाह, केबट
[4] अन्न फल इत्यादि
[5] रखबार
[6] गरदा माटि
[7] घर-अँगना
[8] खैहन अन्न भेल जे मुख्य भोजन छी, जेना चाउर, गहुम, मकइ, जनेर इत्यादि
[9] मिलन दिन भेल अन्न-पानिक दान-जोग।
[10] जिनकासँ हरिदास कण्ठी नेने छला।
[11] मानसून
[12] तमाकुल खाइक
[13] आजुक समाज
[14] ओ आदमी
[15] चुनौल तमाकुल